# ग्रामीण शिशुओं और बच्चों के लिए प्रेरणा सामग्री की तैयारी के लिए पुस्तिका

डॉ. अमर ज्योति पर्शा
मार्ता डेविड

**राष्ट्रीय मानसिक विकलांग संस्थान**
*(सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार)*
मनोविकास नगर, सिकंदराबाद - 500 009. आँध्र प्रदेश, भारत
तार : मनोविकास, फोन: 040-27751741, फैक्स : 27750198
ई-मेइल: dirnimh@hd2.vsnl.net.in वेबसाईट: www.nimhindia.org

# ग्रामीण शिशुओं और बच्चों के लिए प्रेरणा सामग्री की तैयारी के लिए पुस्तिका


डॉ. अमर ज्योति पर्शा

प्रधान अनुसंधाता

मार्ता डेविड

अनुसंधान अधिकारी



**राष्ट्रीय मानसिक विकलांग संस्थान**

*(सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार)*

मनोविकास नगर, सिकंदराबाद - 500 009. आँध्र प्रदेश, भारत

तार : मनोविकास, फोन: 040-27751741, फैक्स : 27750198

ई-मेइल: dirnimh@hd2.vsnl.net.in वेबसाईट: www.nimhindia.org


Hindi

# ग्रामीण शिशुओं एवं बच्चों के लिए प्रेरणा सामग्री की तैयारी के लिए पुस्तिका

लेखकगण : डा. अमर ज्योति पर्शा, मार्ता डेविड

कापी राइट © 2003
राष्ट्रीय मानसिक विकलांग संस्थान, सिकन्दराबाद - 500 009

सर्वाधिकार सुरक्षित

ISBN 81-86594-26-4

अभिकल्पना : रमणा चेपूरी, रमेश चेपूरी, सिकंदराबाद - 3. दूरभाष : 040-27539227
मुद्रक : श्री रमणा प्रॉसेस प्राईवेट लिमिटेड.,सिकन्दराबाद - 3. दूरभाष : 040- 27811750

# विषय सूचिका


प्राक्कथन

प्रस्तावना

आभार प्रदर्शन

परिचय

- दृष्टि
- वाणी एवं भाषा
- स्पृश्य
- संतुलनीय
- प्रेरक
- संज्ञानात्मक
- भावात्मक
- सामाजिक

| | मद | पृ.सं. |
|---|---|---|
| दृष्टि | | |
| 1 | बहुरंगी छड़ी | 1 |
| 2 | नारियल गुड़िया | 3 |
| 3 | झूलती गुड़िया | 5 |
| 4 | चमकती गेंद | 7 |
| 5 | कफ | 9 |
| 6 | श्याम-श्वेत चरख | 11 |
| 7 | ऊन का पंखा | 13 |
| 8 | देशज पंखा | 15 |
| 9 | नाँदनुमा खिलौना | 17 |
| 10 | गत्ते की गुड़िया | 19 |
| 11. | कागज की पवन चक्की | 21 |
| 12 | श्वेत-श्याम वृत्ताकार डार्ट बोर्ड | 23 |
| 13 | गत्ते के भित्ति चित्र | 25 |
| वाणी एवं भाषा | | |
| 14 | कागज की प्लेट का मुखौटा | 27 |
| 15 | आईने का फ्रेम | 29 |
| 16 | पावडर के डिब्बे का खड़खड़ा | 31 |
| 17 | कपड़े का खिलौना | 33 |
| 18 | अंगुल खिलौना | 35 |
| 19 | गत्ते का खड़खड़ा | 37 |
| 20 | नारियल खोल का खड़खड़ा | 39 |
| 21 | इकतारा | 41 |
| 22 | मुखर पेटी | 43 |
| 23 | लकड़ी का खड़खड़ा | 45 |
| 24 | दस्ताना खिलौना | 47 |

# विषय सूचिका


| | | | |
|---|---|---|---|
| स्पृश्य | 25 | स्पंज का खिलौना | 49 |
| | 26 | खरगोश | 51 |
| | 27 | पक्षी | 53 |
| | 28 | पंख गुच्छ | 55 |
| | 29 | पोन-पोन | 57 |
| | 30 | ऊन की लटकन | 59 |
| | 31 | स्पृश्य घन | 61 |
| | 32 | स्पृश्य बोर्ड | 63 |
| | 33 | बालों की चोटी की घंटियाँ | 65 |
| संतुलनीय | 34 | संतुलन बोर्ड | 67 |
| | 35 | डोलती नाँद | 69 |
| | 36 | टायर का झूला | 71 |
| | 37 | दलारा झूला | 73 |
| प्रेरक (चालक) | 38 | तोता खिलौना | 75 |
| | 39 | बच्चा गाड़ी | 77 |
| | 40 | अंगुल सीढ़ी | 79 |
| | 41 | पहिया और छड़ी | 81 |
| | 42 | फिंगर बोर्ड | 83 |
| | 43 | फिरकी लट्टू | 85 |
| | 44 | बहुरंगी वलय खिलौना | 87 |
| | 45 | खूँटी बोर्ड | 89 |
| | 46 | मिट्टी के चूल्हे की शकल की कुर्सी | 91 |
| | 47 | लकड़ी की कार | 93 |
| | 48 | गुलेल | 95 |
| | 49 | बैल गाड़ी | 97 |
| | 50 | संगीतमय बेलन | 99 |
| | 51 | संगीतमय बिलेरा | 101 |
| संज्ञानात्मक | 52 | चित्र कार्ड | 103 |
| | 53 | कागज की लुगदी का कटोरा | 105 |
| | 54 | सेब के आकार का लकड़ी का बर्तन | 107 |
| | 55 | संतुलन गुब्बारा | 109 |
| | 56 | संतुलन दंड | 111 |
| | 57 | कागज की लुगदी का मुखौटा | 113 |
| सामाजिक | 58 | मुकुट | 115 |
| | 59 | कागज की हैट | 117 |
| | 60 | कोंडापल्ली गुड़िया | 119 |

# प्रस्तावना

जोखिम भरे बच्चों तथा विकासीय विलंबों से ग्रस्त बच्चों के लिए प्रेरणा बहुत ही महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह उन्हें अपने विकास की सीमा तक पहुँचने में सहायता प्रदान करेगी। बच्चों को उनके जीवन की आरंभिक अवधि के दौरान प्रदान की गयी प्रेरणा की मात्रा उनके व्यक्तित्व तथा प्रतिभा को गहराई से प्रभावित करती है।

माता-पिता ही बच्चे के पहले शिक्षक होने के कारण आवश्यक प्रेरणा प्रदान करने का दायित्व उन्हीं पर होता है। बच्चे के शारीरिक तथा मानसिक दोनों ही प्रकार के वर्धन को प्रोन्नत करने के लिए आवश्यक अनुभवों को प्रदान करने के लिए वे ही उत्तरदायी होते हैं। इन बहुत से अनुभवों में प्राकृतिक तौर से ही बच्चे की आवश्यकता पूरी करने में खिलौने शामिल होते हैं तथा बच्चे की आवश्यकता पूरी करने के लिए सावधानी से तैयार किये गये खिलौने ही बच्चे को प्रेरणा देने में सहायक होते है।

खेल के माध्यम द्वारा बच्चों को प्रेरणा दी जा सकती है। बच्चों के समग्र विकास के लिए खेल महत्वपूर्ण है। यह बच्चों को नये कौशलों को सीखने तथा उनमें प्रवीणता हासिल करने की योग्यता पैदा करता है। खेल बच्चों को विकास के प्रत्येक क्षत्र में उन्नति करने के लिए आवश्यक प्रेरणा प्रदान करते हैं। खेल सामग्रियाँ प्रेरणा सामग्रियों की तरह काम करती हैं जो बच्चे के विकास की आवश्यकताओ की पूर्ति करती हैं।

## नियम-पुस्तिका के बारे में :

यह नियम- पुस्तिका यह प्रदर्शित करती है कि बच्चों के लिए दिलचस्प प्रेरणा सामग्रियाँ किस प्रकार बनायी जाएँ ताकि उनसे अत्यधिक लाभ हासिल किया जा सके। यह मैन्युअल विशेषरूप से ग्रामीण अभिभावकों के लिए तैयार किया गया है। इसे सरल भाषा में लिखा गया है, जिससे कि अभिभावकगण एवं सामुदायिक स्तर के कार्यकर्तागण दोनों ही लाभ उठा सकें। हर स्थान पर चित्र दिये गये हैं ताकि मैन्युअल अनपढ़ अभिभावकों द्वारा आसानी से समझा जा सके। मैन्युअल का स्वरूप -अपने आप करके देखें - ढंग से बनाया गया है, जिसमें प्रत्येक मद इस प्रकार दिखायी गयी है कि अनुदेशों तथा उनकी तैयारी में निहित आरेखी चित्रण का पालन कर उन्हें तैयार किया जा सके। अत: इस सामग्री को तैयार करने में तकनीकी विशेषज्ञता की आवश्यकता ही नहीं पड़ती है।

पुस्तक की रचना दो बातों पर आगे बढ़ती है- एक है विकास के विभिन्न क्षेत्रों का परिचय जिन्हें प्रेरणा की आवश्यकता है तथा दूसरा है सामग्रियों की तैयारी। परिचय भाग में महत्वपूर्ण प्रेरणा पर जोर देते हुए प्रेरणा के विभिन्न क्षेत्रो का वर्णन किया गया है। सामग्रियों की तैयारी करने के लिए प्रत्येक खंड मे विकास के एक-एक क्षेत्र व पहलू को उजागर किया गया है। प्रत्येक मद के बारे में क्रियाविधि का संक्षिप्त स्पष्टीकरण देते हुए संबंधित चित्रों के प्रदर्शन द्वारा उनके उपयोगों सहित उनकी भिन्नताओं का भी वर्णन किया गया है।

## प्रेरणा सामग्री के बारे में :

प्रेरणा सामग्रियों को उपलब्ध देशज सामग्रियों से तैयार किया गया है, तथा ये सामान्य और जोखिम या विलंबित विकास से ग्रस्त दोनों ही प्रकार के बच्चों के प्रयोजन के लिए हैं।

ये सामग्रियाँ आकर्षक, शैक्षिक, मितव्ययी तथा आसानी से प्रतिकृत योग्य हैं। वे 0-3 वर्षों के बच्चों को दृश्य, श्रव्य, स्पृश्य, प्रेरक तथा सन्तुलनीया प्रेरणा प्रदान करने के लिए उपयोगी हैं। इस मैन्युअल में विकास के तमाम क्षेत्रों से संबंधित सामग्रियाँ शामिल की गयी हैं तथा उनके द्वारा प्रदान की जानेवाली प्रेरणा के अनुसार वर्गीकृत की गयी हैं। यद्यपि प्रत्येक, प्रेरणा सामग्री तत्संबंधी विकास क्षेत्र के अनुसार वर्गीकृत की गयी है, इन सामग्रियों मे प्रत्येक 2 से 3 से भी अधिक क्षेत्रों में प्रेरणा प्रदान करने के लिए उपयोगी हो सकते हैं। अत: यह कहने में अतिशयोक्ति नहीं होगी कि प्रत्येक सामग्री का प्रयोग प्रेरणा के बहु-आयामों के लिए किया जा सकता है।

तैयार की गयी सामग्रियों की अभिकल्पना बाजार में वाणिज्यिक रूप से उपलब्ध सामग्रियों को ध्यान में रखकर इस प्रकार की गयी है कि ऐसे अभिभावक जो उन्हें बाजार में खरीदने के लिए पैसे खर्च नहीं कर सकते वे इन सामग्रियों को स्वयं ही बना सकते हैं ताकि बच्चों को बाजार में उपलब्ध सामग्रियों से प्राप्त होनेवाले के बराबर का लाभ इनसे भी प्राप्त हो सकें ये सामग्रियों कम लागत या बिना लागत लगाये ही बनायी जा सकती हैं, अर्थात वे बहुत ही कम खर्चीले हैं।

इन सामग्रियों के मितव्ययी होने के अलावा घर पर खिलौनों को बनाना न केवल पैसा बचाता है बल्कि अभिभावकों द्वारा उनके अपने हाथों से बनायी गयी वस्तुओं के प्रति अपने बच्चों की प्रतिक्रिया देखने का विशेष आकर्षण अतुलनीय है। इन सामग्रियों को बनाने की प्रेरणा के आगे अभिभावकों द्वारा अपने बच्चों का विकास की अवस्थाओं से गुजरता देखना व उनका प्रबोधन करना उनके अपने लिए भी प्रेरणादायक होता है।

**मैन्युअल (नियम - पुस्तिका) की उपयोगिता:**

इस मैन्युअल को प्राथमिक रूप से अभिभावकों के लिए ही लिखा गया है, क्योंकि वे ही बच्चों के खेल को प्रोत्साहित करने की आदर्श स्थिति में होते हैं और फिर भी वे ही इसे उत्तम ढंग से निपटाने के प्रति अविश्वस्त होते हैं। हमारा लक्ष्य अभिभावकों को अपने क्रियाकलापों को समुचित बनाने का मार्गदर्शन देना है, जिन्हें वे अपने बच्चे के साथ उपयोग कर सकते हैं। प्रेरणा की इन सामग्रियों को आसानी से बनाया जा सकता है तथा उनके संयोजन में भी कम समय लगता है। उन्हें विभिन्न संवेदी और प्रेरक दृष्टिकोणों के अनुसार श्रेणीबद्ध किया गया है, जैसे : दृश्य, श्रव्य, वाणी और भाषा, सामाजिक, भावात्मक, स्पृश्य, संतुलनीय प्रेरणा की सामग्रियाँ। चित्र सामग्रियों के निर्माण के चरणों और उत्पाद के अंतिम दिखाई देनेवाले स्वरूप की दर्शाते हैं। प्रत्येक मद को तैयार करने के लिए आवश्यक सामग्रियाँ या तो घरेलू मद हैं या फिर उनके आस-पास आसानी से बिना खर्च के उपलब्ध होनेवाले मद हैं। इन सामग्रियों को तैयार करने के लिए चरण-दर-चरण अनुदेश आसानी से समझ में आनेवाले हैं। इन मदों में से प्रत्येक मद के उपयोग और खिलौनों को किस तरह रूपांतरित किया जाए, उससे संबंधित सुझाव भी दिये गये हैं।

मैन्युअल में दी गयी तमाम सामग्रियों को- ग्रामीण शिशुओं और बच्चों के लिए प्रेरणा सामग्रियों की तैयारी- के शीर्ष नामक परियोजना के संदर्भ में विकसित किया गया है। इस परियोजना के लिए तैयार की गयी सामग्रियों का राष्ट्रीय मानसिक विकलाँग संस्थान में प्रारंभिक मध्यस्थता सेवाओं में उपस्थित होनेवाले ग्रामीण बच्चों पर कार्यक्षेत्र परीक्षण किया गया है। अधिकांश अभिभावकों ने इन सामग्रियों को प्रतिकृत करके उन्हें अपने बच्चों पर प्रयोग किया है।

ग्रामीण बच्चों तक पहुँचने का हमारा यह साधारण- सा प्रयास है। कई और भी सामग्रियाँ हैं, जिन्हें नवीन उपायों द्वारा बनाया जा सकता है। ऐसी समान बातों में दिलचस्पी रखनेवाले लोगों के सहयोगी प्रयासों से विभिन्न और नवीन प्रकार की अधिकाधिक प्रेरणा सामग्रियों के साथ राष्ट्रीय मानसिक विकलाँग संस्थान आगे भी बच्चों के पास पहुँच सकता है। इस संबंध में आप लोगों के सुझावों तथा योगदानों का सदैव सहर्ष स्वागत है।

*डॉ. अमर ज्योति पर्शा*

डॉ. एल. गोविन्द राव
निदेशक
Dr. L. GOVINDA RAO
Director

राष्ट्रीय मानसिक विकलांग संस्थान
(सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार)
NATIONAL INSTITUTE FOR THE MENTALLY HANDICAPPED
(Ministry of Social Justice and Empowerment, Government of India)

# प्राक्कथन

नवजात शिशु आत्मार्थक आचरणों जैसे: अभिमुखी होने, चूसने तथा चौंका देनेवाले अनुभवों के साथ ही संसार में प्रवेश करते हैं। परंतु जिस संसार का वे सामना करनेवाले होते हैं उसके बारे में उन्हें कोई जानकारी नहीं होती। वे अधिकतर अपने चारों ओर के लोगों द्वारा या वस्तुओं के साथ किये गये व्यवहारों से प्रेरणा पाकर अपने पर्यावरण के भौतिक तथा सामाजिक पक्षों के बारे में जानकारी हासिल करते हैं। ये आनंदित करनेवाले अनुभव/ प्रेरणाएँ सामान्य तथा विकासात्मक विलंब ग्रस्त दोनों ही प्रकार के बच्चों को अत्यधिक क्षमता हासिल करने में सहायता देंगे।

अति सावधानी पूर्वक अभिकल्पित तथा बनायी गयी खेल सामग्रियों के रूप में बच्चों को प्रदान किये गये प्रेरणा अनुभव उनकी विकासात्मक आवश्यकताओं को पूरा करते हैं। ग्रामीण अभिभावकों तथा सामुदायिक स्तर के कार्यकर्ताओं को विशेष रुप से दृष्टि में रखकर उन्हें विस्तृत रूप मे प्ररणा सामग्रियाँ प्रदान करने के उद्देश्य से यह नियम- पुस्तिका तैयार की गयी है जो बच्चों के समग्र विकास में सहायक होगी।

इस पुस्तिका के प्रातिपदिक का आधार इस विश्वास पर है कि शहरी बच्चों को बड़ी संख्या में प्रेरक सामग्रियाँ आसानी से प्राप्त तथा कम खर्च में प्रदान होती हैं। परंतु, सामाजिक - आर्थिक प्रतिबंधों के कारण, ग्रामीण बच्चों को ऐसी सामग्रियाँ दुर्लभ होती हैं। यद्यपि ग्रामीण क्षेत्रों में पर्यावरणीयता से युक्त स्थितियाँ घटती हैं, तो भी इन बच्चों के माता-पिताओं में उनके लिए प्रेरक अनुभवों को सृजित तथा प्रदान करने की जानकारी तथा मार्गदर्शन की कमी होती है।

अत: इस पुस्तिका के प्रादुर्भाव का कारण है - उन ग्रामीण बच्चों को जो विभिन्न खिलौनों/प्रेरक सामग्रियों को प्राप्त करने से वंचित रह जाते हैं, उन्हें भी शहरी बच्चों की तरह समान मात्रा में प्रेरणा प्राप्त हो। परियोजना का लक्ष्य ही यह है कि ग्रामीण शिशुओं और बच्चों को लिए प्रेरणा सामग्रियों का विकास किया जाए।

यह पुस्तिका अभिभावकों, शिक्षकों सामुदायिक स्तर के कार्यकर्ताओं तथा अन्य व्यावसायिकों के लिए बहुत ही उपयोगी सिद्ध होगी, जिनकी दिलचस्पी बच्चों द्वारा अपनी क्षमताओं को अधिकतम ऊँचाई तक विकास करने में सहायता प्रदान करने के कारक होना है।

(डा. एल. गोविंद राव)

मनोविकास नगर, सिकंदराबाद - 500 009 तार : मनोविकास दूरभाष : (का) 27759267 (नि) 27757715 फेक्स : 0091 (40) 27758817
Manovikasnagar, Secunderabad - 500 009. Grams : MANOVIKAS Phones : (O) 27759267 (R) 27757715 Fax : 0091 (40) 27758817
E-mail : dirnimh@hd2.vsnl.net.in lan_gra@rediffmail.com Website : nimhindia.org

# आभार प्रदर्शन

हम उन सभी लोगों के ऋणी हैं, जिनकी सहायता के बिना इस पुस्तक का सृजन असंभव था।

डा. एल. गोविन्द राव, निदेशक, राष्ट्रीय मानसिक विकलाँग संस्थान को हम हृदय से आभार और धन्यवाद समर्पित करते हैं, जिन्होंने इस परियोजना को चलाने तथा इस पुस्तिका के सृजन में निरंतर अपना समर्थन प्रदान किया है।

जो बच्चे हमारा केंद्र बिंदु रहे हैं उन्हें हमारा विशेष धन्यवाद समर्पित है। ये ही वह प्रेरक शक्ति हैं जिन्होंने हमारे प्रयासों को पुस्तकाकार प्रदान किया है।

अभिभावकों को हमारा हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं, जिनके सक्रिय साझदारी के बिना इस पुस्तक का लिखना असंभव था।

हम अपने सहयोगियों तथा विद्यार्थियों को उनके द्वारा दिये गये बहुमूल्य सुझावों और नवीन उपायों के लिए हार्दिक धन्यवाद समर्पित करते हैं।

राष्ट्रीय मानसिक विकलाँग संस्थान के प्रशासन विभाग द्वारा दिये गये सभी समर्थन के लिए उनको हमारा धन्यवाद।

इस पुस्तक की अभिकल्पना करने के लिए चित्रकारो, चेपूरी ब्रदर्स तथा इसे मुद्रित करने के लिए श्री रमणा प्रासेस को भी हम धन्यवाद समर्पित करते हैं।

**डॉ. अमर ज्योति पर्शा**
**श्रीमती मार्ता डेविड**

# परिचय

बच्चे के जन्म से लेकर 3 वर्षों तक वर्धन और विकास चित्ताकार्षक कहानी है । यह मानव के निर्माण की कहानी है। अपने अवयवों पर नियंत्रण न रखनेवाले, निस्सहाय छोटी पोटली स्वरूप शरीर से एक वर्ष के भीतर वह अपने शारीरिक चेष्टाओं पर नियंत्रण कर अपनी आवश्यकताओं को पूरा करवाना, अपने पर्यावरण को समझना, उसे चलाना, औजारों का उपयोग करना तथा और भी अनेक बातें सीख जाता है । बच्चा, सीखने और समझने के लिए जननिक अंत: शक्ति के साथ ही पैदा होता है । परंतु, अंत: शक्ति का, पर्यावरण द्वारा ललकारे जाने के बिना, पता चल ही नहीं सकता । ये चुनौतियाँ ही बच्चे को विकसित होने और सीखने के लिए प्रेरणा प्रदान करती हैं ।

**प्रेरणा क्या है ?**

बच्चे के विकास को क्रियाशील बनाने के प्रयासों को आवृत्त करती है, प्रेरणा । अपने जीवन के आरंभिक काल में बच्चे द्वारा प्राप्त पोषण अनुभव उसके भावी ज्ञान के लिए नींव की तरह काम करता है । बच्चे को बढ़ने और विकसित होने में सहायता देने, वर्धन अवधि की हर स्थिति में हमें समुचित प्रेरणा प्रदान करनी चाहिए। वास्तव में बच्चा अपने जीवन के प्रथम वर्ष में, भावी जीवन की अपेक्षा अधिक सीखता है। यदि बच्चे को अपने आरंभिक वर्षों में समुचित प्रेरणा प्राप्त नहीं करता हो या कम प्रेरणा प्राप्त करता हो तो उसके विकास और बुद्धि पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा ।

**प्रेरणा का महत्व**

प्रत्येक प्रकार के विकास जैसे : शारीरिक, चालक, संवेदिक, संज्ञानात्मक, भावात्मक तथा सामाजिक प्रेरणा के लिए भिन्न-भिन्न संकेतक हैं । इनमें से प्रत्येक क्षेत्र में विकास एक साथ ही होता है। ये तमाम क्षेत्र एक दूसरे से संबंधित हैं। हरेक क्षेत्र दूसरे को प्रभावित करता है और बदले में दूसरों से प्रभावित होता है। किसी एक क्षेत्र में पीछे रह जाना या कमजोरी का होना दूसरे को प्रभावित करेगा। बच्चे में सामान्य रूप से विकसित होने की अंत: शक्ति होने के बावजूद भी यदि उसे अनुकूल और प्रेरणादायक वातावरण प्रदान नहीं किया जाता हो तो बच्चे पर विलंबित विकास का जोखिम मंडराता रहता है।

प्रेरणा की कमी से ग्रस्त बच्चे के विकास में देरी हो सकती है। असमर्थता से ग्रस्त बच्चा पर्यावरण को प्रभावित नहीं कर पाने के कारण विकसित नहीं हो पाता । अत : पास-पड़ोस या पर्यावरण को प्रेरणादायक और चुनौती भरा होना चाहिए, जिससे कि वह प्रभावित करे और सीखे । बच्चे के वर्धन और विकास के लिए उसके आरंभिक वर्ष बहुत ही आघातवर्ध्य, प्रभावशाली और रचनात्मक होते हैं । अत: जीवन के आरंभिक काल के अभाव विकास को विलंबित कर सकते हैं ।

**खेल के द्वारा प्रेरणा :**

खेल प्रेरणा का महत्वपूर्ण पक्ष है। बच्चे के शारीरिक और मनोवैज्ञानिक विकास के लिए खेल अति प्रकृतिक और स्वाभाविक है। खेल के द्वारा बच्चा अन्य बच्चों के साथ जुड़ना , भाषा और सामाजिक कौशलों को विकसित करना सीखता और संकल्मनाओं की अवधारणा करता है। खेल, बच्चे को आत्माभिव्यक्ति, सृजनात्मकता और आनंद उपयोग की विधि के अवसर प्रदान करता है। बच्चे को आवश्यक प्रेरणा प्रदान करने का उत्तरदायित्व माता-पिता पर होता है। आनंद भोगने की 3 सबसे अधिक चीज खेल ही है और यह प्रेरणा द्वारा ही मिल सकती है। खेल, बच्चों के वर्धन और जीवन के साथ समझौता करने तथा अपने आपको तथा अपने आस-पास के वातावरण को पहचानने या खोजना सीखने का सर्वोत्तम माध्यम है। बच्चे खेल से ही गहरा संतोष और अति प्रसन्नता प्राप्त करते हैं। खेल को अपने आप में पर्याप्त औचित्य पूर्ण होना चाहिए।

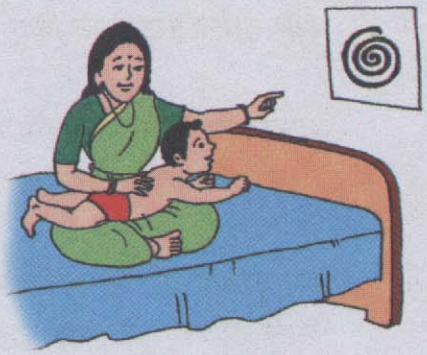

**खेल की उपयोगिता।**

- खेल उपयोगी है और अपने आप सार्थक है।
- खेल बच्चे को अपने रहने के संसार के बारे में जानकारी देता है और मानसिक रूप में उसके वर्धन में सहायता प्रदान करता है ।
- खेल कल्पना शक्ति को प्रेरित करता है।
- खेल उसे अन्यों के साथ मिलने-जुलने या रहने तथा सामाजिक होने में मदद करता है ।
- खेल बच्चे को भावात्मक विकास में सहायता करता है, ताकि वह एक अच्छे समझदार व्यक्ति के रूप में बढ़े।
- खेल भाषा विकास में सहायता प्रदान करता है।

**प्रेरणा के लिए आवश्यक सामग्रियाँ :**

माता-पिता, सामान्यत:, अपने शिशु के जन्म के बाद कुछ दी दिनों में कूजकर, गाकर, चुटकी बजाकर और जबानी कुछ बोलते हुए बच्चे के साथ खेलना शुरु कर देते हैं। खड़खड़े, चल वस्तएँ, गेदें, गुडियाँ और ऐसी ही चीजें बच्चे के सहज-ज्ञान से उसका ध्यान आकर्षित करती हैं। वस्तुओं या क्रियाकलापों को देखना, चूसना, चबाना, चीजों को धकेलना या हाथों में लेना बच्चों के प्रिय खेल हैं।

ये क्रियाकलाप ध्यानाकर्षण में वृदधि करते हैं। बच्चों का ध्यान आकर्षित करने के लिए उपयोग की जानेवाली वस्तुएँ महँगी होना जरूरी नहीं है, परंतु यह महत्वपूर्ण है कि हम ऐसी सामग्री चुनें जो शिक्षाप्रद,बिना मूल्य वाली हों जैसे कि घर में बनी चल वस्तुएँ या खड़खड़े। सामग्रिया व्यवहारिक कौशल युक्त होनी चाहिए, जिसमें फिटिंग, असेंबलिंग, अलग-अलग करने, धकेलने या खींचने जैसे क्रियाकलाप शामिल हों । मिट्टी, पानी, रेत, पत्ते, बीज, पत्थर जैसी प्राकृतिक वस्तुओं से खेल बच्चो के संकल्पना विकास में सहायता करते हैं।

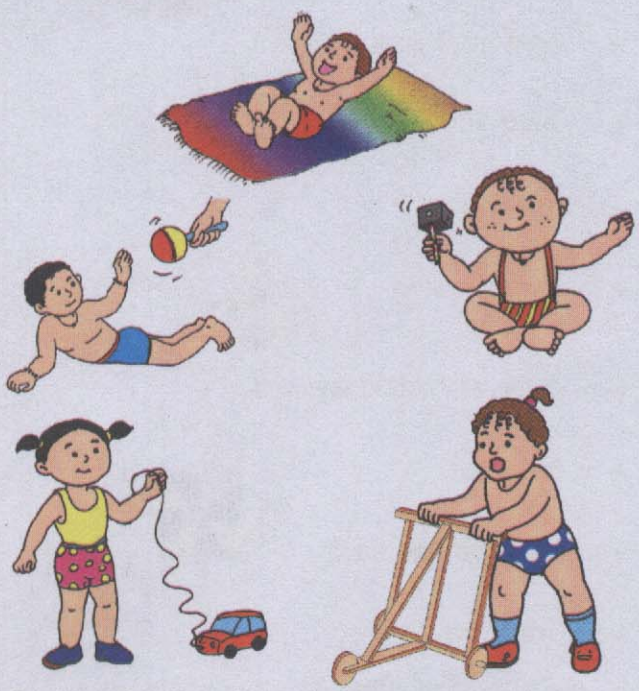

**उपयोग में लायी जानेवाली सामग्री निम्न प्रकार की हो :**

- बच्चे की आयु के समुचित।
- जैसे-जैसे बच्चा बड़ा होता है उसकी आवश्यकला बदलेगी, अत: उसकी आवश्यकताओं के अनुरूप सामग्री में तरमीम करें या नयी सामग्री प्रदान करें।
- प्रत्येक सामग्री कई उद्देश्यों के काम आये (एक ही खिलौना कई क्षेत्रों और प्रेरणा के कई चरणों के लिए)।
- ऐसी सामग्री से बनाई गयी हो जो आसानी से उपलब्ध हो ।
- सामान्य एवं सरल विधियों से बनायी गयी हो।

**बच्चों के लिए प्रेरणा सामग्री का चयन करते समय विचार किये जानेवाले महत्वपूर्ण पहलू :-**

- खेल की सामग्री खर्चीली न हो और आसानी से बदली जा सके।
- सामग्री बच्चे के लिए घातक नहीं होनी चाहिए ।
- सामग्री गैर-विषैली चीजों से बनायी जानी चाहिए।
- खिलौना आकर्षक होना चाहिए और उसके किनारे गोल किये हुए हों ।
- भिन्न-भिन्न प्रकार की सामग्रियाँ होनी चाहिए ।
- सामग्री बहुत अधिक वजनी नहीं होनी चाहिए अन्यथा उसके गिरने पर बच्चे को हानि हो सकती है।
- खिलौने और वस्तुएँ इतनी छोटी न हों कि बच्चा उन्हें निगल सके।

**मैन्युअल के बारे में :**

यह मैन्युअल इस दृढ़ विश्वास के साथ लिखा गया है कि ग्रामीण शिशुओं एवं बच्चों के लिए प्रेरणा हेतु प्रदान की जानेवाली प्रेरणा सामग्री सरलता से दी जा सकने योग्य हो और देशज ढंग से तैयार की गयी हो। प्रेरणा सामग्री की अभिकल्पना उन क्रियाकलापों से संबंधित हो जिनके बारे में अभिभावकों को पहले से ही जानकारी हो। इस ढंग से इन क्रियाकलापों को चलाने का तात्पर्य है, अभिभावकों को इन बातों की पहले से ही जानकारी है और उन्हें अधिक सुनियोजित और कुशलतापूर्वक करने हैं । यह मैन्युअल 7 खंडों में बाँटा गया है । प्रत्येक खंड एक क्षेत्र के विकास को आवरित करता है।

**खंडों का क्रम निम्नानुसार है :-**

- दृष्टि
- श्रव्य
- स्पृश्य
- संतुलनीय
- प्रेरक
- संज्ञानात्मक
- सामाजिक और भावात्मक

इस खंड में सर्वप्रथम मौलिक सैद्धांतिक धारणाओं को और बाद में प्रेरणा सामग्री, उनकी तैयारी, उपयोग और तरमीम सहित उपयोग में रूपांतर की रूपरेखा दी गयी है। मैन्युअल उन ऐसे बच्चों के लिए विशेष प्रावधान प्रदान करता है जो विलंबित विकास ग्रस्त हैं। सामान्य बच्चों को दृष्टि में रखकर बनायी गयी सामग्री में सुधार करके विलंबित विकास के बच्चों की आवश्यकतों की पूर्ति के लिए बनाया गया है। किये गये सुधारों को प्रत्येक मद में दिये गये शीर्ष के रूपांतर में शामिल किया गया है।

यद्यपि बच्चे के विकास के लिए भावात्मक प्रेरणा महत्वपूर्ण है, इस भावना को विशिष्टतया आगे बढ़ाने के लिए किसी भी प्रकार की प्रेरणा सामग्रियाँ बनायी नहीं गयी हैं, इसका कारण है, प्रेरणा का प्रत्येक क्रियाकलाप बच्चों में भावात्मक प्रतिक्रिया उत्पन्न करता है।

# दृष्टि

शिशुओं में दृष्टि प्रकाश में दिलचस्पी के कारण शुरु होती है। पहले लोग शिशु का ध्यान आकर्षित करते हैं। बाद में काले और सफेद पैटर्न, चटकीले रंग, गहरे मिलेजुले रंग आकर्षक हो जाते हैं। आरंभ में बच्चे स्थिर लक्ष्यों पर दृष्टि टिकाते हैं और तब संचलन और संचलित वस्तुओं को देखते हैं। उनमें जागरूकता बड़ी, साधारण और नजदीक रखी चीजों में रुचि लेने से शुरु होती है और तब कहीं जाकर वे उन वस्तुओं के अधिक ब्यौरों और जटिलताओं की खोज करते हैं और यह परीक्षण करते हैं कि उनकी तुरंत पहुँच से आगे क्या है। आरंभ में वे जाने-पहचाने चेहरों और वस्तुओं के प्रति अभिरुचि बताते हैं और बाद में जो नया और भिन्न है उसके प्रति रुचि विकसित करते हैं।

**दृष्टि विकास के चरण :**

बच्चा अपने 1-3 महीनों की आयु के दौरान दृष्टि प्रेरणा तक पहुँचना आरभ करता है या दृष्टि से हाथों के संचलन को देखता है। 3-6 महीने की आयु तक पहुँचते-पहुँचते ध्यानपूर्वक दृष्टि, खोजी तथा अन्तर जानने के गुण बढ़ जाते हैं। लगभग 6-12 महीनों की आयु में बच्चा वस्तुओं का दृष्टि से निरीक्षण करता, उन्हें लंबी अवधि तक पकड़ रखता है। इस तरह दृष्टि-बोध में वृद्धि होती जाती है।

**दृष्टि विकास को उन्नत करने के सिद्धांत:**

- दृष्टि प्रेरणा प्रदान करने का उत्तम समय दिन के दौरान किये जानेवाले सामान्य क्रियाकलाप जैसे: नहाने, खाने, कपड़े पहनने, सोने, खेलने और घूमने का है।
- बच्चे को दृष्टि का उपयोग करने में सहायता करना तभी बेहतर है, जब प्राकृतिक रूप से जरूरत पड़ती है, ताकि वह लाभदायक, प्रेरणादायक और सुदृढ़ हो।
- यह दृष्टि को शिशु के रोजमर्रा के कार्यों के साथ जोड़ने में मदद करता है।
- बच्चे को देखने में निश्चित रूप से सहायता करें तथा दिन भर में किये जाने वाले क्रियाकालापों में दृष्टि सूचना का उपयोग करें।
- उचित मनोभावों और अनुबोधनों द्वारा सिखाने में माता-पिता को हमेशा अनुकूल होना चाहिए।
- माता-पिता को हमेशा सकारात्मक होना चाहिए और दृष्टि के उपयोग को प्रोत्साहित करने के नियमित अवसर प्रदान करने चाहिए।
- दृष्टि-क्षति से ग्रस्त बच्चों के लिए स्पृश्य प्रोत्साहन और मौखिक प्रोत्साहन का उपयोग करें। यहाँ तक कि विभेदीकरण और पहचान करने में शारीरिक प्रोत्साहन एवं मार्गदर्शन बहुत ही उपयोगी होंगे।

**दृष्टि विकसित करने के लिए सामग्रियाँ :-**

- धुंधले तथा उजले विषम किनारेवाली धीमी गति की वस्तुएँ।
- टार्च, लैंप और मोमबत्ती।
- फ्लोरेसेंट वस्तुएँ।
- श्याम-खेत पट्टियों वाली वस्तुएँ।
- सजावटी और चमकीले कागज से बने खिलौने।
- झूलते खिलौने।

**दृष्टि प्रेरणा के लिए प्रेरक सामग्री :**

- सूती गुड़िया के चित्र
- गत्ते पर बने भित्तिचित्र
- ऊन की लटकन

- चमकीली गेंद
- काले मनकों की कफ
- श्याम-श्वेत वृत्ताकार बोर्ड
- रंगीन रिबनें
- मुकुट

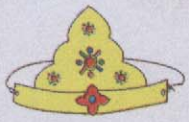

- श्याय-श्वेत पट्टियों वाला बोर्ड
- तस्वीर
- कागज की पवन चक्की

- ऊन के पंखे

- सजावटी कागजों का पंखा
- चरख

- चाकलेट के रैपरों से बना नाँदनुमा खिलौना
- चमकीले कागज से बना नाँद-खिलौना

# वाणी एवं भाषा

भाषा आश्चर्यजनक तेजी से सीखी जाती है, विशेषकर बच्चों द्वारा अपने प्रथम शब्द के बोलने के बाद,और आमतौर से अपनी आयु के एक वर्ष बाद। फिर भी, बातचीत और संप्रेषण करने के लिए बच्चों को पहले प्रौढ़ों द्वारा की जानेवाली वाणी को सुनाना चाहिए और उन्हें प्रौढों की तरह उनकी अपनी भाषा में विशिष्ट ध्वनियों को स्वयं बोलने के अवसर दिये जाने चाहिए। बच्चा जन्म के कुछ दिनों के बाद से ही मानव कंठ सहित विभिन्न प्रकार की ध्वनियाँ सुनता है और कुछ दिन में ही यानी एक महीने की आयु होते - होते वह विभिन्न प्रकार की ध्वनियों में भेद करने योग्य हो जाता है।

**भाषा विकास के मील के पत्थर :**

| आयु | क्रियाकलाप |
|---|---|
| 1-3 माह | बातचीत की कूज को सुनता है |
| 4-6 माह | तुतलाता है और कार्यों की ओर इंगित करता है |
| 7-9 माह | गूँज, कुछ शब्दों को समझता, कार्यों को समझता है, बाय-बाय पर प्रतिक्रिया करता है। |
| 10-12 माह | बड़बड़ाता है। |
| 13-18 माह | सामान्य प्रश्न समझता है, नाक, आँखों और बालों की ओर इशारा करता है, 22 शब्दों की शब्दावली, उसके पास होती है, दो शब्द उच्चरित करता है, अपनी जरूरतों को मालूम कराने शब्दों का उपयोग करता है। |
| 19-24 माह | उसके पास 272 शब्दों की शब्दावली होती है, बातचीत आने लगती है। |

स्नो.सी.डब्ल्यु (1989) इन्फैन्ट डेवलपमेंट एन.जे. प्रिन्टैस हाल

**भाषा विकास की प्रोन्नति के सिद्धांत :**

- शिशु के चेहरे की अभिव्यक्तियों, कार्यों और ध्वनियों की नकल करें। आँख से आँख मिलाएँ और डायपरिंग, खिलाते या अन्य कार्य करते सामय उससे बात करते रहें।
- शिशु को बोलने-सुनने में व्यस्त रखें। जब बच्चा चुप होता है तो बातचीत का सिलसिला जारी रखें और कई प्रकार की आवाजें करते उसे सतर्क रखें।
- बच्चे से हमेशा ध्वनियों से पहले बहुत जोर जोर से और अचानक गानों, मुस्कुराहटों के द्वारा संप्रेषण का प्रयास करें, उसकी प्रशंसा करें, उसके बोलने के प्रयास के बारे में गड़बड़ न कर उसे अपने-आपको व्यक्त करने का समय दें। उससे की जानेवाली बातों के वाक्यों को समाप्त न करें और न समय के भीतर करने दें। अगर वह कुछ बोल सकता है, तो उसे जवाब न दें।
- मधुर ध्वनियों वाले रिकार्ड बजाएँ व बच्चे को झूला झुलाते समय लोरियाँ गाएँ ।

- बच्चे से बार-बार बात करते समय अपना चेहरा उससे 12-18 इंच दूर रखें ताकि वह आपका चेहरा व होठों के चलन को देख सके ।
- छुपा-छुपी का खेल खेलें । आइने पर कपड़ा डालकार खेल बदलें।
- बच्चे को उठा कर घर भर में घुमाएँ या दूसरी जगहों पर लें जाकर उसकी रुचि की वस्तुओं की ओर इशारा कर बताएँ।
- ध्यान पूर्वक सुनें कि बच्चा क्या कहना चाह रहा है और सकारात्मक रूप से प्रतिक्रिया व्यक्त करें ।
- बच्चे के एक-दो शब्दों की बात को दोहराएँ और उसके वाक्य को पूरा करें।
- ध्वनियों को ज्यादा दिलचस्प बनाने के लिए समय-समय पर अपनी आवाज को घटाते-बढ़ाते रहें।

**स्पृश्य प्रेरणा के लिए सामग्रियाँ**

- खड़खडे
- संगीत वाद्य
- घंटियाँ
- ताल
- बेअर-बग्स

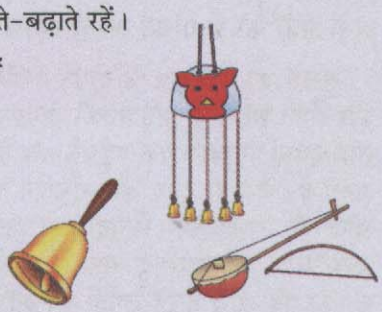

**भाषा प्रेरणा के लिए सामग्रियाँ**

- कठपुतलियाँ
- चित्रों की किताब

**तैयार की गयी प्रेरणा सामग्री :**

- नारियल खोल का खड़खड़ा
- गत्ते का खड़खड़ा
- पावडर डिब्बा खड़खड़ा
- घंटी
- इकतारा
- प्लास्टिक के बक्स का खड़खड़ा
- टीन के डिब्बे का खड़खड़ा
- अंगुल खिलौना
- छड़ी कठपुतली
- दस्ताना गुड़िया
- कागज की लुगदी का मुखौटा ।

# स्पृश्य

स्पृश्य प्रेरणा (छूने की अनुभूति) माँ के गर्भ में ही विकसित होनी आरंभ हो जाती है। यह जन्म के समय की अति प्रबल अनुभूति है । इसे विभेदीकरण की तरह परिष्कृत नहीं किया गया हैं । स्पर्श की जागरूकता, आत्मवाचक के आधार पर पर्यावरण के प्रति दबाव और तापमान बच्चे को प्रेरणा की ओर अभिमुख करते हैं या उसे टालने (स्व-रक्षा और दर्द में हटजाना) की प्रतिक्रिया करने देता है।

**अन्य क्षेत्रों को प्रभावित करती स्पृश्य प्रेरणा :**

बच्चों की देखभाल के दौरान उन्हें दी गयी स्पृश्य प्रेरणा उनमें अपने और अपने शरीरों के प्रति उनकी जागरूकता में वृद्धि करती है । यह उन्हें स्पर्श द्वारा पर्यावरण तक पहुँचने और उसको खोजने में भी सहायता प्रदान करती है। जैसे ही दृष्टि और संचलन का विकास आरंभ होता है, स्पृश्य खोज और विभेदीकरण में वृद्धि हो जाती है । बच्चा आरंभिक महीनों में श्रव्य प्रेरणा का केंद्रबिंदु अपने आपकी, (चेहरा और पैर), सतह और बनावट की खोज करने लगता है। अधिकांश बच्चों के लिए स्पर्श की अनुभूति और हाथों से वस्तुओं की सक्रिय खोज में वस्तुओं की पहचान या उनमें विभेदीकरण के विकास में दृष्टि-बोध संयुक्त या गौण भूमिका निभाते हैं । अंधों के लिए तो, स्पृश्य प्रेरणा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

**स्पृश्य प्रेरणा की प्रोन्नति के सिद्धांत :**

- बच्चे को अपने शरीर के बारे में खोज करने में मदद करें । यह उसे अपने शरीर के अंगों को पहचानने में मदद करेगी ।
- नहलाते, खिलाते या खेल खिलवाते जैसे क्रियाकलापों के दौरान जब देखभाल करनेवाला बच्चे के शरीर के साथ संपर्क कायम रखता है, तो यह बच्चे को सुरक्षा और आत्मविश्वास प्रदान करता है ।
- बच्चे को अपने आस-पास के बारे में जानने दें ।
- बच्चे को अपने घर में और बाहर विभिन्न सतहों और चीजों को छूने और महसूस करने के अवसर प्रदान करें ।
- बच्चे को विभिन्न बनावट और सतहों के खिलौने प्रदान करें। इससे उसमें वस्तुओं के बीच विभेदीकरण करने या उन्हें पहचानने में सहायता मिलेगी।

**स्पृश्य प्रेरणा प्रदान करने के लिए आवश्यक सामग्री :**

- नर्म खिलौने
- लकड़ी के खिलौने
- रूई, ऊन, नारियल जटा, फर जैसी सामग्रियों से बने विभिन्न खिलौने।

**स्पृश्य प्रेरणा प्रदान करने के लिए तैयार की गयी सामग्रियाँ :**

- मोर पंखों का गुच्छा
- दस्ताने का खिलौना
- स्पृश्य बोर्ड
- स्पृश्य घन
- स्पंज का खिलौना
- पोन-पोन
- ऊन की गेंद
- पावडर का पफ
- चोटी की लटकन
- कागज की पट्टियों की गेंद
- खरगोश, तोता
- पक्षी
- रूई से भरी गुड़िया ।

बच्चे अपने स्पृश्य ज्ञान को काफी हद तक अपने जीवन के प्रथम वर्ष के दौरान ही, न केवल वस्तुओं को अपनी उँगलियों से छूकर महसूस करते हैं बल्कि अपनी जीभ और होठों से भी स्पर्शकर महसूस करते हैं। चर्म संपर्क और गरमाहट, विशेषकर माँ के शरीर से पाना उन्हें अत्यंत ही अधिक प्रेरणा प्रदान करता है । अपने रेंगने और बचपन के दौरान स्पर्श बाल संवेदनों की अति आनंददायक अनुभूति होती है।

# संतुलनीय :

संतुलनीय प्रणाली जटिल रिले केंद्र है जो शरीर की कई प्रणालियों को प्रभावित करता है। अत: संतुलनीय प्रेरणा तंत्रिका तंत्र के विकास पर गहरा प्रभाव डालती है।

**संतुलनीय प्रणाली के कार्य :**

- अधर में सिर की स्थिति को स्थिरता प्रदान करना
- सिर के संचलन के समय अधर में आँखों की स्थिति स्थिर करना
- शरीर की मुद्रा व संचलन नियमित करना
- शारीरिक और भावात्मक सुरक्षा में योगदान करना हैं।

**संतुलनीय प्रेरणा प्रदान करने वाली सामग्रियाँ :**

- संतुलन बोर्ड
- झूलता बोर्ड
- स्केट बोर्ड
- रेत, पानी, चिकनी मिट्टी

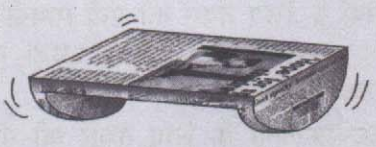

**संतुलनीय प्रेरणा के लिए प्रेरणा सामग्रियाँ :**

- गत्ते का झूलता बोर्ड
- कागज की टोकरी
- दलारा झूला

संतुलन प्रणाली से अपेक्षा की जाती है कि शरीर के संचलनों के दौरान पैदा होनेवाली साधारण प्रणाली और संवेदनाओं के साथ - साथ अपनी भी भूमिका निभाएँ । संतुलनीय प्रणाली के तीन प्रमुख कार्य-शरीर की स्थिति, सिर के संचलन के समय अधर में आँखों की स्थिति में संतुलन और स्थिरता बनाये रखने में सहायता करना है।

# प्रेरक (चालक)

बच्चे के पैदा होते ही या शायद उससे भी पहले शरीर पर नियंत्रण कायम करने का संघर्ष शुरु हो जाता है। शरीर की माँसपेशियों के संचलनों पर नियंत्रण करने की शिशु की योग्यता में होनेवाले परिवर्तनों को प्रेरक/चालक विकास माना जाता है। जीवन के प्रथम तीन वर्षों के दौरान बच्चे के अपेक्षाकृत निस्सहाय शिशु अवस्था के प्रेरक क्रियाकलाप से स्वतंत्रता और संचलन की अवस्था तक बच्चे की प्रगति होती है। शैशवावस्था के दौरान मौलिक प्रेरक कौशलों का विकास बाद में बचपन की अधिक विस्तृत और परिष्कृत प्रेरक क्रियाओं के लिए नींव की तरह काम करता है।

**प्रेरक विकास के मील के पत्थर**

| क्रियाकलाप | आयु |
|---|---|
| सिर की स्थिरता | 2.3 महीने |
| लुढ़कता | 3.2 महीने |
| स्थिरता से बैठता | 6.6 महीने |
| रेंगता | 7.00 महीने |
| खड़ा होता है | 7.2 महीने |
| खिसकता /चढ़ता है | 9.00 महीने |
| पकड़कर चलता है | 9.2 महीने |
| अकेला चलता है | 12.3 महीने |
| सीढ़ियों पर अकेला चलता है | 16.6 महीने |
| गेंद फेंकता है | 20.3 महीने |
| जमीन से दोनों पैर ऊपर उठाकर उचकता है | 23.8 महीने |

**किस प्रकार प्रेरक क्षेत्र विकास के अन्य क्षेत्रों को प्रभावित करता है :**

प्रेरक कौशलों का विकास तंत्रिका तंत्र, माँसपेशियों और संवेदिक तंत्रों के समन्वयन को आवेष्टित करता है । परिणाम स्वरूप, बढ़ते हुए शिशु के अन्य अंगों द्वारा प्रेरक विकास प्रभावित होता और प्रभावित करता है। प्रेरक कौशलों की प्राप्ति शिशु को चलने और अपनी जिज्ञासा को संतुष्ट करने के उद्देश्य से अपने पास-पड़ोस को खोजने में सहायता करती है। ये शैशवावस्था के प्रेरक संवेदन क्रियाकलाप ही ज्ञान को नींव प्रदान करते हैं।

सरकने और चलने के लिए स्वयंकृत संचलन बोधात्मक योग्यताओं के विकास, स्थानिक, अभिमुखीकरण, ऊँचाई के प्रति भय और कहाँ वस्तुएँ रखी हैं याद रखने की योग्यता को प्रोन्नत करते हैं। यह संकल्पना निर्माण और भावनाओं के विभेदीकरण को सरल बनाते हैं। प्रेरक नियंत्रण के द्वारा शारीरिक स्वतंत्रता की स्थापना, आत्म-विश्वास, मनोवैज्ञानिक सुरक्षा और स्वतंत्रता की अनुभूति या अन्य भावों को जन्म देती है।

**प्रेरक विकास की प्रोन्नति के लिए संस्तुत सिद्धांत :**

- प्रेरक विकास की प्रोन्नति के लिए उपयोग में लाये गये क्रियाकलाप और सामग्रियाँ प्रेरक विकास के विभिन्न चरणों के भीतर उचित विकासात्मकता (आयु के अनुरूप) लिये हुए होने चाहिए।
- देखभाल करनेवालों को चाहिए कि वे शीघ्र विकास के प्रयत्न न करें।
- विकास के प्रत्येक क्षेत्र और अवस्था में खेल-कूद और कसरत जैसे प्रेरणात्मक क्रियाकलापों को प्रदान किया जाना चाहिए ।
- प्रेरक विकास को सरल बनाने के लिए अभिकल्पित विभिन्न प्रकार के खिलौने और सामग्रियाँ बच्चे को उपलब्ध करायी जानी चाहिए।
- संचलन में अत्यधिक स्वतंत्रता को सुविधाजनक बनाने के लिए तथा तापक्रम और सामाजिक बंधनों के अनुसार अनुमत रूप से शिशुओं को कम से कम कपड़े पहनाने चाहिए।
- शिशुओं के लिए नमूना बनाकर दो घनों को बजाने और वस्तुओं को डिब्बों में रखने जैसे क्रियाकलापों का प्रदर्शन कर उनसे नकल करवानी चाहिए।

**प्रेरक विकास को प्रोन्नत करने की सामग्रियाँ :**

- सकल प्रेरक क्रियाकलाप की वृद्धि करने के लिए छोटी पहिया गाड़ियाँ, झूला, गलीचे, चढ़ने वाली कुर्सियाँ, संतुलन बोर्ड, टनल (सुरंग) जैसी सामग्रियों का उपयोग किया जा सकता है।
- बढ़िया प्रेरक क्रियाकलापों के लिए खोखले बिल्डिंग ब्लाक, बड़े मनके, कागज की गेंदें, रोलर्स, नेस्टिंग तथा स्टोकिंग खिलौनों का उपयोग किया जा सकता है।
- **प्रेरक क्रियाकलापों के लिए तैयार की गयी सामग्री में शामिल हैं:** बैलगाड़ी, बच्चा गाड़ी, पहिया और छड़ी, मड कार्नर कुर्सी और गत्ते की कुर्सी।
- **बढ़िया प्रेरक क्रियाकलापों के लिए तैयार की गयी सामग्रियाँ हैं :** ब्लाक्स, चित्र कार्ड, पत्र-पेटी, फिंगर बोर्ड, फिंगर लैडर (सीढ़ी) खूँटी बोर्ड, कागज की लुगदी की कटोरी और मनकों सहित कटोरी।

# संज्ञानात्मक

संज्ञान का अर्थ है, जान लेना । यह सीखने और समझने की प्रक्रिया है। इसमें समस्त मानसिक जीवन सम्मिलित है तथा ध्यान, बोध, विचार, विवेचन, काल्पनिकता और प्रत्यावर्तन और समस्या समाधान भी इनमें शामिल हैं। अत:, संज्ञानात्मक विकास से तात्पर्य है बौद्धिक कौशलों का विकास । संज्ञानात्मक विकास में मील के पत्थर

| आयु | क्रियाकलाप |
|---|---|
| 0-1वर्ष | देख, सुन सकता है, रुचि के बारे में जानता है, पांच ज्ञानेंद्रियों द्वारा अपने आस-पड़ोस के बारे में जानकारी प्राप्त करता है।<br><br>विरोधाभासी रंगों, ध्वनियों के भिन्न रूपों, लय-ताल आदि के प्रति आकर्षिक होता है ।<br><br>संचलन और पर्यावरण में होनेवाले परिवर्तनों के प्रति आकर्षित होता है। |
| 1-2 वर्ष | पूर्व घटनाओं को पहचानता और याद करता है ।<br><br>कारण समझता है और संबंध जोड़ता है जैसे :- खड़खड़े द्वारा उत्पन्न की गयी ध्वनि । |
| 2-3 वर्ष | देखी हुई पूर्व क्रियाओं की पुनरावृत्ति करता है।<br><br>खेलते समय स्वाँग करता है यानी अन्य वस्तुओं या लोगों के लिए वस्तुओं को प्रतीकों के रूप में उपयोग करता है ,जैसे पिता या माता का स्वाँग करता है या कुछ ब्लाकों को जोड़कर बिस्तर का रूप देता है।<br><br>चित्रों में वस्तुओं,पशुओं, फलों और सब्जियों को पहचानता है। |

**संज्ञानात्मक विकास की प्रोन्नति के सिद्धांत :**

- क्रियाकलाप को सरल बनाएँ। उदाहरणार्थ - शिशु को छोटी -सी चिड़िया से लेकर बड़ी से बड़ी चीज दिखाएँ अर्थात, सेट में छोटी से लेकर बड़ी चीजों से परिचित कराएँ ।
- नये क्रियाकलाप के महत्वपूर्ण अंगों की ओर संकेत कर उन्हें छुएँ जैसे :- पहेली बोर्ड पर की खाली जगह, जो बच्चे के हाथ में पकड़े हुए पहेली के टुकड़े से मेल खाती हो।
- बच्चे को बताएँ कि कोई क्रियाकलाप कैसे करें या समस्या का समाधान करना दिखाएँ ।
- जहाँ तक संभव हो बच्चे को अपने आप ही सीखने दें। जरूरत न होने या उनके न चाहने पर उनके द्वारा किये जाने वाले क्रियाकलापों में हस्तक्षेप न करें।

**संज्ञानात्मक विकास और विकास के अन्य क्षेत्रों के बीच अन्तर्संबंध :**

संज्ञानात्मक विकास बच्चे के समग्र विकास में सहायता प्रदान करता है । उदाहरणार्थ-बच्चा जब खड़खड़ा पकड़ने कौशल सीखा हुआ होता है तो वह यह भी सीख जाएगा कि उसके हिलाने से वह खड़खड़ाहट की ध्वनि पैदा करता है । इससे यह सिद्ध हो जाता है कि प्रेरक क्षेत्रों का विकास संज्ञानात्मक विकास में भी सहायता करता है।

**संज्ञानात्मक विकास की प्रोन्नति के लिए आवश्यक सामग्रियाँ :**

- खड़खड़े और चालक वस्तुएँ
- गेंद
- खींचने वाली गाड़ियाँ ।
- घन
- सवारी उपकरण
- गाड़ियाँ
- रेत और मिट्टी
- पहेलियाँ
- बिल्डिंग ब्लाक्स
- परिचालित खिलौने

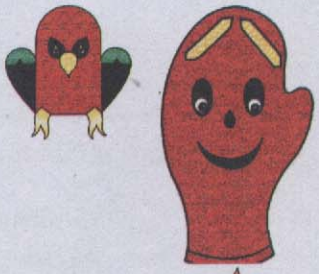

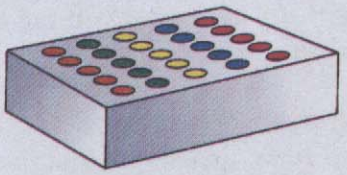

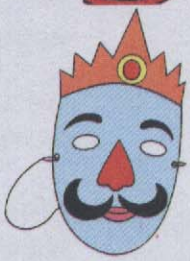

**संज्ञानात्मक विकास के लिए तैयार की गयी प्रेरणा सामग्रियाँ :**

- अँगुल पुतलियाँ
- छड़ी की कठपुतलियाँ
- दस्ताना खिलौने
- कागज के मुखौटे
- कागजी घन
- खूँटी बोर्ड ।

# भावात्मक

जन्म के समय से ही बच्चे भावुक होते हैं। नवजात शिशु की जरा सी किसी भी प्रकार की अभिव्यक्तियाँ माता-पिता, भाई- बहनों, संबंधियों और अनजान लोगों से भी प्रतिक्रियाएँ करवाती हैं। अन्य लोगों के साथ उनकी बातचीत में रुकी-रुकी भावुक मनोस्थिति के अर्थभेद और अभिव्यक्तियाँ होती हैं। ये मनोवेग न केवल बच्चे के सामाजिक अनुभवों में बल्कि विकास के हर क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। छोटे शिशु और स्कूल जाने से पूर्व की आयुवाले बच्चों के मनोभाव अनुभवहीनता और अपूर्ण सांसारिक ज्ञान के कारण सीमित होती है।

**भावात्मक विकास में मील के पत्थर**

| क्रियाकलाप | आयु |
|---|---|
| व्यथा / बेचैनी / दर्द | जन्म - 3 महीने |
| रुचि / उत्तेजना | ,, |
| विरक्ति | ,, |
| दुख | ,, |
| प्रसन्नता / आनंद /खुशी | 2-7 महीने |
| आश्चर्य | 3-6 महीने |
| क्रोध | 4-7 महीने |
| भय | 4-9 महीने |
| अपनत्व / प्रेम | 18-36 महीने |
| समानुभूति / सहानुभूति | ,, |
| घबराहट | 24-36 महीने |
| गुनाह | ,, |
| गर्व | ,, |
| शर्म | ,, |

**भावात्मक विकास की प्रोन्नति के सिद्धांत :**

- सीखने और रमणीय अदला बदली सहित झूलने, गले लगाने, लिपट जाने, मुस्कुराने, छूने, आँख से आँख मिलाकर देखने, बातचीत करने,गाने के लिए समय निकाल कर रखें।
- बच्चे के इशारों और संकतों को ध्यान से देखें और उसकी व्यथा को समझें।
- व्यथित शिशुओं को दुलार, शान्त ध्वनियों और मौखिक अभिव्यक्तियों से पुन: आश्वासन दें। बेचैन बच्चों को कम करने के लिए उनके शरीर पर धीमे-धीमे हाथ फेरें और झुलाएँ ।
- कुछ बच्चों को माता-पिता के आश्रय से निकलकर व्यक्तिगत स्वतंत्रता आसानी से हासिल करने भरवाँ पशु, कंबल या उसकी सुरक्षा की वस्तु की सहायता की जरूरत होती है।
- जहाँ तक संभव और समुचित हो सके गुस्सा और भय (अंधेरे से डरनेवाले बच्चे को नाइटलैंप प्रदान करें ) जैसे नकारात्मक भावों को जगाने वाली उत्तेजना पर नियंत्रण करें। परंतु शिशु को अति सुरक्षित नहीं होना चाहिए।
- शिशुओं के बर्ताव पर नियंत्रण करने के लिए भय और दोष का कभी प्रयोग न करें। -अगर तुम रोना बन्द नहीं करोगे तो उस अलमारी में भूत है जो बाहर निकलकर तुम्हें पकड़ लेगा -जैसी बातों का उपयोग करें ही नहीं।
- प्रति दिन के भावी और पुनर्आश्वासन के अनुभवों को (उदा: नहाने और सोने के सामय) व्यक्त करें ताकि बच्चा यह अनुभव कर सके कि हम उससे क्या और किस बारे में बात करना चाहते हैं।

**भावात्मक विकास के लिए प्रोन्नति सामग्रियाँ :**

- नर्म खिलौने
- संगीतमय खिलौने
- खड़खड़े
- घन
- खूँटी बोर्ड
- पहेलियाँ
- मिट्टी के खेल
- जल क्रियाकलाप

**भावात्मक विकास के लिए तैयार की गयी प्रेरणा सामग्रियाँ :**

- कपड़े का खिलौना
- स्पंज का खिलौना
- कागज की हैट ।

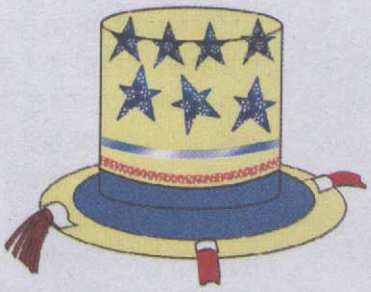

# सामाजिक

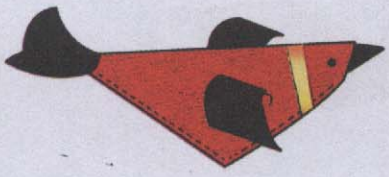

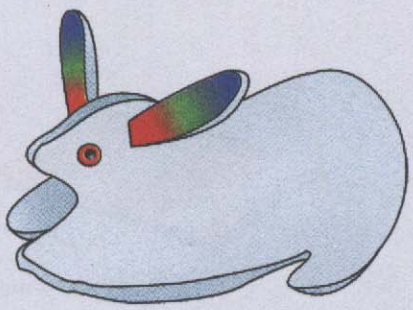

शिशु आरंभ से ही अन्य व्यक्तियों के प्रति प्रतिक्रिया करते हैं। एक महीने की आयु तक आते-आते वे वाणियों के प्रति प्रतिक्रिया करते हैं और चेहरों के प्रति विशेष रूप से सतर्क रहते हैं। कभी-कभी दो-तीन लोगों के बीच वे अन्य लोगों की तरफ देख मुस्कुराना शुरू करते हैं। लगभग 6 महीने की आयु में वे अपने पास-पड़ोस में विशेष व्यक्ति के प्रति लगाव जाहिर करते हैं, जो सामान्यत : माँ होती है। इसके एक-दो महीने बाद ही वे परिवार के अन्य लोगों जैसे:- पिता, भाई, बहनें या दादा-दादी के प्रति लगाव दर्शाते हैं। लगाव का यह विकास बच्चे में सुरक्षा व संरक्षा की भावना पैदा करती है, विशेषकर तब, जबकि बच्चा दुनिया देखता जाता है और अनपेक्षित घटनाओं का अनुभव प्राप्त करता है। यह उस समय देखा जाता है, जब बच्चा अपने माता-पिता के उपस्थित रहने तक भी अजनबी के साथ खेलता रहता है और जैसे ही उसे आशंका हो जाती है या अनिश्चितता महसूस होती है,वह फौरन माता या पिता की ओर मुड़ जाता है। अपने माता-पिता से प्रेम और विश्वास सीखकर बच्चे अन्य सामाजिक लगाव और रिश्ते बनाने लगते हैं।

**सामाजिक विकास के मील के पत्थर :**

| क्रियाकलाप | आयु |
|---|---|
| देखते ही माँ को जान जाता है | 1-2 महीने |
| सामाजिक मुस्कुराहट | 2-3 महीने |
| सामाजिक हँसी | 3-4 महीने |
| ताकता हुआ देखता और बात करता है | 3-6 महीने |
| उसे थामने के लिए भुजाएँ /हाथ आगे बढ़ाता है | 5-6 महीने |
| मुँह ढाँप कर बू बोलने का खेल | 8-10 महीने |
| अजनबियों से शर्माता<br>पैट-ए-केक का खेल, माँगने पर खिलौना देता है | 9-10 महीने |
| नकारात्मकता शुरु होती है | 11-12 महीने |
| पारस्परिक खेल खेलता है | 24-30 महीने |
| पर्यवेक्षण में स्वयं कपड़े पहनता है । | 30-36 महीने |

**सामाजिक विकास की प्रोन्नति के सिद्धांत :**

- बच्चों को शांत क्षण गुजारने दें । परंतु, सहायता के लिए रोते हुए बच्चे की कभी उपेक्षा न करें ।
- बच्चों को याद रखने के लिए नियमों को राइम्स लय में बनाकर बताएँ।
- स्वतंत्रता और आत्मसंतुष्टि के भाव पनपने के लिए प्रोत्साहित करें । कहने का तात्पर्य है, जो काम बच्चे अपने-आप कर सकते हैं, उन कामों को करने से दूर रहें।
- विभिन्न सांस्कृतिक और समुचित रूप से विकसित खिलौने और सामग्रियाँ प्रदान करें परंतु व्यक्तिगत बातचीत के लिए खिलौनों को न हटाएँ ।
- बच्चों के साथ मुँह ढाँपकर बू बोलने जैसे पारस्परिक खेल खेलें ताकि वे भी परस्पर ऐसा कर सकें। चूँकि बच्चे बड़े होते रहते हैं पेचीदा खेल (स्वाँग का खेल) बढ़ाएँ।
- सावधानीपूर्वक पर्यवेक्षित स्थितियों में खेलने बच्चों के लिए अवसर प्रदान करें ।

**सामाजिक विकास प्रदान करनेवाली सामग्रियाँ :**

- गुड़ियाँ
- पशु-खिलौने
- नर्म-खिलौने
- बहाना बनाने के खिलौने जैसे कलम खेल, रसोई खिलौने - के खेल।

**सामाजिक विकास के लिए तैयार की गयी प्रेरणा सामग्रियाँ :**

- कपड़े का खिलौना
- खरगोश
- पक्षी
- कपड़े की झूलती गुड़िया ।

# मद-बहुरंगी छड़ी

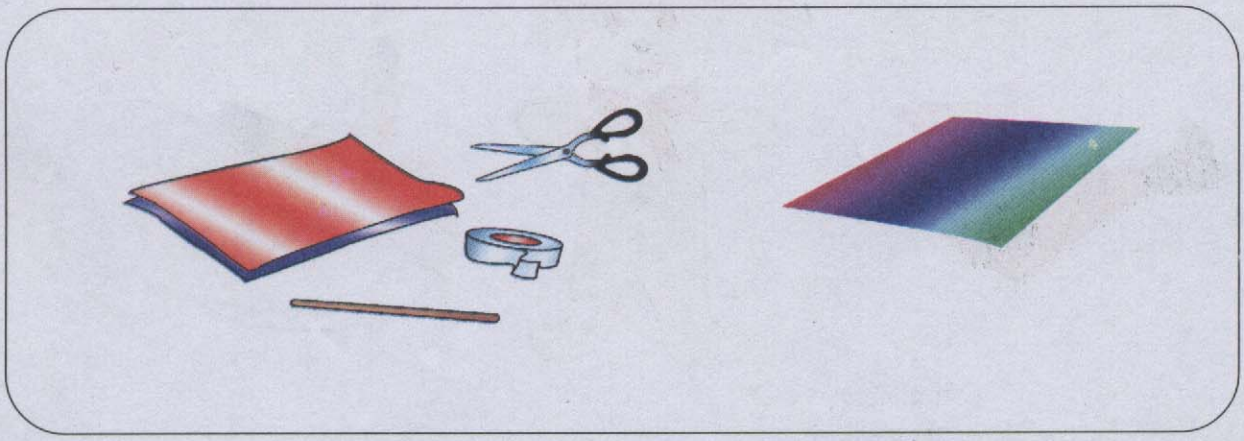

कच्ची सामग्री- चमकदार कागज, कैंचियाँ, डोरी, दो अलग-अलग रंगों के सैटिन के रिब्बन, सरेस, फीता, छड़ी।

1)

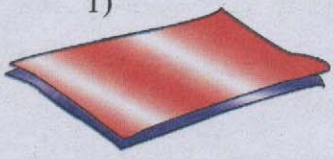

2)

3)

4)

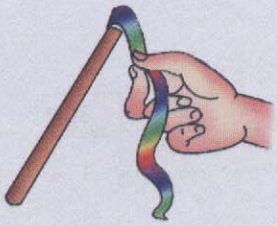

5)

6)

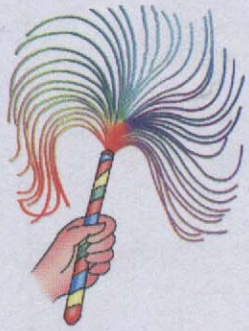

# बहुरंगी छड़ी

**तैयारी :** चमकदार कागज को 30 सें.मी. लंबी पतली पट्टियों की शकल में काट लें। इन पट्टियों को आधा मोड़ लें और छड़ी को पट्टियों की तह में घुसा कर सेलोटेप से इस तरह चिपका दें कि चमकेंदार कागज का गुच्छा खुला लटकता रहे।

**उपयोग :** दृषि को खोजने में सहायक होती है ।

जब बच्चे शरीर पर फेरा जाता है तो स्पृश्य प्रेरणा के लिए झुरझुरी पैदा करने में उपयोगी होता है।

**रुपांतर :** चमकीले कागज के बदले चटकीले रंगों के कपड़े उपयोग में लाये जा सकते हैं।

जब चमकीले कागजं पर प्रकाश फेंका जाता है तो वह दमकने लगता है, जिससे दृष्टि प्रेरणा में उन्नति होती है।

# मद- नारियल की गुड़िया

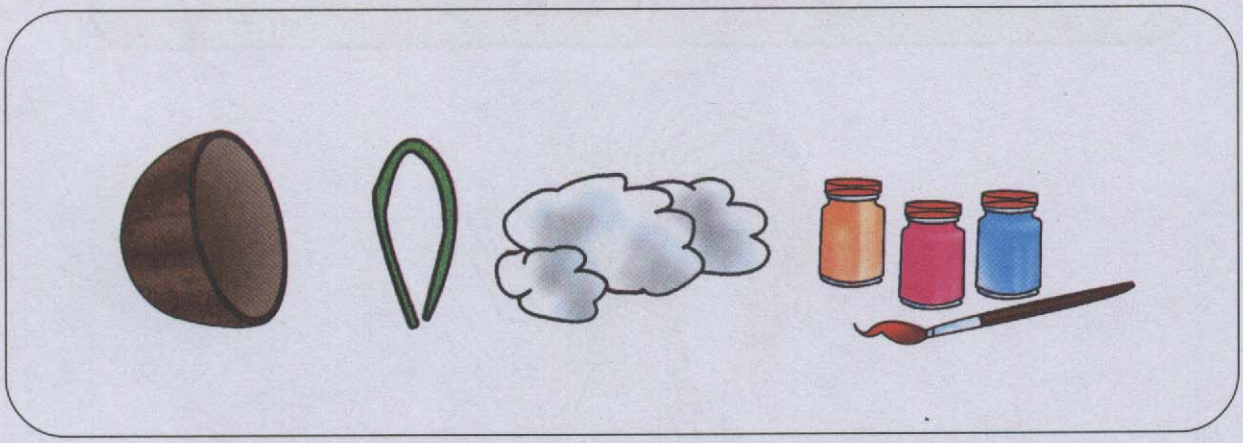

कच्ची सामग्री : आधा नारियल खोल, डोरी, नारियल-रुई, गेंदें, रंगीन कागज, सरेस, रेगमाल, पेंट, कैंचियाँ।

1)

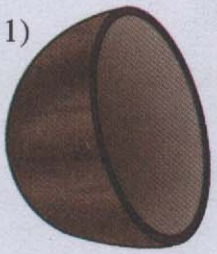

2)

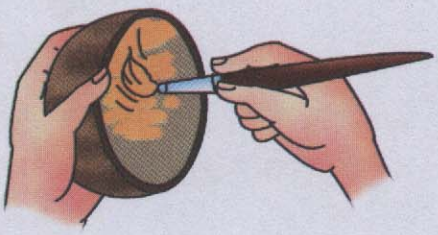

3)

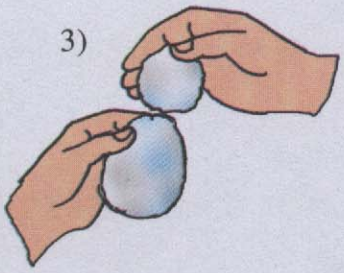

4)

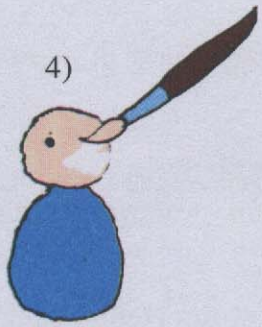

5)

6)

7)

8)

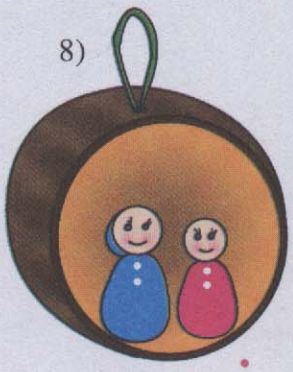

# नारियल गुड़िया

**तैयारी :** नारियल खोल की सतह को रेगमाल से खूब घिसकर चिकना बना लें। रुई के दो अलग- अलग रंगों के गोले लेकर उन्हें एक दूसरे पर बैठा लें। इसी तरह छोटे आदार की एक और गुड़िया बना लें।

काले रंग के कागज को आँख और मुँह की शक्ल में काटकर उन्हें चेहरे पर चिपका दें। इसी प्रकार शरीर के लिए भी रंगीन कागज बटनों के आकार में काटकर उन्हें शरीर पर चिपका दें। नारियल खोल के सुराख में डोरी घुसाकर उसे फंदे की शकल में बाँध दें तब नारियल खोल के पेंदे में गुड़ियों को सरेस से लगा दें।

**उपयोग :** नाँद की शकल का यह खिलौना दृषि प्रेरणा के लिए उपयोगी होगा।

**रूपांतर :** प्लास्टिक की बड़ी चूड़ियों या प्रेशर कूकर के पुराने गैसकेट से इसी प्रकार के लटकते खिलौने बनाये जा सकते हैं। दृष्टि समस्या से पीड़ित बच्चे के लिए नारियल खोल को चटकीले रंगों से रँगा जा सकता है।

# मद-झूलती गुड़िया

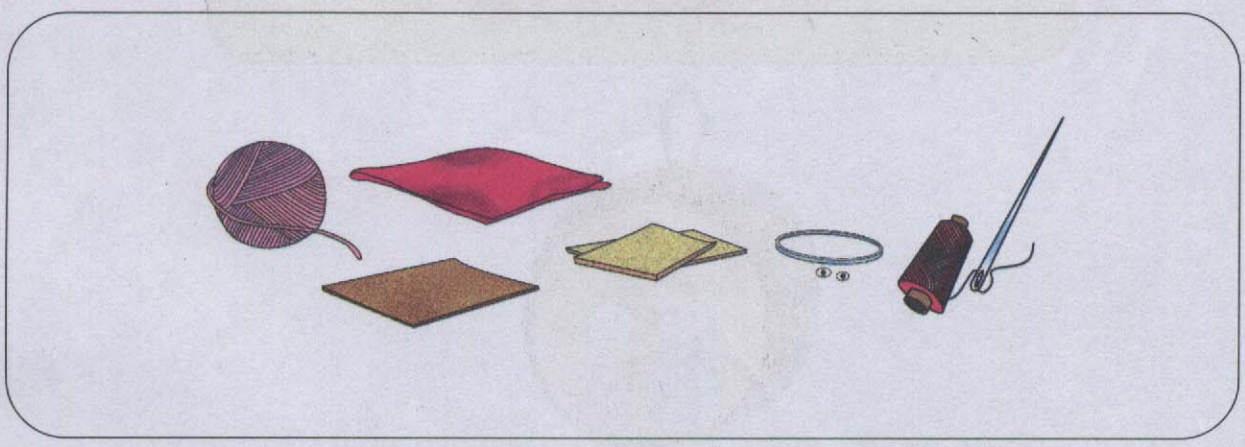

कच्ची सामग्री : बड़े आकार की चूड़ियाँ, कपड़ा, सुई, धागा, गत्ता, पावडर पफ/स्पंज का टुकड़ा।

1)

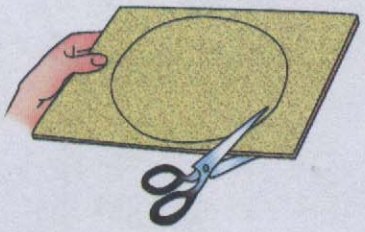

2)

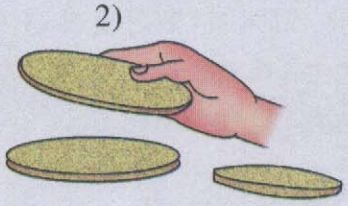

3)

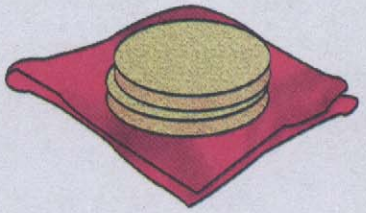

4)

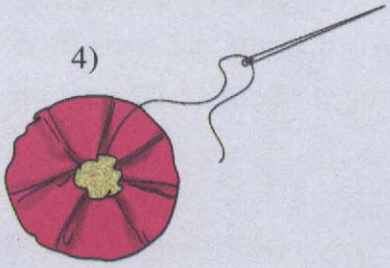

5)

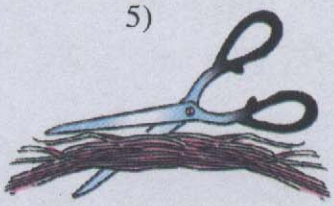

6)

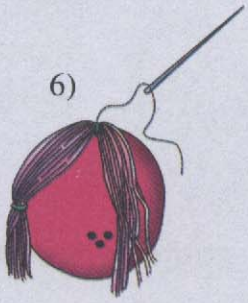

7)

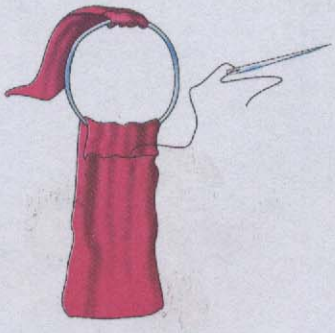

8)

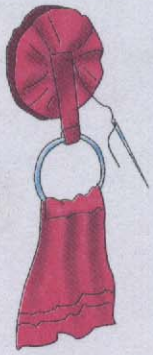

9)

10)

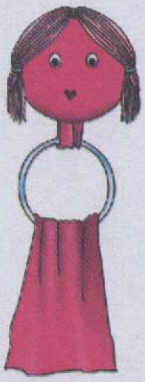

# झूलती गुड़िया

**तैयारी :** पेट, चेहरा तथा छाती बनाने के लिए गत्ते को विभिन्न आकारों के टुकड़ों में काटलें। गुड़िया का निचला भाग बनाने के लिए प्लास्टिक बोतल को काट लें या कीप का उपयोग करें।

तब पेट, चेहरे, छाती के अंग तथा प्लास्टिक के शंकु को अलग-अलग रंगों से पेंट कर दें।

चेहरे पर काले रंग से आँखों नाक, भौहों तथा मुंह की शक्ल बना लें।

प्लास्टिक शंकु के एक छोर पर डोरी की गाँठ बाँध कर उसके खुले भाग की और खींचें ताकि वह मजबूती से जकड़ा जाए। उसी डोरी को छाती, सिर और0 पेट की ओर चिपका दें।

डोरी के एक छोर को लटकन की तरह छोड दें। आवश्यकता पड़ने पर डोरी के इस अंश का उपयोग किया जा सकता है।

**उपयोग :** चटकीले रंग दृष्टि प्रेरणा में मदद करेंगे। यह प्रेरक विकास में बढ़िया सहायता भी करेगी।

**रूपांतर :** चिकनी मिट्टी या लोई से भी इसी प्रकार की गुड़ियाँ बनायी जा सकती हैं। आकृतियों में रूपांतर करके विभिन्न प्रकार की गुड़ियाँ बनायी जा सकती हैं।

# मद - चमकती गेंद

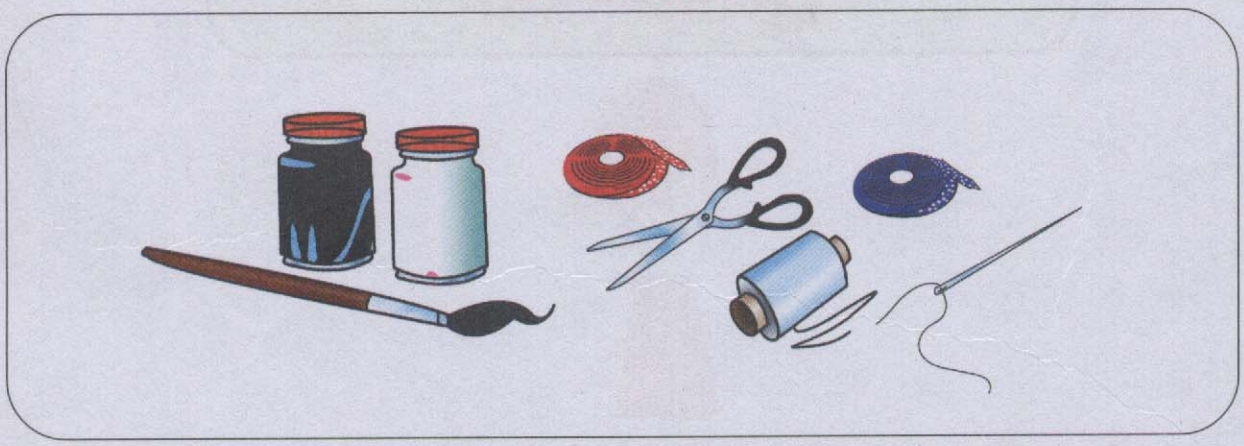

कच्ची सामग्री : प्लास्टिक की गेंद, सरेस, चमकदार कागज, कैंचियाँ, सैटिन की रिबन, घुंघरू।

1)

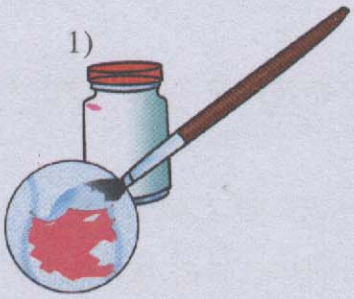

2)

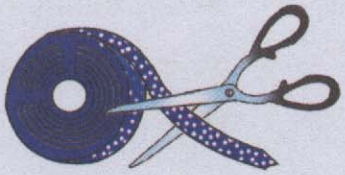

3)

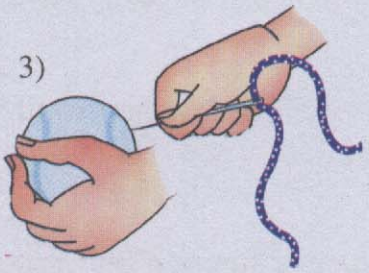

4)

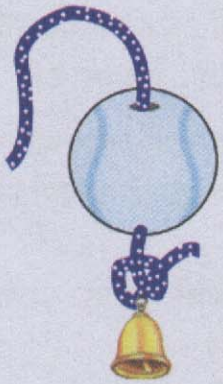

5)

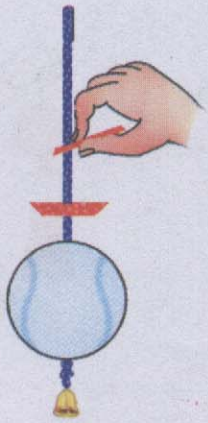

6)

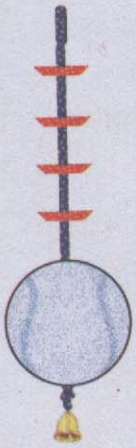

# चमकती गेंद ।

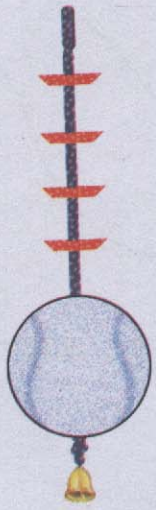

**तैयारी :** छोटी प्लास्टिक की गेंद लेकर उसपर चमकादार कागज चिपकाएँ।

गेंद की ऊपरी सतह तथा पेंदे में सूराख करके सैटीन की रिबन उनमें से गुजरने दें।

निचले भाग में घुँघरू बाँध दें। ऊपरी भाग में सैटिन की रिबन के टुकड़े चिपका दें।

सैटिन के रिबन को मोड़कर लटकाने के लिए फँदा बना लें।

**उपयोग :** यह बढ़िया प्रेरक समन्वयन में मदद करेगी।
दृष्टि प्रेरना में सहायक होगी ।

**रूपांतर :** प्लास्टिक की गेंद के बदले रबड की गेंद का भी उपयोग किया जा सकता है।

यह स्पृश्य प्रेरणा प्रोन्नत करने में उपयोगी होगी तथा जब बच्चा गेंद से प्रभावित होगा तो उसे पूरी तरह पकड़ने में भी मदद मिलेगी।

# मद - कफ

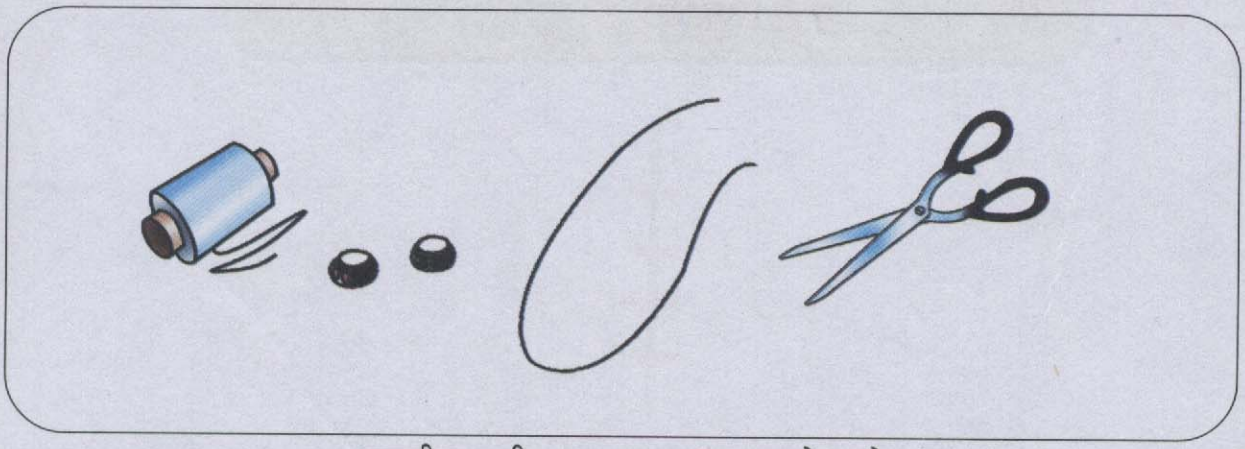

कच्ची सामग्री : धागा, चमकदार काले मनके।

1)

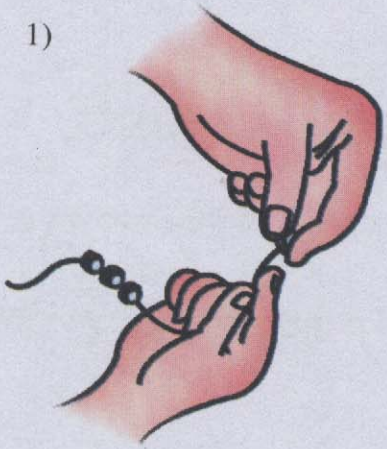

2)

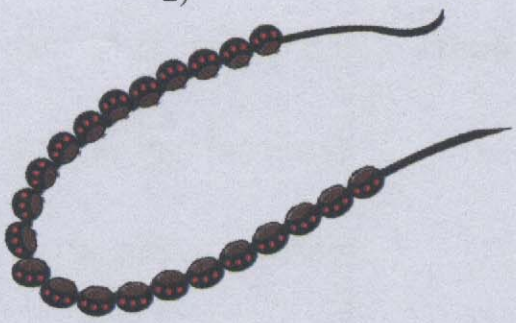

3)

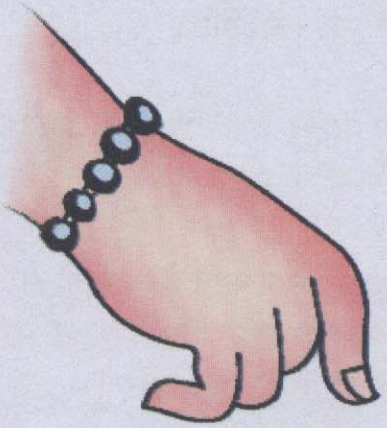

# कफ

**तैयारी :** बच्चे के लिए कफ बनाने के लिए काले मनकों को धागे में पिरोइए।

**उपयोग :** यह दृषि टिकाने में सहायक होता है।

**रुपांतर :** यदि कफ में छोटे-छोटे घुंघरु बाँध दे तो इससे श्रव्य प्रेरणा में सहायता मिलेगी।

# मद - श्याम-श्वेत चरख

कच्ची सामग्री - चरख, श्याम - श्वेत पेंट, ब्रश ।

1)

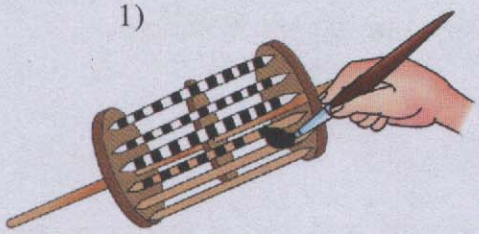

2)

3)

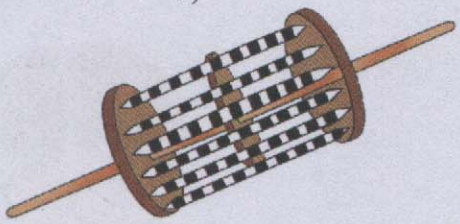

4)

# श्याम-श्वेत चरख

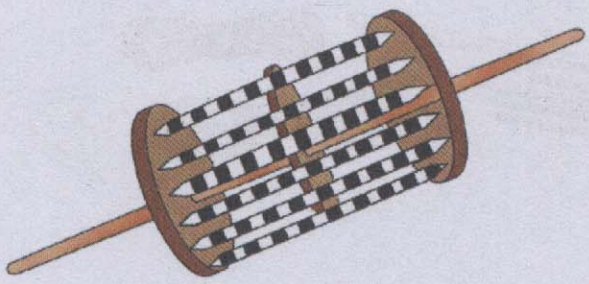

**तैयारी :** तैयार चरख लेकर उसके बंदों को एक के बाद एक काले व सफेद पेंट से रंगें।

**उपयोग :** जब चरख के दोनों बाजुओं को घुमाया जाता है तो बंद लगालार काले-सफेद दिखायी देते हैं। इससे दृष्टि प्रेरणा में मदद मिलती है।

जब बच्चा चरख को पकड़कर घुमाता है तो उसकी माँसपेशियों की अच्छी कसरत हो जाती हैं, जिससे उसके प्रेरक समन्वयन में बढ़िया सुधार होता है।

**रुपांतर :** पावडर के टिनों या बेलनाकार डिब्बों का उपयोग, चरख बनाने के लिए भी, किया जा सकता है।

बेलनाकार डिब्बों के दोनों सतहों में सूराख करके उनमें डंडी घुसेड़कर मजबूत पकड़ तैयार की जा सकती है।

चरख के एक-एक बंद को बारी-बारी से काले तथा सफेद रंग से पेंट भी किया जा सकता है।

# मद - ऊन का पंखा

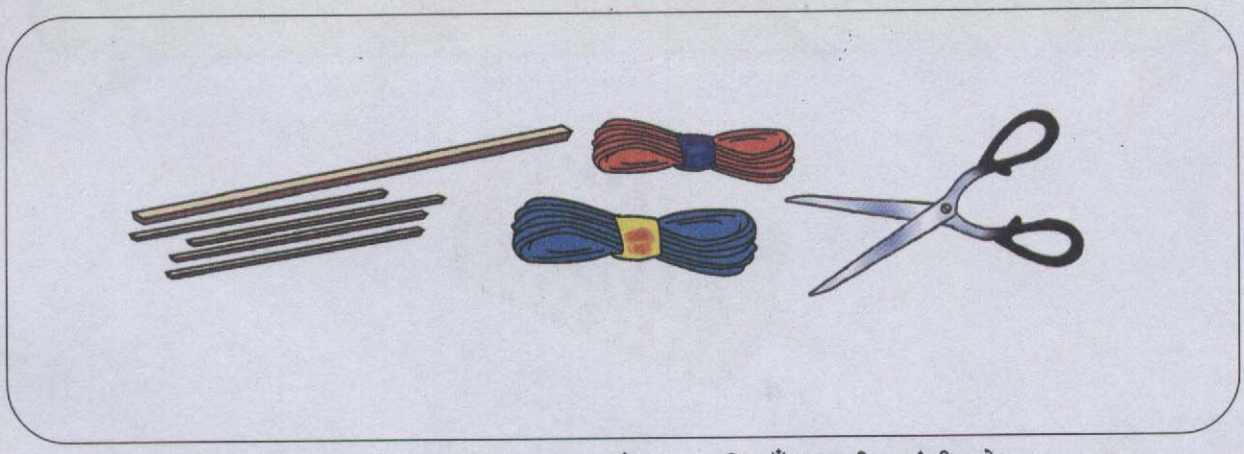

कच्ची सामग्री : ऊन (काला व सफेद), छड़ियाँ (1 फीट लंबी-दो) ।

1)

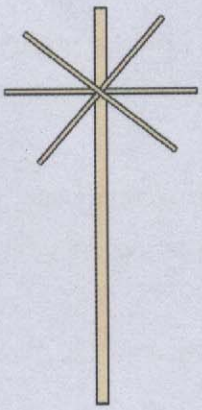

2)

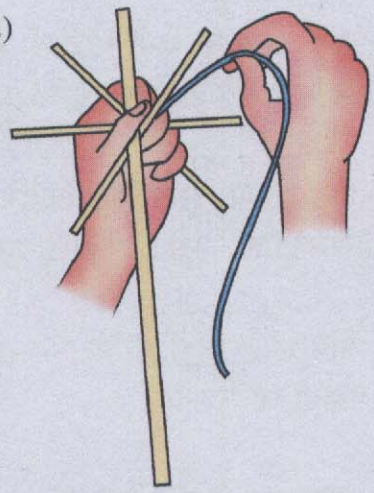

3)

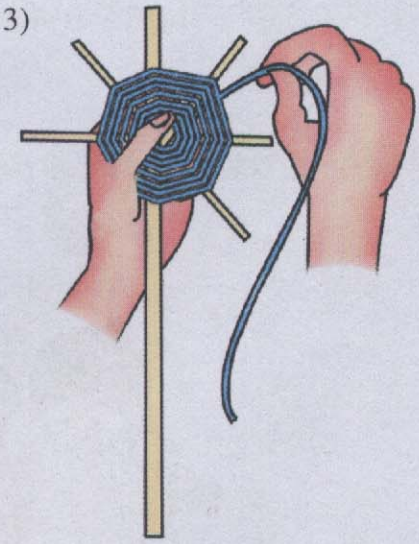

4)

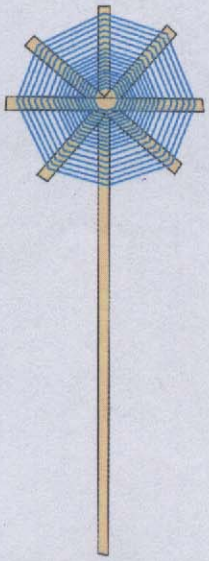

# ऊन का पंखा

**तैयारी :**

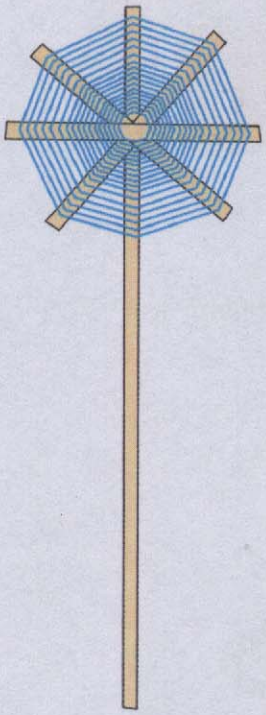

एक छड़ी लेकर उसके तीन समान लंबाई वाले टुकड़े बनाएँ तथा उन्हें आड़ा-तिरछा, इस प्रकार जमाएँ कि वे वृत्त की काड़ियों की तरह दिखाई दें और इस आकृति को बनाये रखने के लिए उन्हें बीच में से बाँध दें।

तब दूसरी छड़ी लेकर वृत्ताकार आकृति के साथ इस तरह बाँधें कि वह मूँठ जैसा बन जाए।

काले ऊन की तमाम छहों छड़ियों को जोड़ते हुए 1 सें.मी. ऊँचाई तक वुत्ताकार आकार में लपेटते जाएँ।

इसी तरह अब सफेद ऊन को एक सेंटीमीटर तक वृत्ताकार रूप में लपेटें।

इसी तरह दोनों रंगों के ऊन से छड़ों के अंतिम छोरों तक बारी-बारी से लपेटते जाएँ।

बचे हुए ऊन को मूठ या दस्ते पर बारी-बारी से लपेटें और अंत में मजबूत गाँठ लगाकर छोड़ दें।

**उपयोगः**

दृष्टि प्रेरणा में सहायक होगी।

**रूपांतर :**

भिन्न-भिन्न डिजाइन हासिल करने के लिए काले- सफेद ऊन को कई आकारों में लपेटा जा सकता है।

लकड़ी की छड़ियों के बदले कैलेंडरों में उपयोग की जाने वाले टीन की छडों का भी प्रयोग किया जा सकता है।

भिन्न-भिन्न चटकदार रंगों के ऊन का प्रयोग सामान्य प्रेरणा के लिए किया जा सकता है।

पंखे के दस्ते की मोटाई भी ऊन को लपेटकर कई प्रकार बनायी जा सकती है।

यह पंखा हाईपरटानिक बच्चे को पकड़ सिखाने के लिए भी उपयोगी होगा।

# मद - देशज पंखा

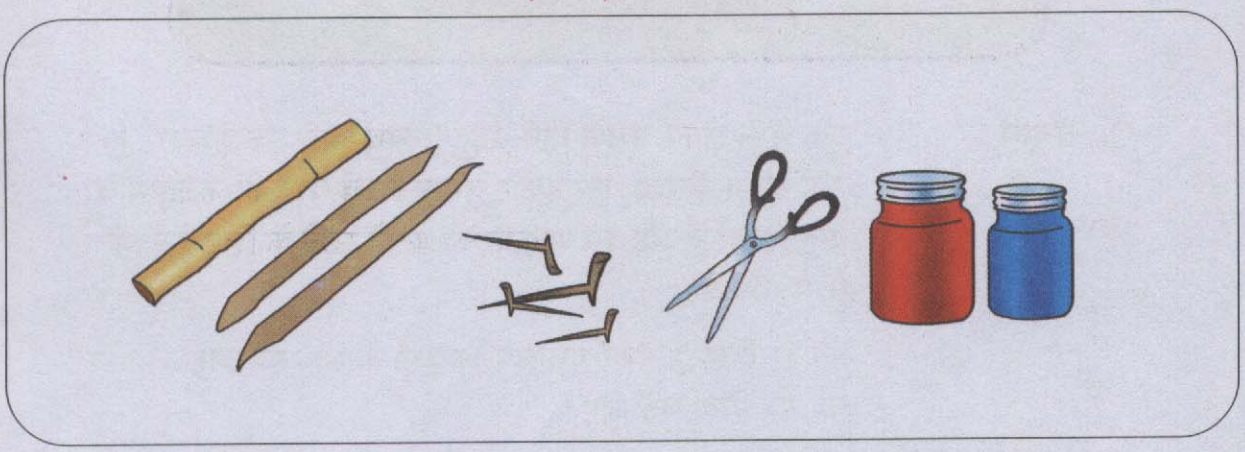

कच्ची सामग्री : ताड़ के पत्ते, किसी भी पेड़ का डंठल, कीले, कैंचियाँ, ब्रश, पेंट ।

1)

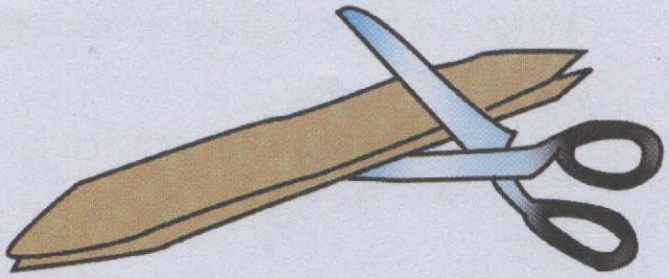

2)

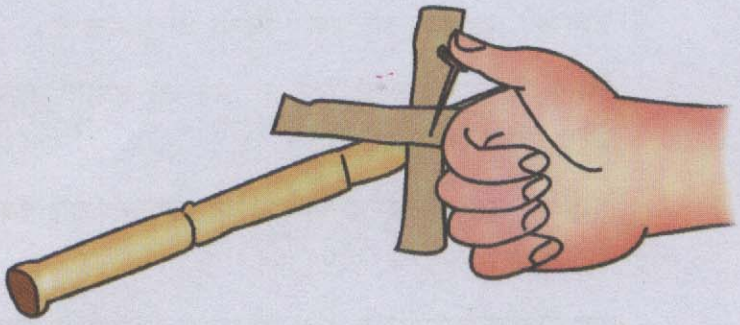

# देशज पंखा

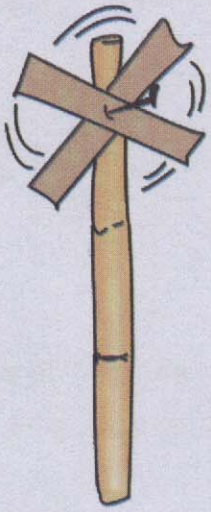

**तैयारी :** ताड़ के पत्तों को आयताकार आकृति में काट लें।

ताड़ के पत्तों को आड़ा तिरछा जमाकर काँटे की मदद से पत्तों के बीचों बीच छेद करते हुए डंठल के दूसरे छोर पर जड़ दें।

**उपयोग :** दृष्टि जमाने में सहायक। जब बच्चा पंखे पर फूँक मारता है तो उसके मुँह की माँसपेशियों को शक्ति मिलती है जो वाणी और भाषा को विकसित करने में उपयोगी होती है।

**रूपांतर :** ऐसे पंखे बनाने के लिए कड़े गत्ते की पट्टियों का भी प्रयोग किया जा सकता है।

# मद - नाँदनुमा खिलौना ।

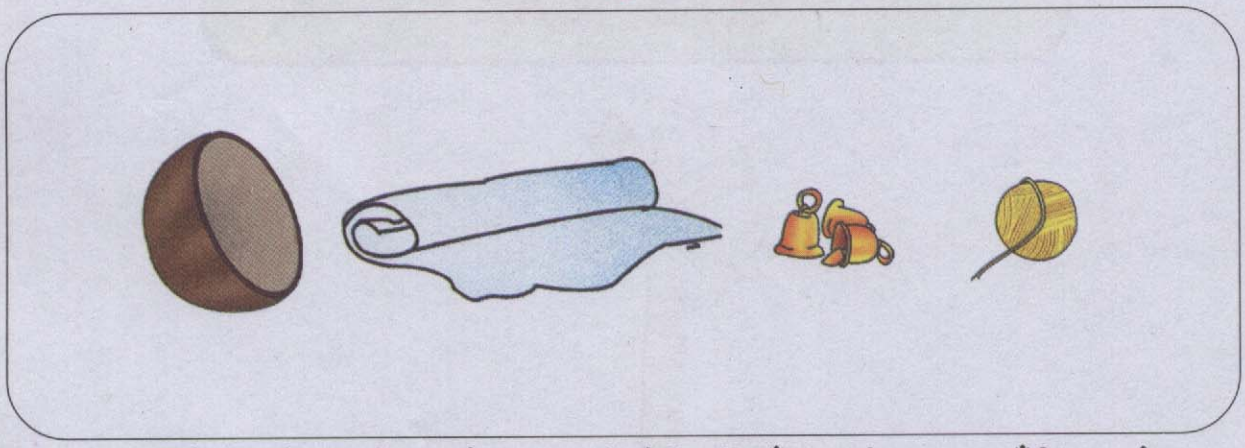

कच्ची सामग्री : नारियल खोल, ऊन की डोरी, घंटियाँ, चमकी कागज/ चाँदी का वर्क, धागा, इलास्टिक फीता, कीले, हथौड़ी।

1)

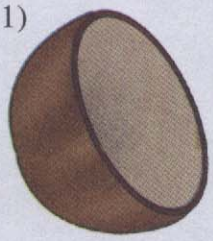

2)

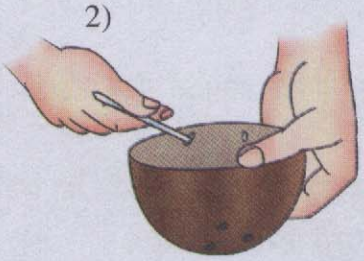

3)

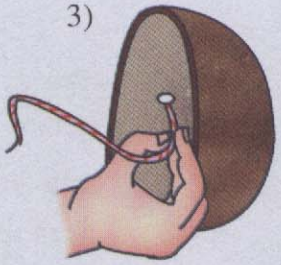

4)

5)

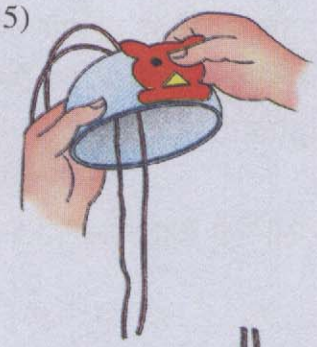

6)

7)

# नाँदनुमा खिलौना

**तैयारी :** नारियल खोल के कोर के अतराफ कीले और हथौड़ी से छेद करें तथा खोल के बीचों-बीच भी एक छेद बनाएँ ।

इन छेदों में से ऊन की डोरियाँ घुसाकर उनके खुले छोरों पर घंटियाँ बाँध दें।

चाँदी के वर्क से नारियल खोल को लपेट दें।

इलास्टिक के फीते को बीचों बीच बने छेद में घुसाकर लटकने जैसा बना लें। खोल के पास इसकी गाँठ बांधें तथा दूसरे छोर पर लटकाने के लिए फाँद बना लें।

**उपयोग :** दृष्टि प्रेरणा में सहायक होता है। सूक्ष्म प्रेरक समन्वयन में सहायक होता है। जब बच्चा खोल को पकड़कर खींचता है तो खोल घूमने लगता है। इससे संज्ञानात्मक प्रेरणा में भी सहायता मिलती है।

# मद - गत्ते की गुड़िया ।

कच्ची सामग्री : गत्ता, धागा, पेंट्स, ब्रश, कैंचियाँ।

1)

2)

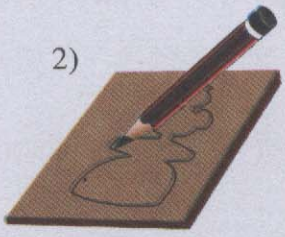

3)

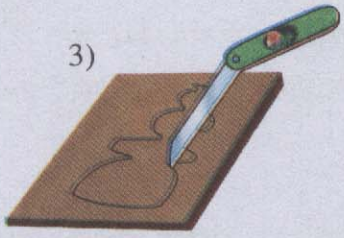

4)

5)

6)

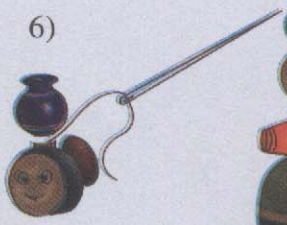

7)

8)

# गत्ते की गुड़िया

**तैयारी :** गत्ते को पेट, चेहरा और छाती का आकार देने तथा गुड़िया के स्कर्ट के अंग को बनाने विभिन्न प्रकार के टुकड़ों में काट लें ।

तब पेट, चेहरे, छाती के अंग तथा प्लास्टिक के शंकु को विभिन्न रंगों से रंग लें।

चेहरे पर आँखों, नाक, भौंहों तथा मुँह के निशान काले रंग के पेंट से बना लें।

डोरी लेकर प्रत्येक अंग के पीछे के भाग में सभी अंगों को जोड़ते हुए चिपका दें।

डोरी का कुछ अंश लटकने दें। गुड़िया को आवश्यकतानुसार लटकने देने के लिए डोरी का उपयोग किया जा सकता है।

**उपयोग :** चटकीले रंग दृष्टि प्रेरणा में सहायता करते हैं।

यह बढ़िया प्रेरक विकास में भी सहायता करती है।

**रूपांतर :** इसी प्रकार की गुड़ियाँ चिकनी मिट्टी या लोई से भी बनायी जा सकती है।

आकृतियों में परिवर्तन करते हुए विभिन्न प्रकार की गुड़ियाँ बनायी जा सकती हैं।

# मद - कागज की पवन चक्की ।

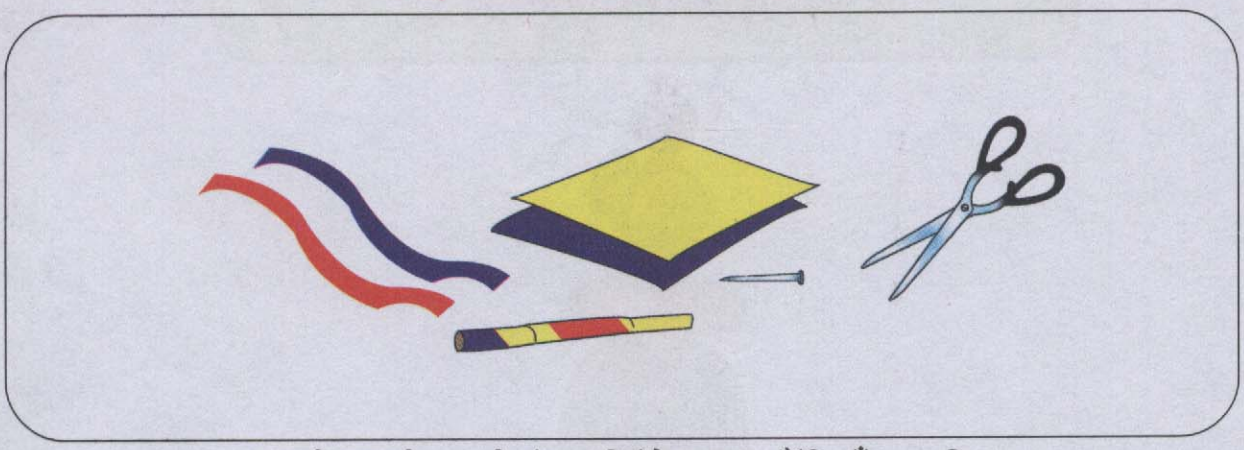

कच्ची सामग्री : छड़ी, रंग - बिरंगे कागज, कैंचियाँ, आलपिन ।

1)

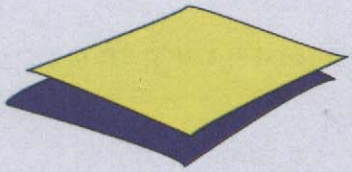

2)

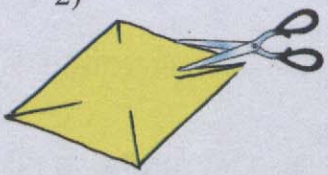

3)

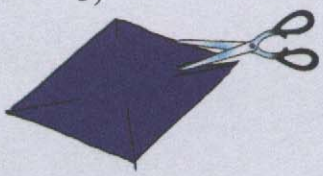

4)

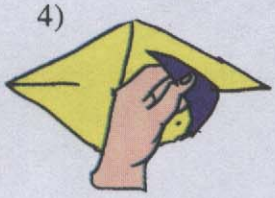

5)

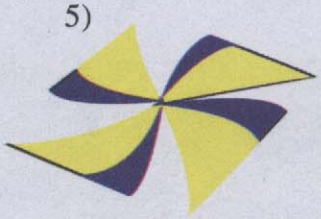

6)

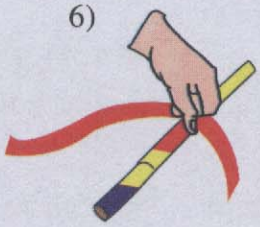

7)

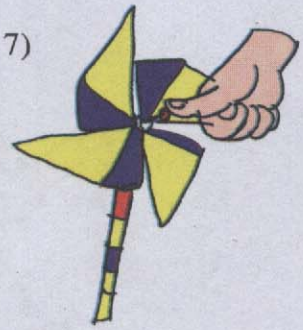

8)

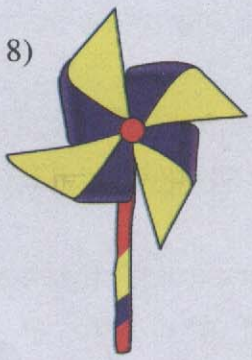

# कागज की पवन चक्की

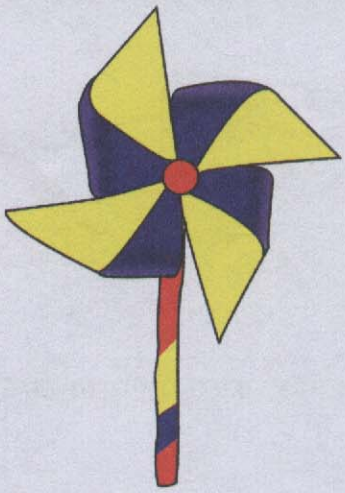

**तैयारी :** रूलर का उपयोग करते हुए दो भिन्न रंगों के कागज के टुकड़ों को दो समान आकार के चौकोर काट लें।

चौकोर कागजों पर दो विकर्ण रेखाएँ एक दूसरे को मध्य में काटती हुई खींच लें।

हर ओर से केवल 2/3 भाग काट लें।

कागज के चौकोरों को मिलाकर पकड़ रखें । हर कटाव की रेखा के पास चित्र में बताये गये अनुसार कागज को मोड़कर किनारों को नीचे की ओर पकड़ रखें।

कागज के सभी कोनों में से पिन को घुसाते हुए मनके के जरिये छड़ी के अंदर खोंप दें ।

**उपयोग :** दृष्टि जमाने में सहायता प्रदान करती है।

# मद - श्वेत-श्याम वृत्ताकार डार्ट बोर्ड ।

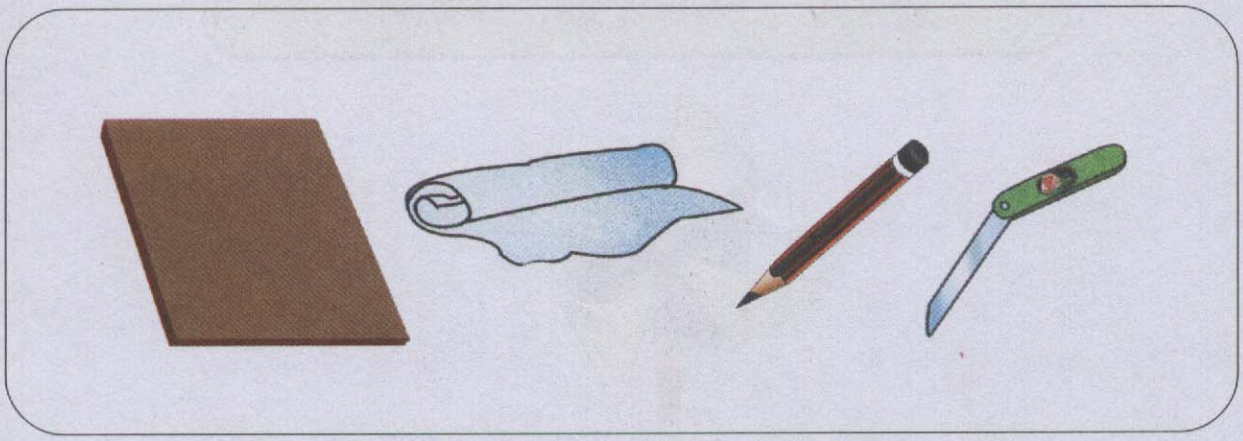

कच्ची सामग्री - सफेद कागज, काला पेंट, गत्ता, कैंची, पेन्सिल, सरेस ।

1)

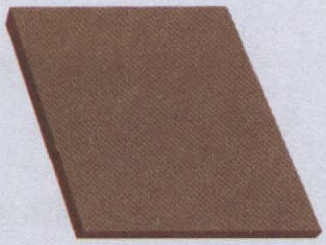

2)

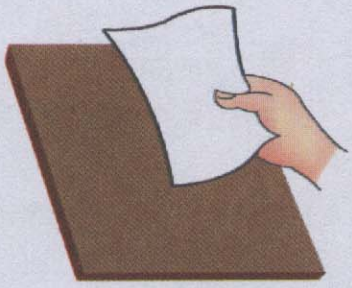

3)

4)

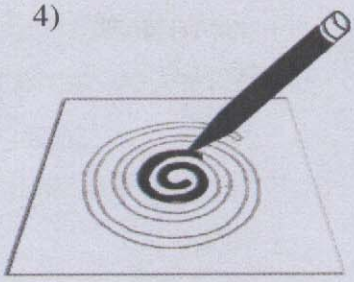

5)

# श्वेत-श्याम वृत्ताकार डार्ट बोर्ड

**तैयारी :** कागज का चौकोर टुकड़ा काट लें और उसपर संकेंद्रित वृत्त खींच लें ।

विकल्पी वृत्तों को काले रंग से पेंट कर लें ।

पेंट किये हुए कागज को वृत्ताकार गत्ते पर चढ़ा दें ।

**उपयोग :** दृष्टि प्रेरणा में सहायक होता है ।

आकृति और आकार की संकल्पनाओं को सीखने में सहायता करता है तथा संज्ञानात्मक विकास के लिए उपयोगी होता है।

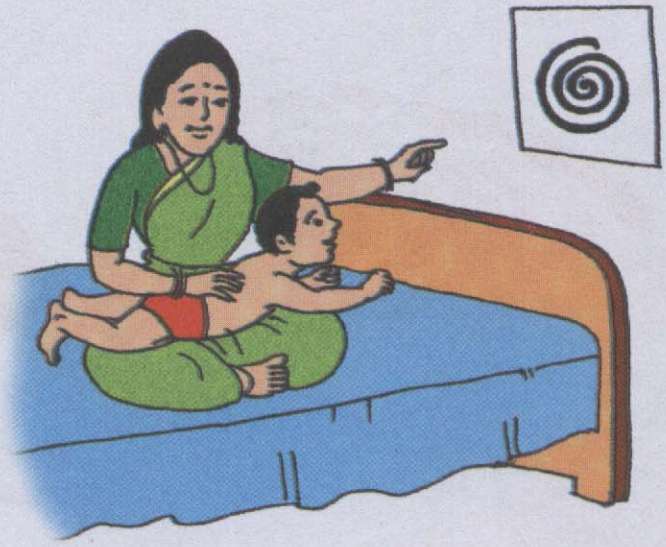

# मद - गत्ते के भित्ति चित्र

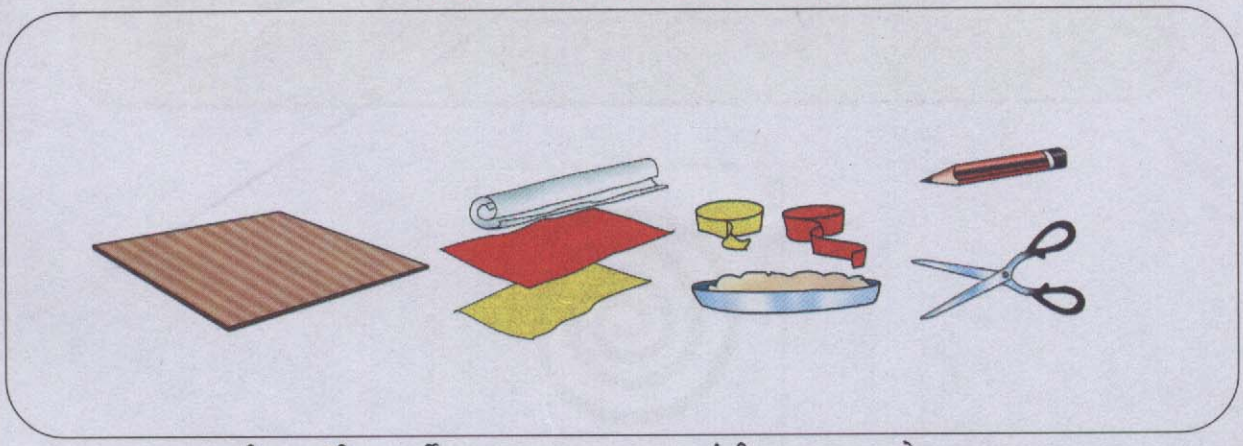

कच्ची सामग्री - झुर्रीदार गत्ता, सादा गत्ता, रंगीन कागज, सफेद कागज, चिपकाने वाला फीता, सरेस, पेंसिल, कैंचियाँ।

1)

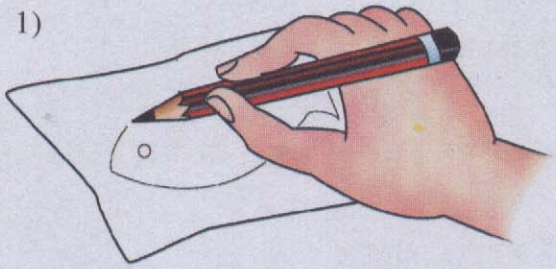

2)

3)

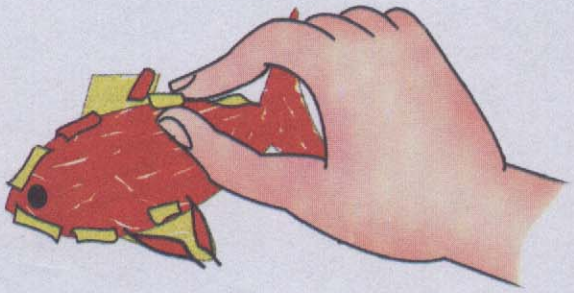

# गत्ते के भित्ति चित्र ।

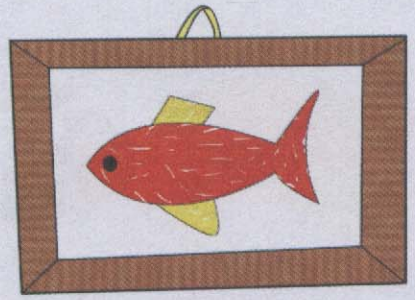

**तैयारी :** आयताकार गत्ते की तख्ती के कोरों पर चिपकाने के लिए पर्याप्त मात्रा में झुर्रीदार गत्ते की पट्टियाँ काट लें ।

चित्र में बताये गये अनुसार पट्टियों को चिपका दें ।

पट्टियों के कोनों को तिरछे काटकर बाजू रख दें । आयताकार गत्ते की तख्ती पर सफेद कागज चिपका दें ।

गत्ते की तख्ती पर मछली की रेखाचित्र खींचें।

नीले, लाल कागजों के टुकड़े काटलें। चित्र में बताये गये अनुसार उन्हें चिपका दें ।

कोर बनाने के लिए झुर्रीदार गत्ते के टुकड़ों को जमा लें । बोर्ड लटकाने के लिए उसके पीछे की ओर एक फाँद बना लें ।

**उपयोग :** दृष्टि जमाने में सहायक होते हैं।

# मद - कागज की प्लेट का मुखौटा ।

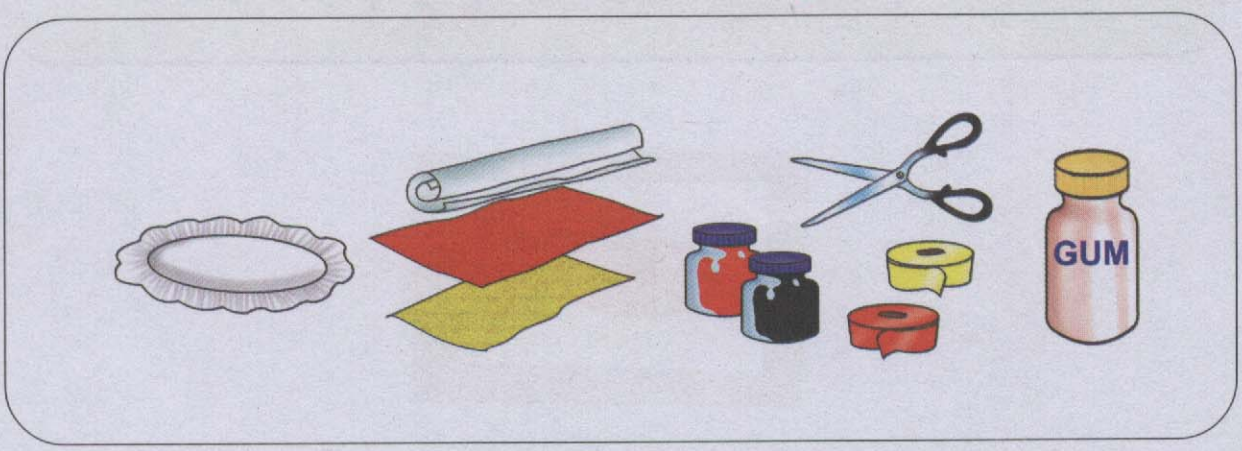


कच्ची सामग्री - कागज की प्लेट, क्रेप, रंगीन कागज, कैंचियाँ, सरेस, रूलर, पेन्सिल, इलास्टिक डोरी, पेंट और ब्रश ।

1)

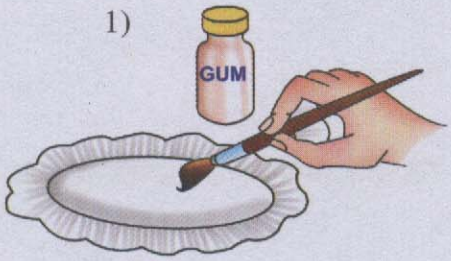


2)

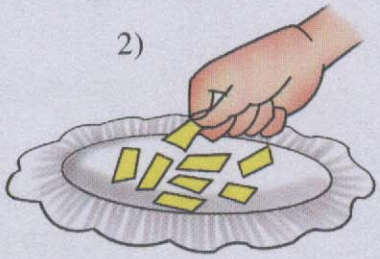

3)

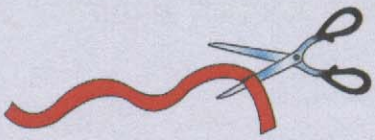

4)

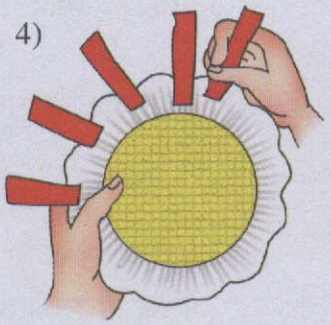

5)

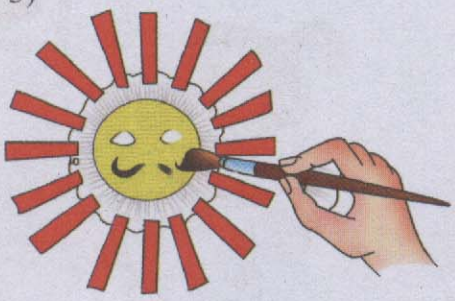

6)

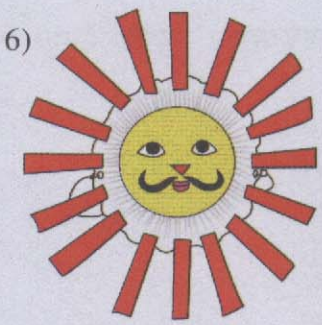

# कागज की प्लेट का मुखौटा

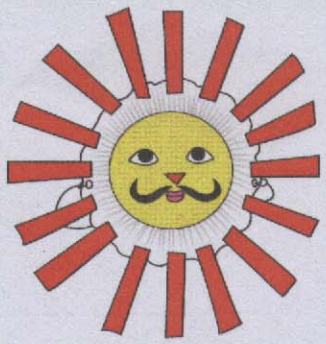

**तैयारी :** कागज की प्लेट लेकर उसके अंदर वृत्त खींचे ।

भीतरी वृत्त पर चेहरा बनाकर उसे पेंट कर दें । आँखों , नाक और मुँह के अंगों पर पेंट लगा दें।

रंगीन कागज की समान आकार की पट्टियाँ काट लें और उन्हें चित्र में दर्शाये गये अनुसार बाहरी वृत्त पर किरणों की तरह चिपका दें ।

कागज की प्लेट के दोनों किनारों पर बारीक छेद बनाकर उसमें से धागा निकालें।

धागे के दोनों छोरों को प्लेट के दोनों किनारे पर बनाये गये छेदों में बाँध दें ।

**उपयोग :** नाटकीकरण में सहायता देता है जो भाषा और संज्ञानात्मक विकास के लिए उपयोगी होता है ।
दृष्टि प्रेरणा प्रदान करने में चटकीले रंग सहायक होंगे ।

**रूपांतर :** कागजी सामग्री, रद्दी कागज और गत्ते से भी मुखौटे बनाये जा सकते हैं।

# मद - आईने का फ्रेम ।

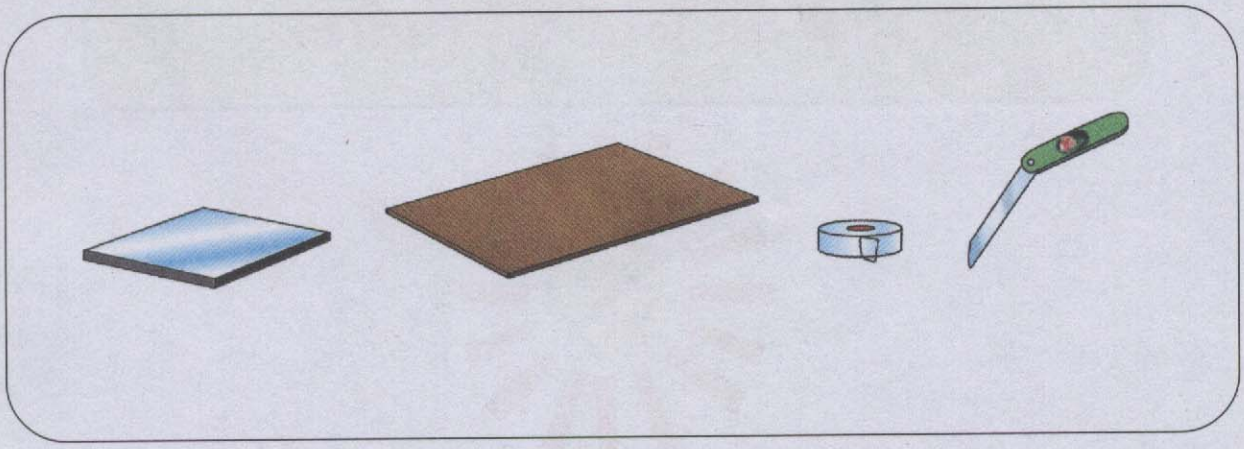

कच्ची सामग्री - फ्रेम में अच्छी तरह से जकड़ा तैयार आईना ।

1)

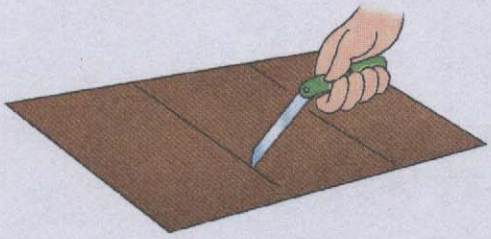

2)

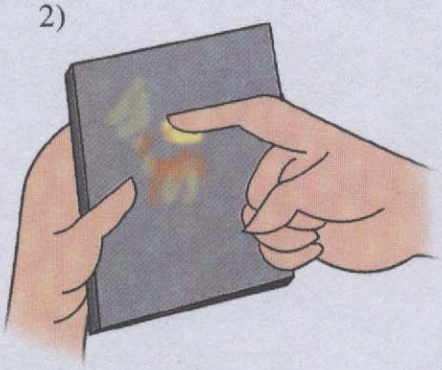

3)

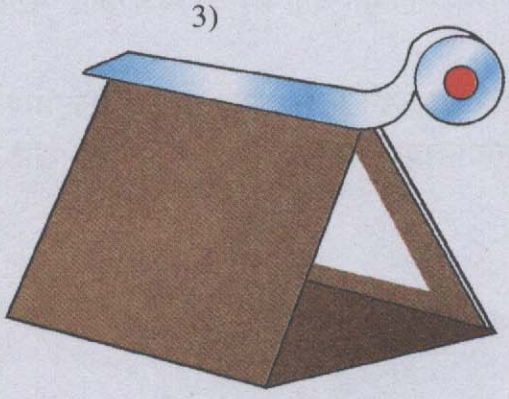

# आईने का फ्रेम ।

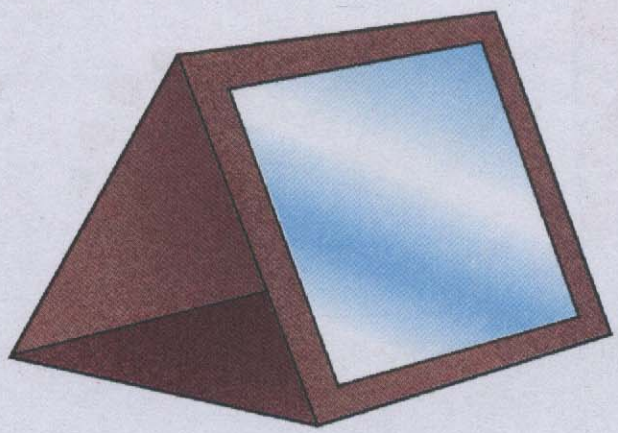

**तैयारी :** गत्ते पर आईना चिपकाकर उसे इतनी ऊँचाई पर रखें कि बच्चा अपने आप उसमें देख सके ।

**उपयोग :** नकल करने में मदद करता है।

अपने आपको पहचानने में बच्चे की मदद करता है।

जब बच्चे को आईने में देखते हुए बातचीत करने प्रोत्साहित किया जाता है तो इससे उसकी भाषा के विकास की मदद मिलती है।

जब प्रौढ़ व्यक्ति आईने के सामने खड़ा होकर बातचीत करता है, तो बच्चा उसके होठों के संचलन को ध्यान से देख सकता है ।

**रूपांतर :** बच्चों को अपनी प्रतिच्छाया देखने के लिए तालाब पर भी ले जाया जा सकता है।

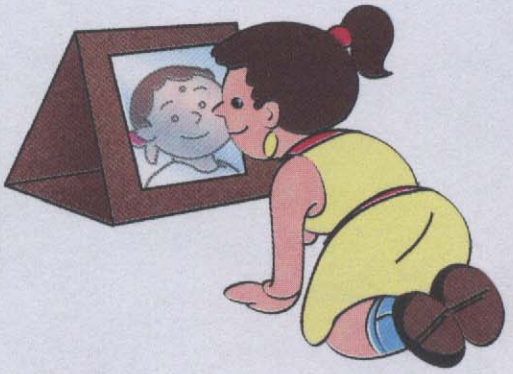

# मद - पावडर के डिब्बे का खड़खड़ा ।

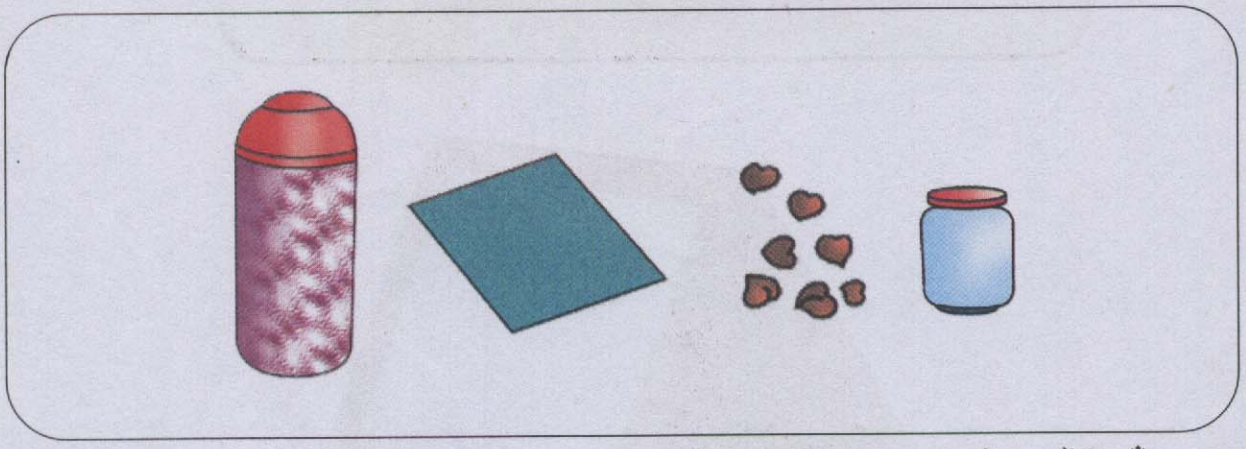

कच्ची सामग्री - खाली पावडर का डिब्बा, अनाज के दाने, रंगीन कागज, सरेस, कैंचियाँ ।

1)

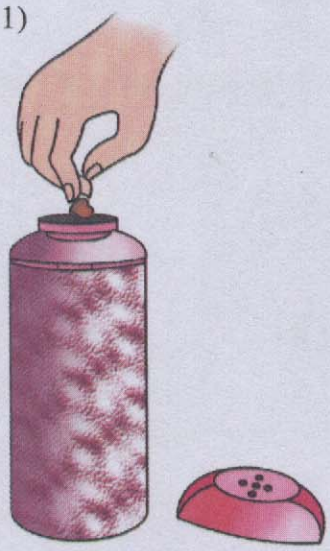

2)

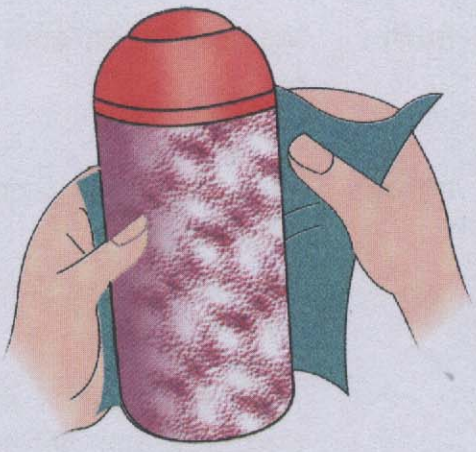

3)

# पावडर के डिब्बे का खड़खड़ा

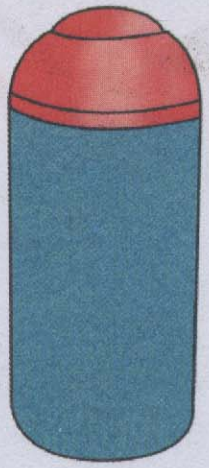

**तैयारी :** पावडर के डिब्बे में अनाज के कुछ दाने /बीज/कंकड़ डालकर, डिब्बे पर रंगीन कागज चिपका दें ।

**उपयोग :** यह बढ़िया प्रेरक समन्वयन में सहायता करता है ।

खड़खड़े पर लगे रंगीन कागज दृष्टि प्रेरणा के लिए उपयोगी होंगे ।

यह श्रव्य प्रेरणा प्रदान करने में सहायता करता है ।

**रूपांतर :** खड़खड़े बनाने के लिए किसी भी प्रकार के फेंके गये टिन या डिब्बे उपयोग में लाये जा सकते हैं।

# मद- कपड़े का खिलौना ।

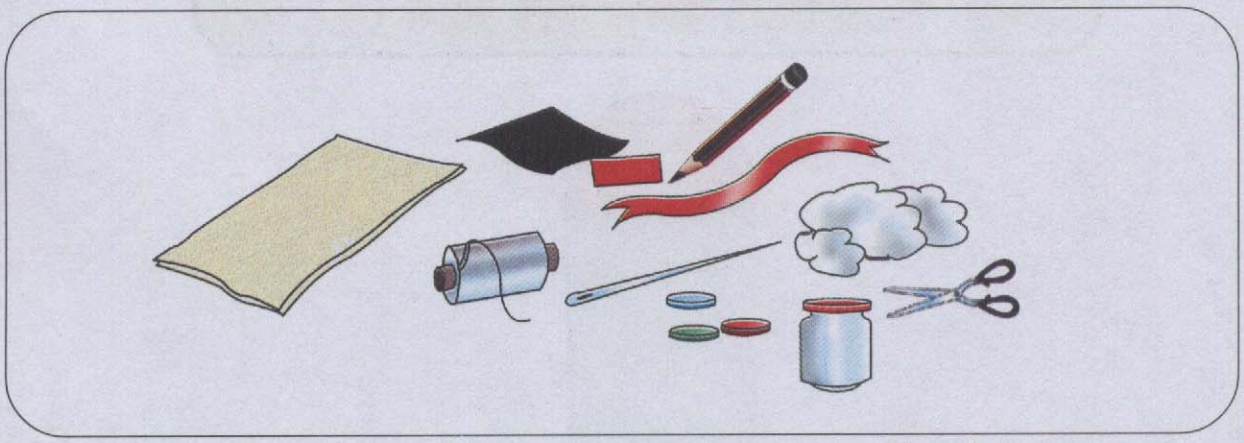

कच्ची सामग्री - पुराना कपड़ा, अलग-अलग रंगों के बटन, सैटिन के रिबन, सुई, धागा, कैंचियाँ, पुराने चीथड़े/ रुई (भरने के लिए) ।

1)

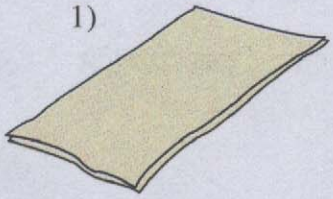

2)

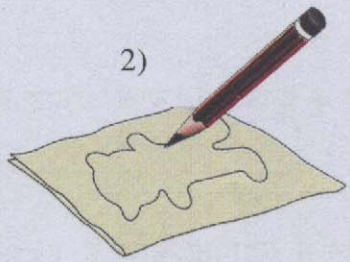

3)

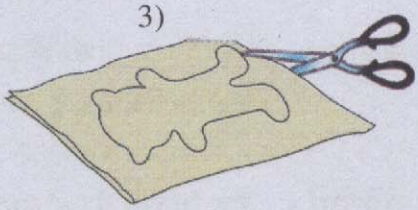

4)

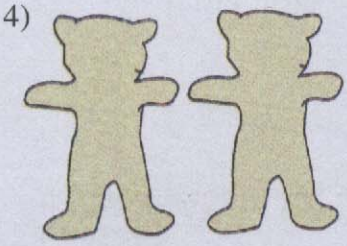

5)

6)

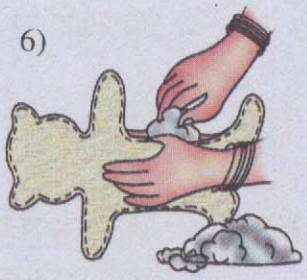

7)

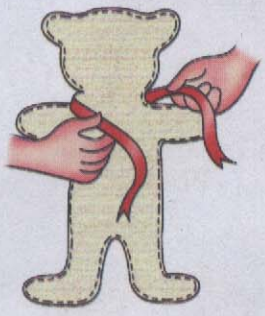

8)

9)

10)

# कपड़े का खिलौना

**तैयारी :** कपड़े पर गुड़िया का खाका खींच लें।

इसी आकार के दो टुकड़े काट लें ।

दोनों टुकड़ों को एक-दूसरे पर रखकर इस प्रकार सी लें कि उनके बीच 2 इंचों की खाली जगह बची रहे ।

इस प्रकार सी गयी सामग्री को अंदर-बाहर उलट लें और उसमें रुई/चीथड़े भर दें ।

चित्र में बताये गये अनुसार बटनों को सी दें तथा सैटिन के रिबन को गले के अतराफ लपेट दें।

आँखों और नाक बनाने के लिए कपड़े के छोटे टुकड़े जोड़ दें ।

**उपयोग :** भाषा विकास में सहायता करता है ।

भावात्मक विकास में सहायता करता है ।

दृष्टि प्रेरणा में सहायता करता है ।

संज्ञानात्मक विकास के लिए जो उपयोगी है उस खेल को खोजने में सहायता करता है।

नकल करने में सहायता करता है ।

**रूपांतर :** उँगली के बदले छड़ी का भी उपयोग किया जा सकता है और उसे छड़ी के खिलौने के रूप में भी उपयोग किया जा सकता है।

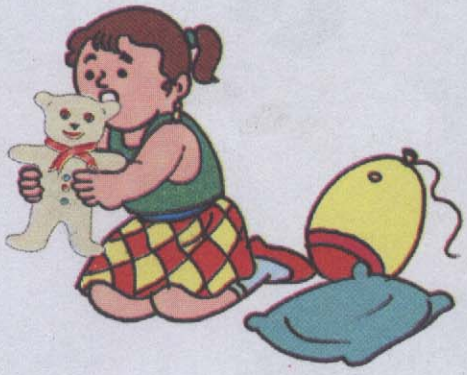

# मद - अंगुल खिलौना ।

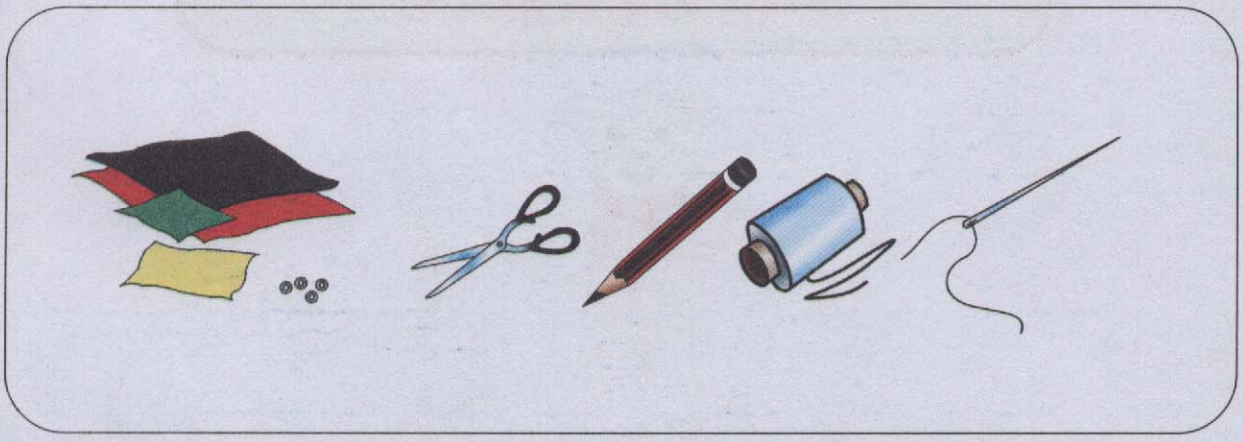

कच्ची सामग्री - कपड़ा, कैंचियाँ, सुई, धागा, पेंसिल, सरेस ।

1)

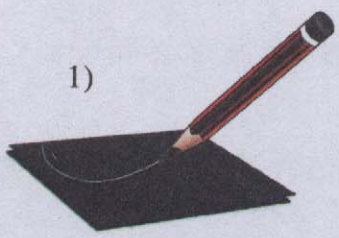

2)

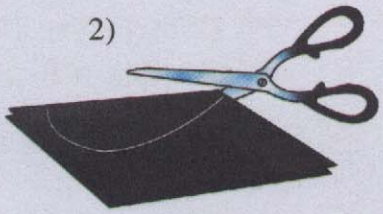

3)

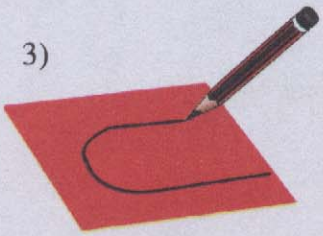

4)

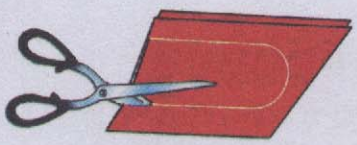

5)

6)

7)

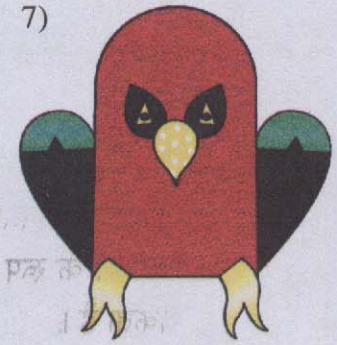

# अंगुल खिलौना

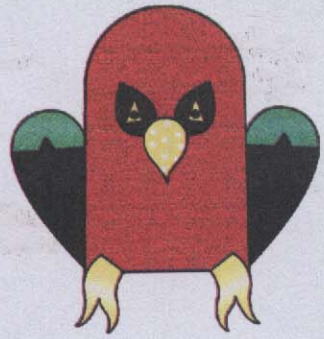

**तैयारी :** कपड़े का छोटा टुकड़ा लें और उसे आधा मोड़ दें ।

कपड़े पर पक्षी का चित्र बनाएँ ।

बनाये गये चित्र को काट लें ।

रेखाचित्र को सी लें और ऐसा प्रावधान करें कि उसमें उँगली डाली जा सके ।

तब परों, आँखों , नाक, पैर जैसे अन्य अंगों को काट लें और उन्हें सी लें ।

**उपयोग :** भाषा विकास में सहायता करता है।

संज्ञानात्मक और भावात्मक विकास में सहायता करता है ।

दृष्टि प्रेरणा में सहायता प्रदान करता है ।

**रूपांतर :** उँगली के बदले छड़ी का भी उपयोग किया जा सकता है तथा उसे छड़ी की कठपुतली या खिलौना कहा जा सकता है ।

इस प्रकार पक्षियों और पशुओं के खिलौने भी आसानी से बनाये जा सकते हैं ।

# मद - गत्ते का खड़खड़ा ।

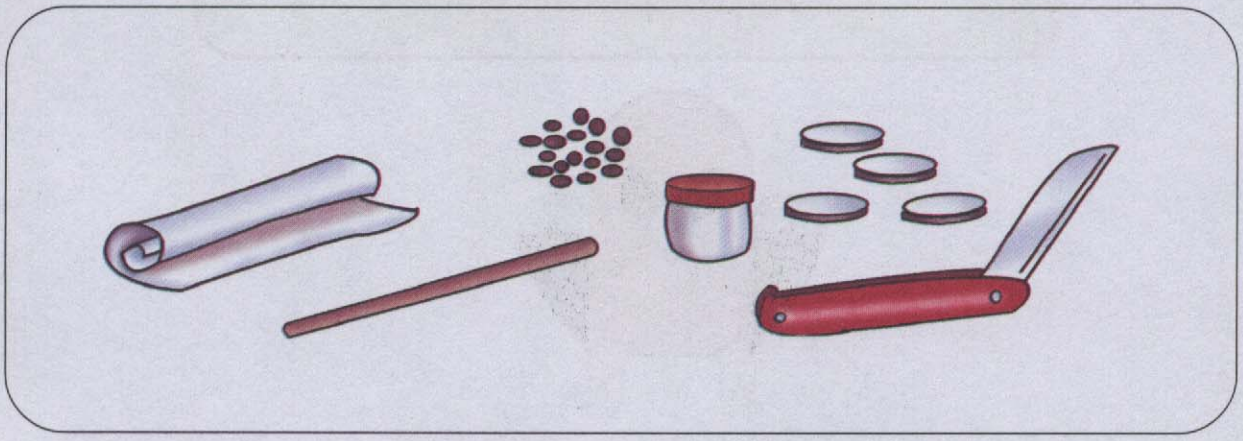

कच्ची सामग्री - गत्ता, रंगीन कागज, छड़ी, दालें/कंकड़, कैंचियाँ, सरेस।

1)

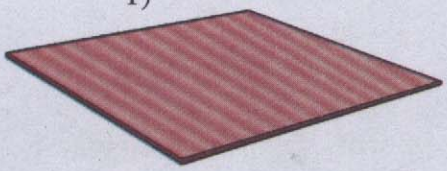

2)

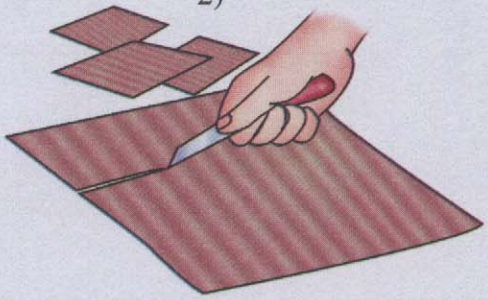

3)

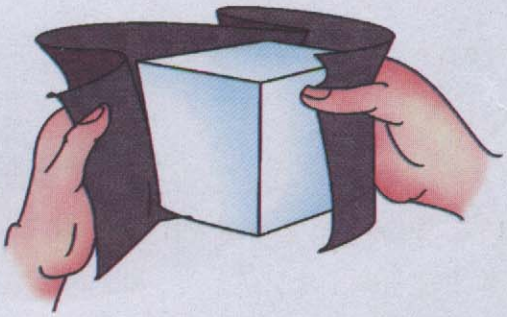

4)

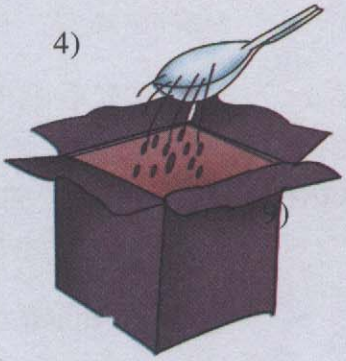

5)

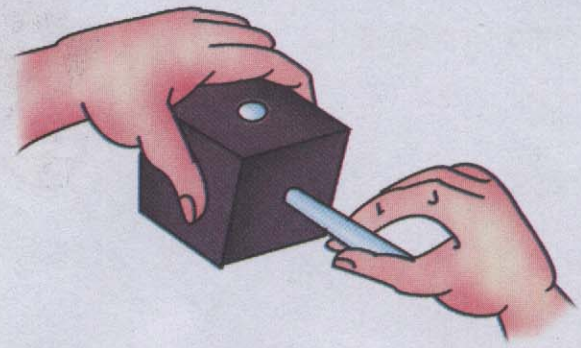

# गत्ते का खड़खड़ा

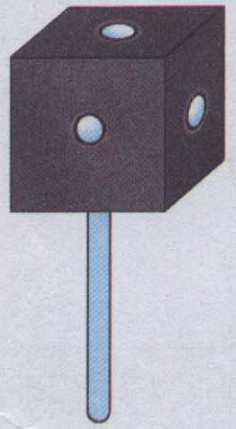

**तैयारी :** गत्ते को 6 समान आकार के चौकोरों में काट लें ।

इन चौकोर टुकड़ों के चारों तरफ सरेस लगाकर घनाकार बना लें ।

इस घन में दालें/ कंकड़ डाल दें ।

चौकोर गत्ते के टुकड़े के बचे हुए बाजू में छड़ी की गोलाई के अनुपात में सूराख बना लें ।

गत्ते के टुकड़े को छड़ी चिपका दें और इसे पूरा करने के लिए उसे घन से जोड़ दें ।

घन को रंगीन या काले-सफेद कागज की पट्टियाँ चिपकाकर आवरित कर दें ।

**उपयोग :** यह श्रव्य प्रेरणा में उपयोगी होगा ।

खड़खड़ा बढ़िया प्रेरक समन्वयन में उपयोगी होता है।

खड़खड़े के रंग दृष्टि प्रेरणा में सहायता प्रदान करेंगे।

# मद- नारियल खोल का खड़खड़ा ।

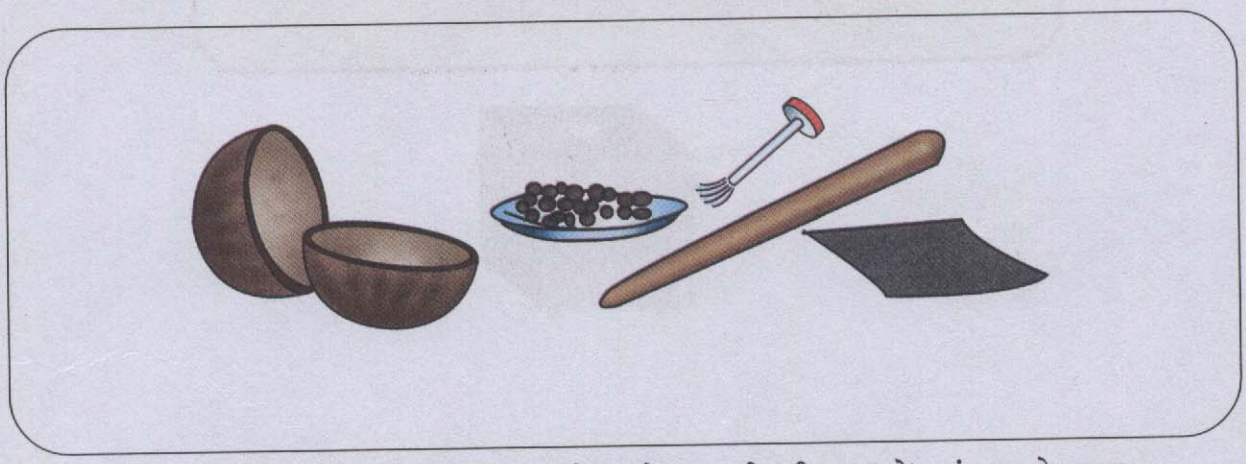

कच्ची सामग्री - नारियल खोल ( 2 आधे), सरेस, छड़ी, बीज (सूखे), कंकड, रेगमाल ।

1)

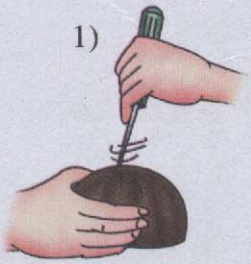

2)

3)

4)

5)

6)

7)

8)

# नारियल खोल का खड़खड़ा

**तैयारी :** नारियल खोल के एक आधे के बीच में छेद करें और दस्ते के लिए छड़ी घुसाएँ।

उसी आधे नारियल खोल में कुछ सूखे बीज और कंकड डाल दें ।

दोनों आधे खोलों को सरेस से जोड़ कर गेंद की शकल बना लें ।

खड़खड़ा तैयार हो जाने के बाद रेगमाल के उपयोग से नारियल खोल की सतह चिकनी बना लें ।

**उपयोग :** बढ़िया प्रेरक समन्वयन में सहायता प्रदान करता है–जैसे : पकड़ना, पहुँचना ।

दृष्टि प्रेरणा में सहायता करता है ।

श्रव्य प्रेरणा में उपयोगी होता है ।

नकल करने तथा गले से ध्वनि निकालने में सहायता करता है ।

**रूपांतर :** एक हाथ से दूसरे हाथ में स्थानांरित करने के द्वारा खोजी खेल की सुविधा प्रदान करता है ।

चमकीले रंगों से पेंट करने पर दृष्टि प्रेरणा प्रदान करता है ।

# मद - इकतारा

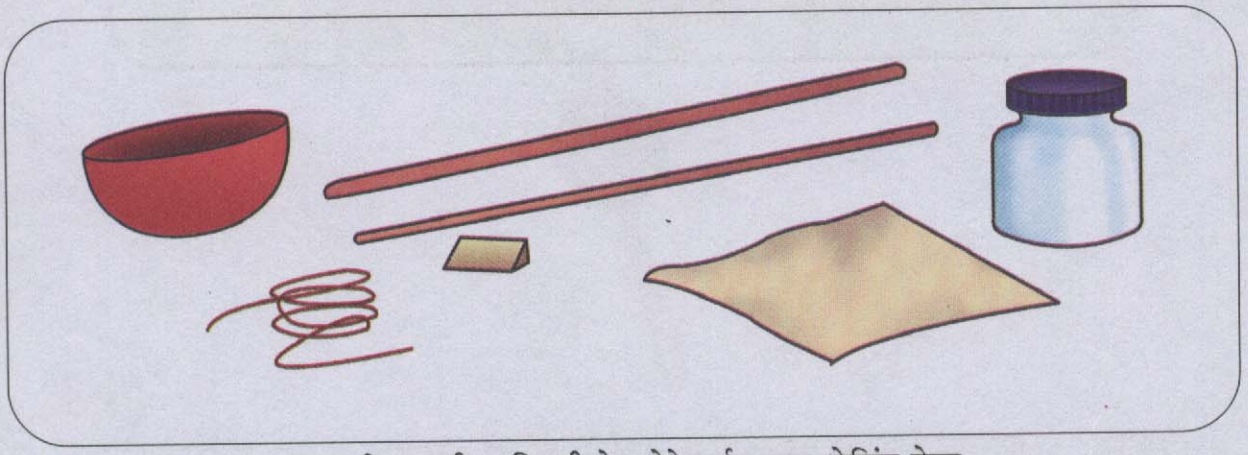

कच्ची सामग्री - मिट्टी के छोटे बर्तन बटर/ट्रेसिंग पेपर,
लकड़ी का छोटा टुकड़ा, छड़ी के दो टुकड़े, कैंचियाँ, सरेस

1)

2)

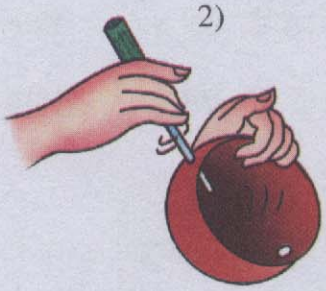

3)

4)

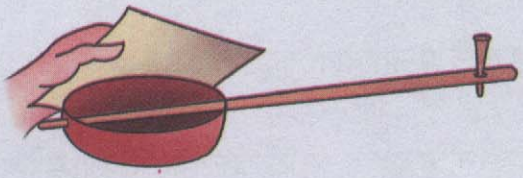

5)

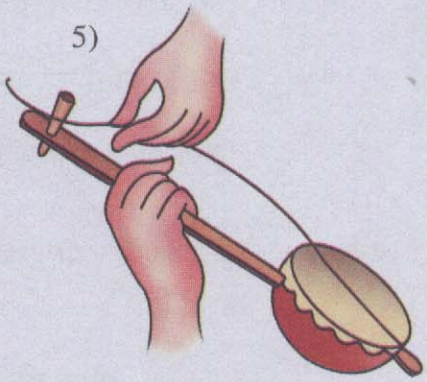

6)

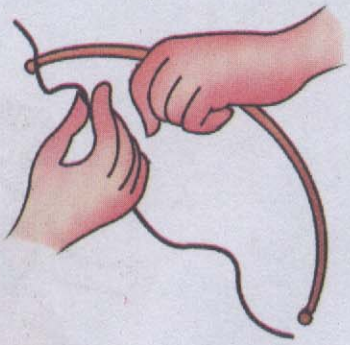

7)

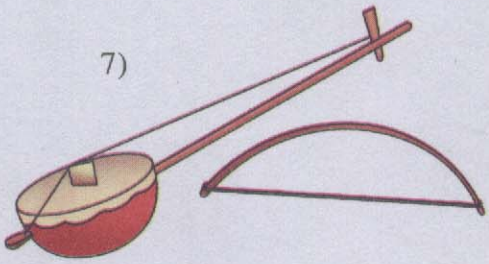

# इकतारा

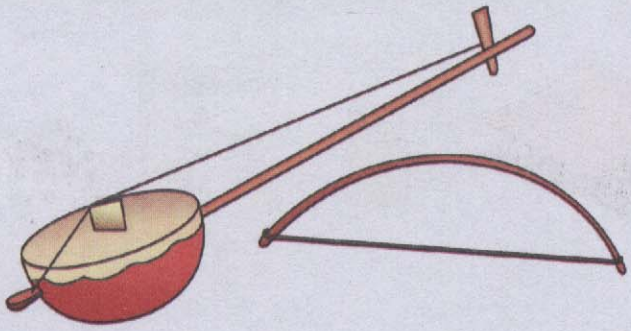

**तैयारी :** मिट्टी की छोटी कटोरी में एक छेद करें और उसी के समानांतर दूसरी ओर दूसरा छेद करें ।

दोनों छेदों में से छड़ी गुजरने दें और इस छड़ी के समतल व अंतिम छोर पर समकोण में छोटी लकड़ी लगाएँ।

मिट्टी की कटोरी को पतले कागज (बटर/ट्रेसिंग पेपर) से आवरित करें ।

छड़ी की लंबाई के बराबर मिट्टी की कटोरी के अंत तक ताँबे का तार बाँध दें ) ।

तांबे के तार को ऊपर उठाने के लिए मिट्टी के बर्तन के ऊपर लगे कागज पर पत्ती नुमा लकड़ी का छोटा टुकड़ा घुसाएँ।

**उपयोग :** बढ़िया प्रेरक विकास में मदद करता है।
श्रव्य प्रेरणा में सहायता देता है ।
सामाजिक और भावात्मक विकास में सहायता प्रदान करता है ।
संज्ञानात्मक प्रेरणा में उपयोगी है।

# मद - मुखर पेटी ।

कच्ची सामग्री – बेकार पुराना टीन का डिब्बा,सरेस, रंगीन कागज, मखमली कागज, बीज/कंकड़/मनके, कैंचियाँ ।

1)

2)

3)

4)

5)

# शोर पेटी

**तैयारी :** टीन के डिब्बे के आधे माप तक रंगीन कागज काटें।

टीन के डिब्बे के शेष आधे भाग पर लगाने मखमली कागज काट लें ।

डिब्बे में बीज /कंकड़/मनके डालकर ढक्कन लगा दें ।

डिब्बे के आधे भाग तथा डंडे पर सरेस से रंगीन कागज चढ़ा दें और शेष आधे भाग पर मखमली कागज ।

**उपयोग :** श्रव्य प्रेरणा में सहायक ।
स्पृश्य प्रेरणा में सहायक ।
दृष्टि प्रेरणा में सहायक ।

**रूपांतर :** स्पृश्य प्रेरणा में रूपांतर प्रदान करने के लिए बेकार पड़े पावडर के डिब्बों का भी उपयोग किया जा सकता है । विभिन्न प्रकार की सामग्रियाँ जैसे कपड़े और रेगमाल का उपयोग किया जा सकता है।

# मद - लकड़ी का खड़खड़ा ।

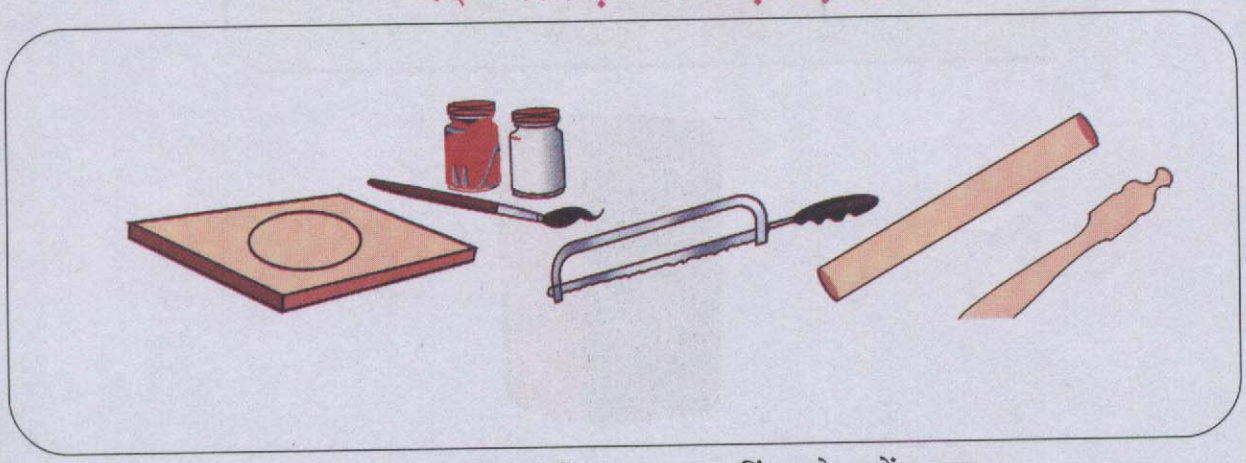

कच्ची सामग्री - लकड़ी का तख्ता, कटिंग ब्लेड, पेंट, ब्रश ।

1)

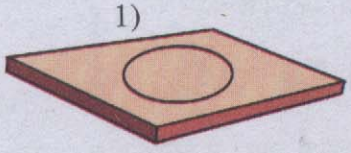

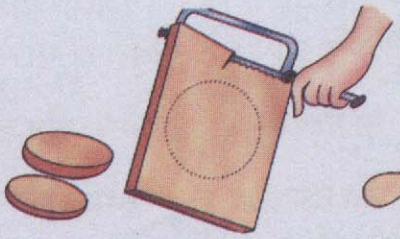

2)

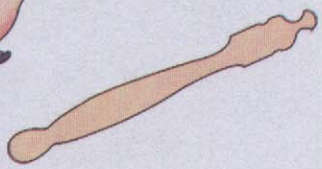

3)

4)

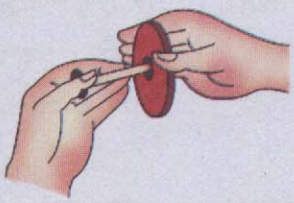

5)

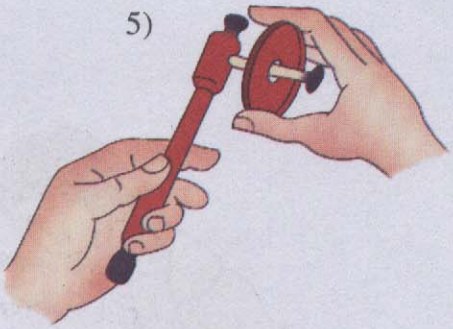

6)

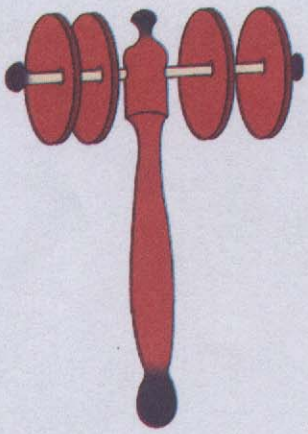

# लकड़ी का खड़खड़ा

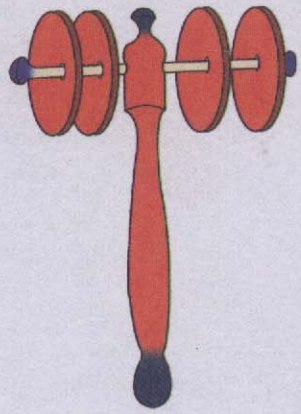

**तैयारी :** लकड़ी का तख्ता लेकर चित्र में बताये गये अनुसार विभिन्न अंगों को काट लें ।

इन टुकडों की सतहों को रेगमाल से चिकना करें ।

चित्र में दर्शाये गये अनुसार टुकड़ों को जोड़ लें ।

समायोजित किये गये खड़खड़े पर रंग पोतें ।

**उपयोग :** श्रवण प्रेरणा के लिए उपयोगी ।

आँख-हाथ समन्वयन में सहायक होते हैं ।

दृष्टि प्रेरणा में सहायक होते हैं ।

**रूपांतर :** लकड़ी के बजाय प्लास्टिक का इस्तेमाल खड़खड़ा बनाने में किया जा सकता है।

दृष्टि प्रेरणा प्रदान करने में चटकीले रंग मदद करेंगे ।

# मद - दस्ताना खिलौना ।

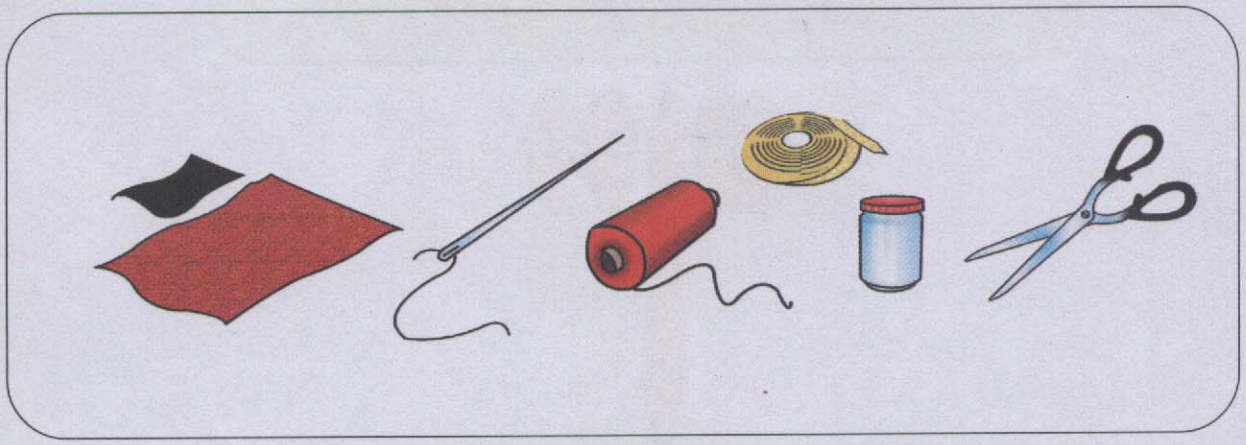

कच्ची सामग्री - नरम कपड़ा (2 टुकड़े 6½ इंच x 6½ इंच ),सुई, धागा, कैंची, आँखों, नाक और मुँह के लिए कपड़े का टुकड़ा, सरेस ।

1)

2)

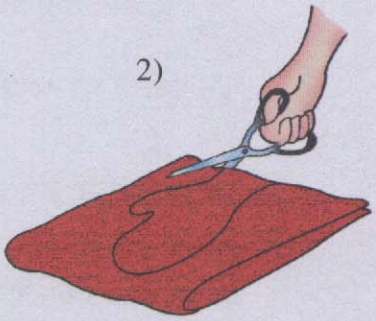

3)

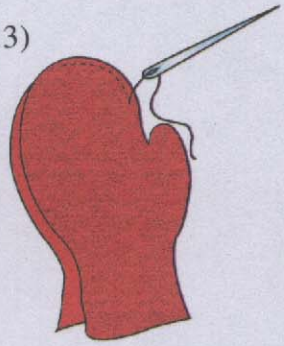

4)

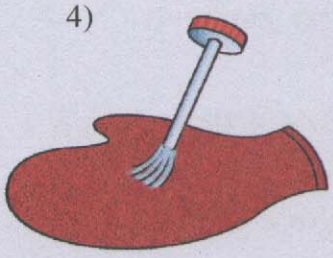

5)

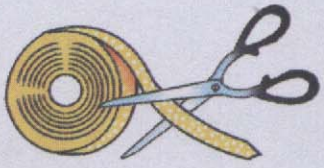

6)

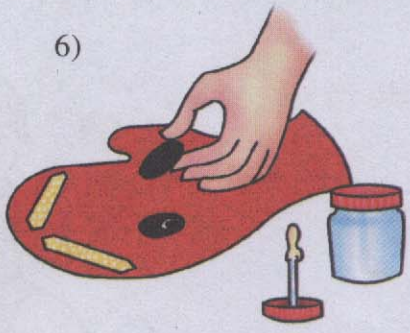

7)

# दस्ताना खिलौना

**तैयारी :** कपड़े पर हाथ का रेखाचित्र खींचें ।

कपड़े को दो टुकड़ों में इस प्रकार काटें कि एक व्यक्ति का हाथ उसमें समा सके।

एक दूसरे पर कपड़े के टुकड़ों को रखकर किनारे जोड़ दें और एक ओर खुला छोड़ दें जिससे कि उसमें हाथ समा सके ।

फिर दस्ताने के एक ओर कपड़े के टुकड़ों को चिपका दें जिन्हें चेहरों के अंग बनाये जा सकें।

**उपयोग :** भाषा प्रेरणा में सहायता प्रदान करता है ।

दस्ताना खिलौना बनाने में चटकीले रंगों के कपड़े का उपयोग दृष्टि प्रेरणा में भी सहायता देगा ।

**रूपांतर :** कपड़े के बदले चटकीले रंग की प्लास्टिक की शीटों का भी उपयोग किया जा सकता है ।

गुड़ियाँ, पक्षी तथा पशुओं के आकार के दस्ताना खिलौने बनाये जा सकते हैं।

# मद - स्पंज का खिलौना ।

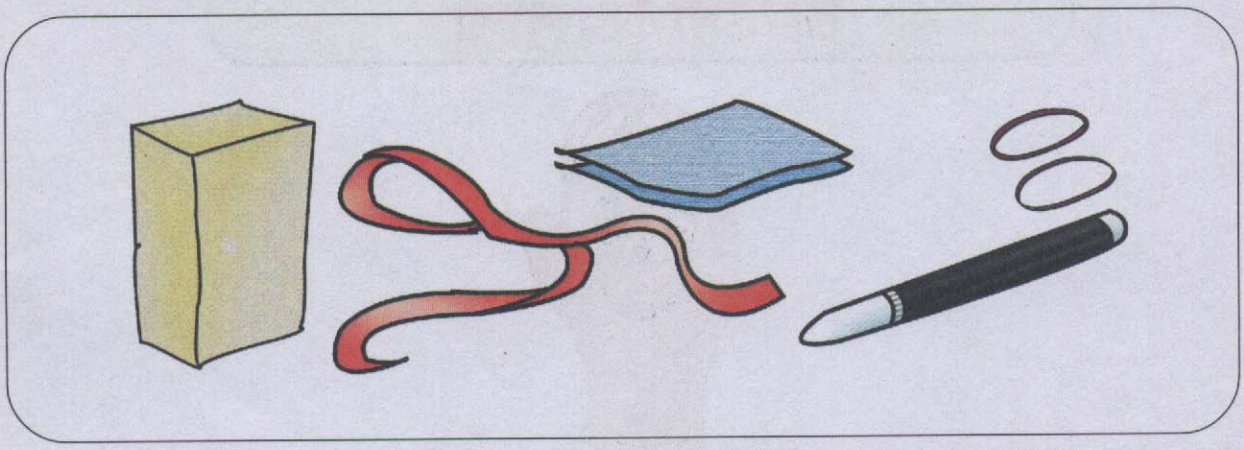

कच्ची सामग्री - स्पंज का आयताकार टुकड़ा, सैटिन की या सामान्य रिबनें, लाल तथा काला मखमली कागज, रबर बैंड्स ।

1)

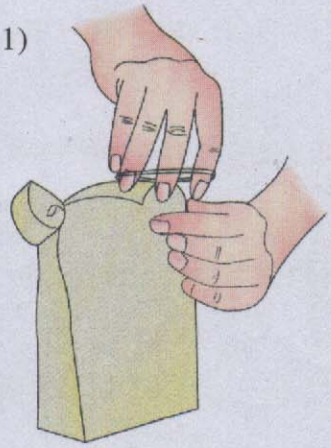

2)

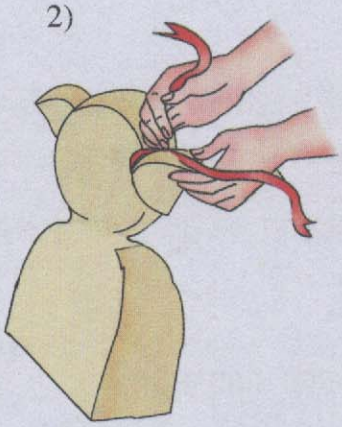

3)

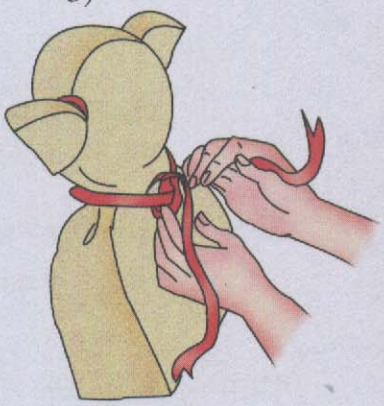

4)

5)

# स्पंज का खिलौना

**तैयारी :** स्पंज के एक चौथाई अंश पर रबर बैंड लगा दें, जो कि सिर की स्थिति का सीमांकन करता है ।

सिर के अंश के कोनों में रबर बैंड लगा दें , जो कानों का निर्धारण करते हैं ।

सिर का निर्धारण करने के लिए उपयोग किये गये रबर बैंड के अतराफ सैटिन की रिबन लपेट दें जो बो की शकल बनाए।

आँखों के लिए काले मखमल के कागज के छोटे-छोटे टुकड़े काटकर उन्हें चिपका दें ।

इसी तरह नाक और मुँह को बनाने के लिए लाल कागज के अंश काट लें ।

**उपयोग :** स्पृश्य प्रेरणा प्रदान करने में सहायता देता है ।

सामाजिक और भावात्मक विकास के लिए उपयोगी है।

दृष्टि प्रेरणा में सहायता देता है।

भाषा प्रेरणा में यह सहायता देता है ।

यह उँगलियों के हरकत को सुधारता है और पकड़ (उंगलियों के अभ्यास) और पंजे की पकड़ सुधारता है ।

**रूपांतर :** चिकनी मिट्टी, लोई, कपास या थर्माकोल से इसी प्रकार के खिलौने बनाये जा सकते हैं । स्पंज से विभिन्न जानवरों की शक्लें भी बनायी जा सकती हैं ।

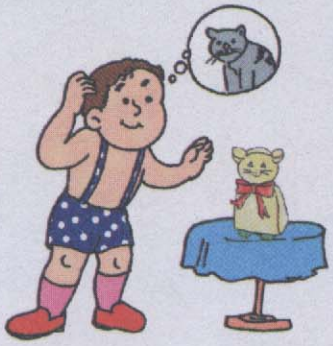

# मद - खरगोश ।

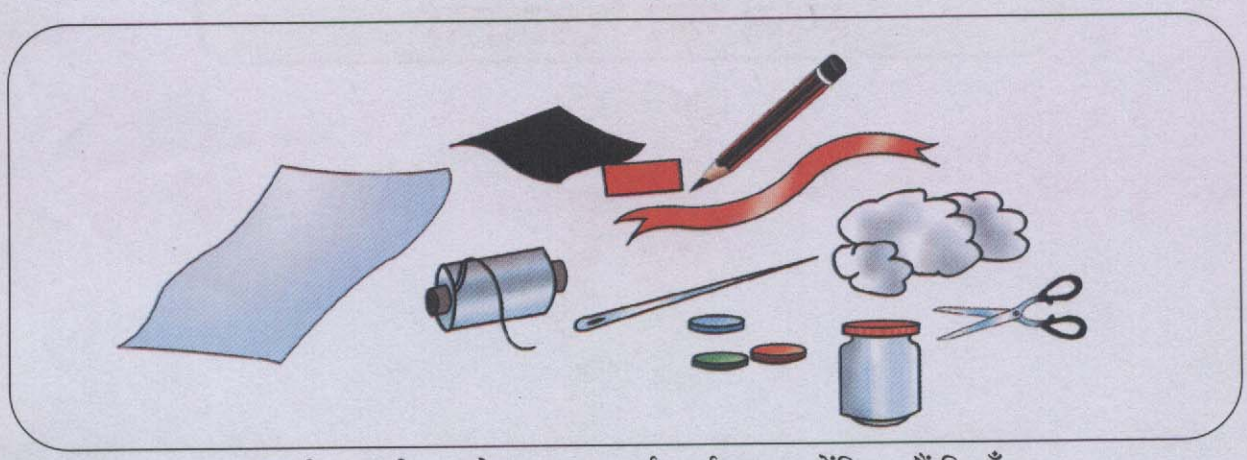

कच्ची सामग्री - सफेद कपड़ा, रुई, सुई, धागा, पेंसिल, कैंचियाँ ।

1)

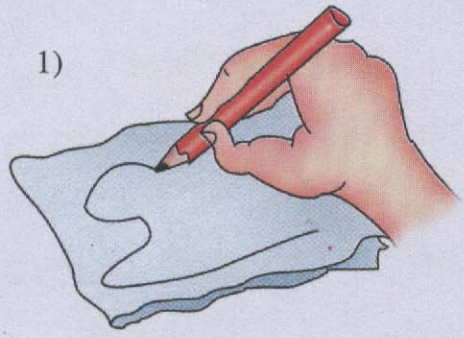

2)

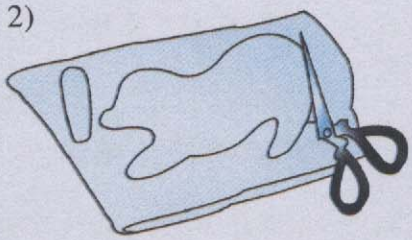

3)

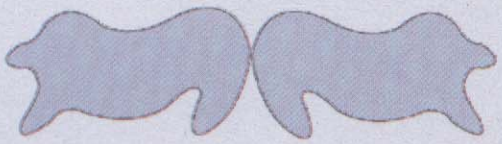

4)

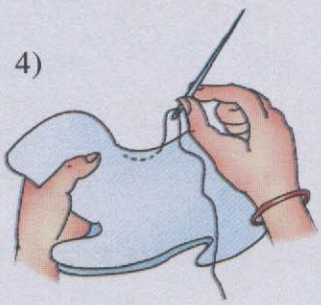

5)

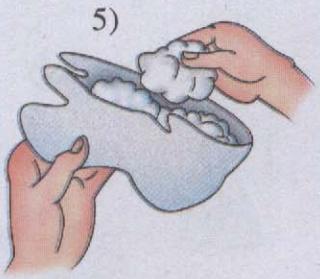

6)

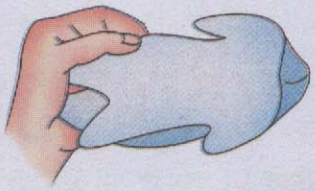

7)

# खरगोश

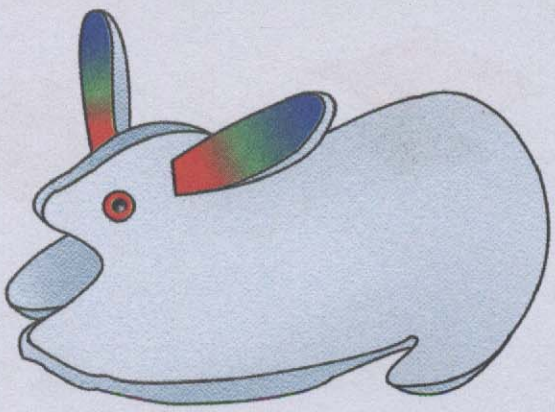

**तैयारी :** सफेद कपड़े पर खरगोश के अलग-अलग अंगों का, चित्र में बताये गये अनुसार अंकन कर उन्हें काट लें ।

चित्रमें सूचित किये गये अनुसार टुकड़ों को जोड़ लें ।

सिले गये भाग को अंदर-बाहर कर उसमें रुई भर दें और खरगोश की आँखों को सी लें । खरगोश के कानों को भी सी लें ।

**उपयोग :** भाषा विकास में सहायता देता है ।

हाथों के चलन जैसे पहुँचने और पकड़ने की चेष्टाएँ करने में सुविधा प्रदान करता है ।

स्पृश्य प्रेरणा में मदद करता है ।

**रूपांतर :** भरवाँ खिलौने बनाने के लिए कोई भी पुराना कपड़ा उपयोग में लाया जा सकता है । रुई के बदले कपड़े के चीथड़ों का प्रयोग भी किया जा सकता है ।

# मद - पक्षी

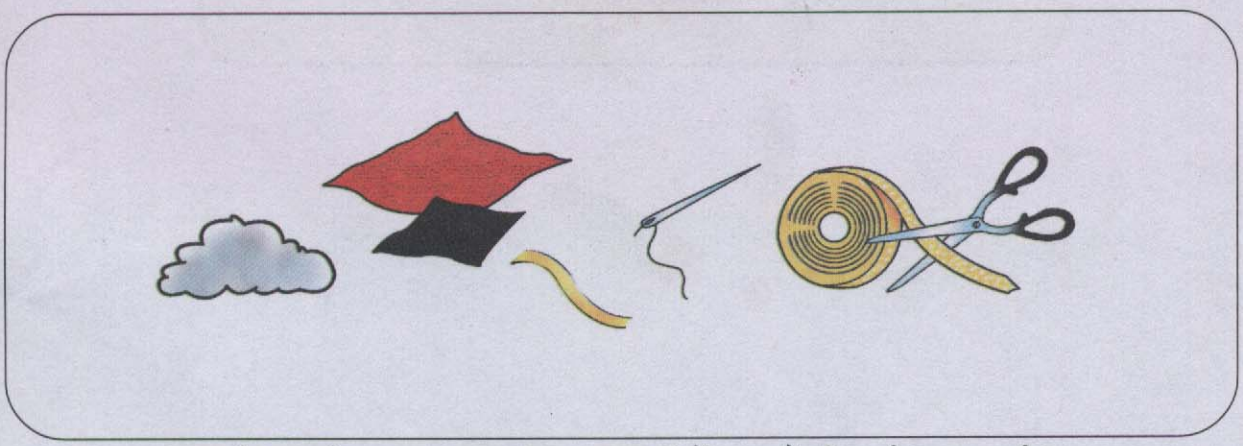

कच्ची सामग्री - नरम कपड़ा (2 अलग-रंगों का) कैंची, सुई, धागा, रुई ।

1)

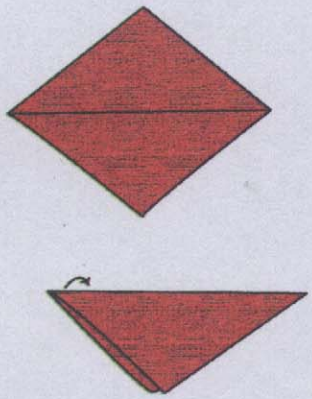

2)

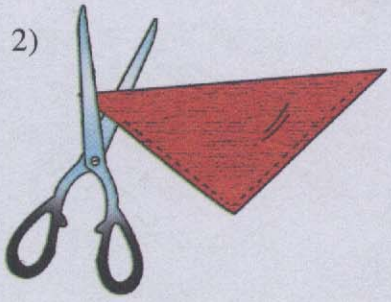

3)

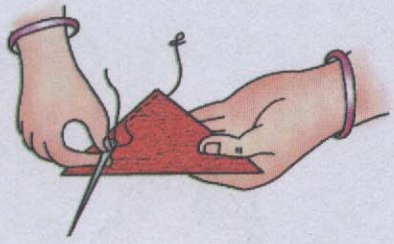

4)

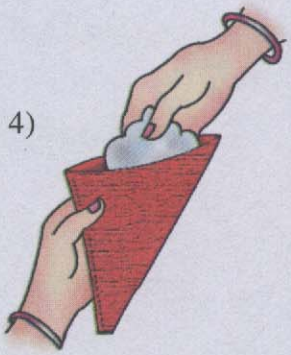

5)

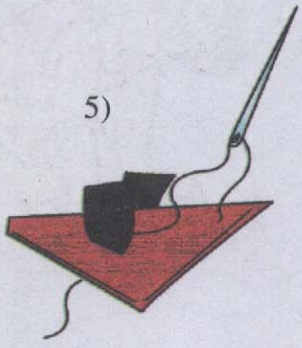

6)

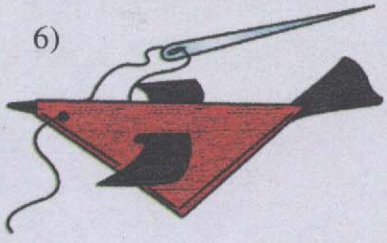

# पक्षी

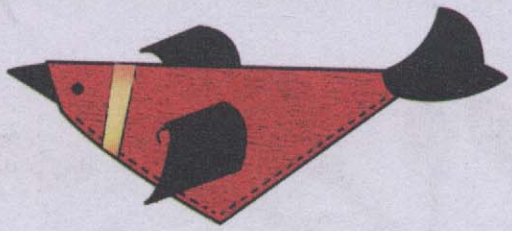

**तैयारी :** रंगीन कपड़े को वर्गाकार काट लें ।

इसे तिरछा मोड़कर त्रिकोण के आकार में बना लें ।

उसको सभी ओर से सी लें और रुई भरने के लिए थोड़ा खुला रख लें ।

रुई भरने के बाद उसे भी सी लें ।

दूसरे रंग के कपड़े के 1ङ्ग1सेंटी मीटर के 3 छोटे वर्गाकार टुकडे काट लें ।

चित्र में बताये गये अनुसार दो टुकड़ों को परों तथा एक टुकड़े को चोंच के रूप में सी लें ।

दूसरे रंग के कपड़े का 2 x 2सें.मी. वर्गाकार टुकड़ा काटकर उसे दुम की तरह सी लें ।

**उपयोग :** यह दृष्टि तथा स्पृश्य प्रेरणा में सहायता देता है ।

**रूपांतर :** इलास्टिक की डोरी जोड़ देने से पक्षी को लटकन खिलौने की तरह बनाया जा सकता है ।

पंक्तियाँ बनाने के लिए इस प्रकार के पक्षियों की लड़ियाँ बनायी जा सकती हैं ।

# मद - पंख गुच्छ ।

कच्ची सामग्री - मोर पंख, लपेटने का कागज, सरेस ।

1)

2)

# पंख गुच्छ

**तैयारी :** मोर पंखों का गुच्छा लेकर उन्हें बाँध लें ।

**उपयोग :** जब इसे बच्चे के शरीर पर फेरा जाता है तो स्पृश्य प्रेरणा में सहायता करता है ।

भावात्मक प्रेरणा प्राप्त करने में सहायता देता है, क्योंकि पंखों के फेरने को अपने शरीर पर अनुभव कर बच्चा पुलकित हो जाता है ।

**रूपांतर :** विभिन्न पक्षियों के परों से ऐसे गुच्छ बनाये जा सकते हैं ।

उन्हें चटकदार रंगों से रंगा भी जा सकता है, जो दृष्टि प्रेरणा में सहायता प्रदान करेंगे ।

पंखों की जगह अन्य सामग्रियों का उपयोग भी किया जा सकता है ।

पंखों के स्थान पर कोई भी मुलायम सामग्री जैसे:- मुलायम कपड़े का भी उपयोग किया जा संकता है ।

# मद - पोन-पोन ।

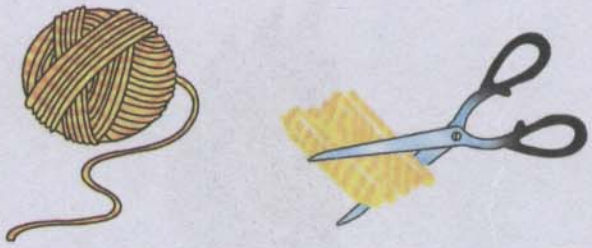

कच्ची सामग्री - ऊन (2 बंडल), कैंचियाँ।

1)

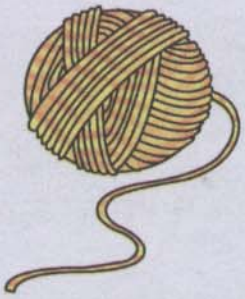

2)

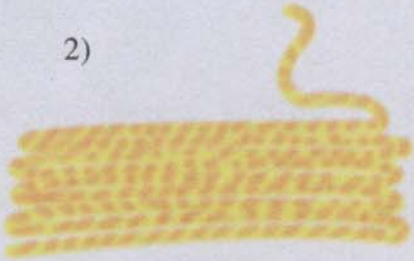

3)

4)

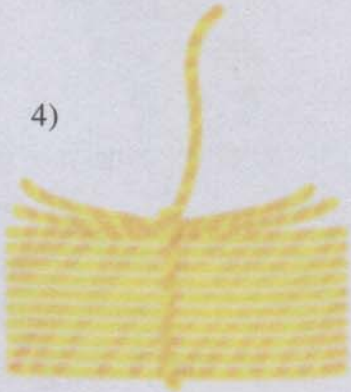

# पोन-पोन

**तैयारी :** ऊन को लगभग 10 सें.मीटर आकार के टुकड़ों में काट लें ।

डोरी के लिए ऊन के लगभग चार लंबे टुकड़ों को खुला छोड़ रखें।

फिर, इन 10 सें.मी.लंबे टुकड़ों को बीच में से पकड़कर बाँध दें तथा छोरों को लटकने के लिए खुला छोड़ दें ।

**उपयोग :** स्पृश्य प्रेरणा में सहायक होता है।

दृष्टि प्रेरणा में सहायता देता है ।

**रूपांतर :** ऊन की जगह कपड़े की चीरियाँ भी उपयोग में लायी जा सकती हैं ।

दृष्टि समस्याओं से ग्रस्त बच्चे के लिए चटकीले रंगों या चटकीले काले और सफेद ऊन का उपयोग किया जा सकता है ।

# मद - ऊन की लटकन ।

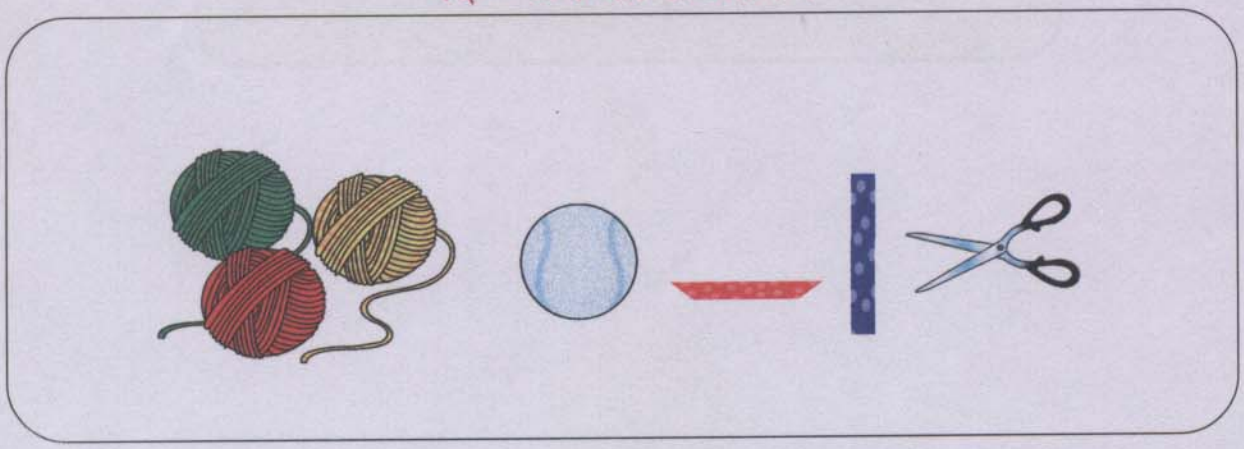

कच्ची सामग्री - ऊन की लड़ी, कैंचियाँ ।

1)

2)

5)

6)

3)

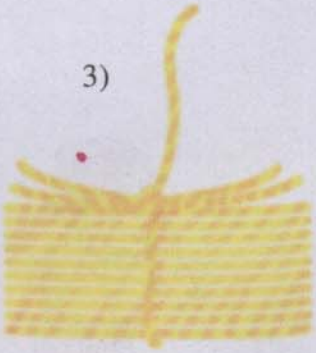

4)

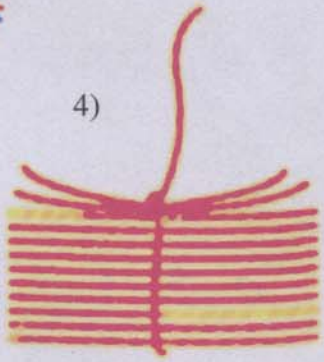

# ऊन की लटकन

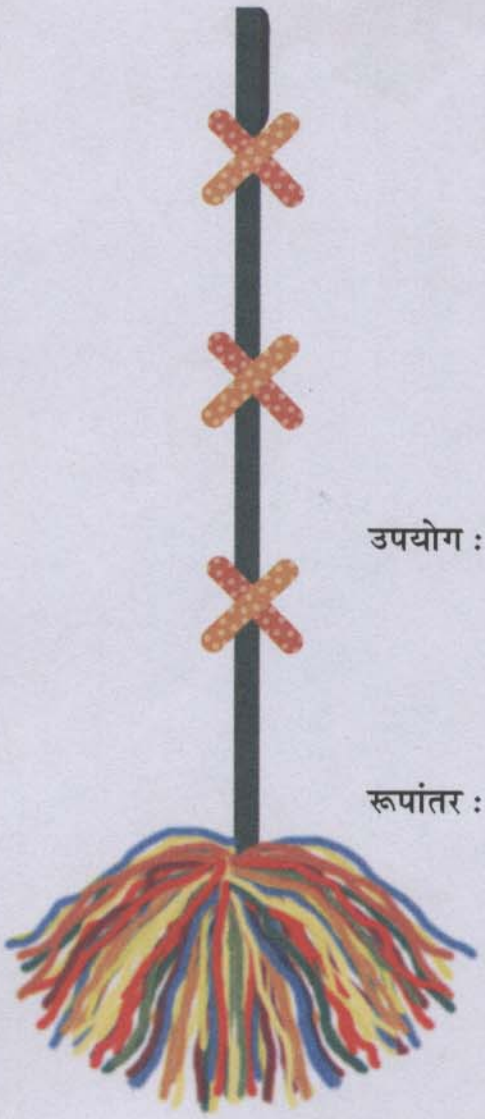

**तैयारी :** ऊन की लड़ी को चित्र में दिखाये गये अनुसार छोटे-छोटे टुकड़े कर लें ।

इन टुकड़ों को बीच में से पकड़कर उन्हें ऊन की डोरी से बाँध दें ।

ऊन के गुच्छे के लटकन को सरल बनाने के लिए सैटिन के रिबन जोड़ दें और भिन्न-भिन्न रंगों के सैटिन रिबन के टुकड़ों को छड़ी के साथ लगा दें।

सैटिन के रिबन के एक अंश को मोड़कर छोर पर एक फाँद बना लें ।

**उपयोग :** यह बढ़िया प्रेरक समन्वयन में सहायता देता है ।

दृष्टि प्रेरणा में सहायक होता है ।

यह श्रव्य प्रेरणा में सहायक होता है ।

**रूपांतर :** श्रव्य प्रेरणा के लिए ऊन की लड़ियों के सिरे पर घुंघरू लगाये जा सकते हैं ।

# मद - स्पृश्य घन ।

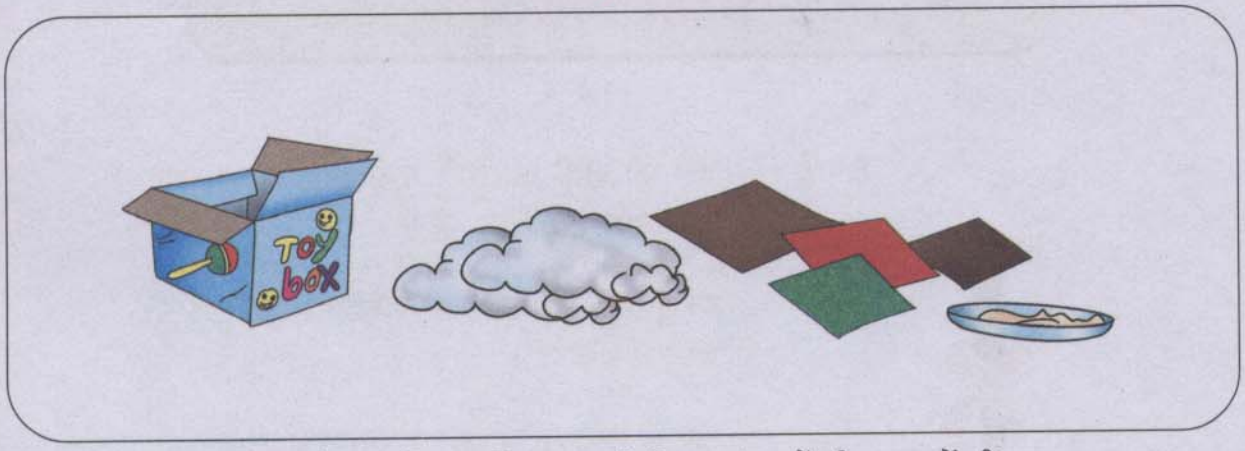


कच्ची सामग्री - गत्ते का खाली डिब्बा (10 सें.मी ङ्ग 10 सें.मी),
रुई, रेगमाल-3 ग्रेड, झुर्रीदार गत्ता, चमकीला कागज।

1)

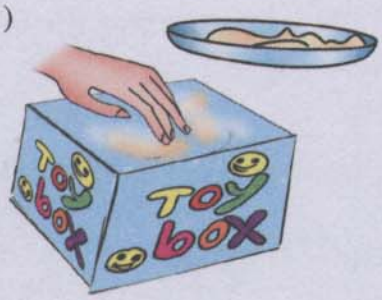


2)

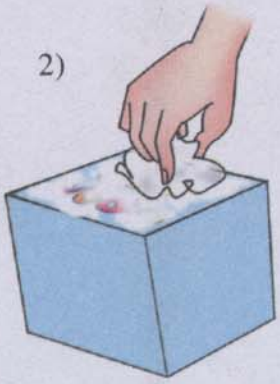

3)

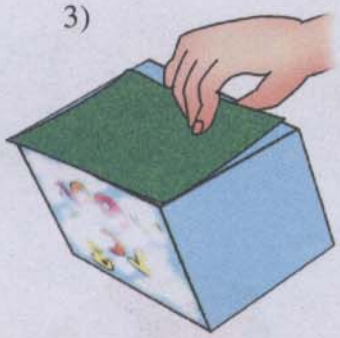

4)

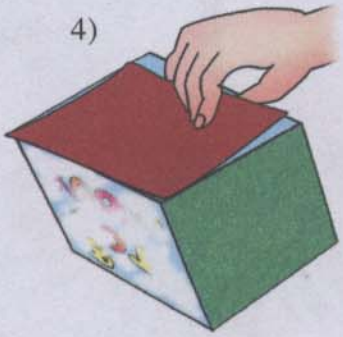

5)

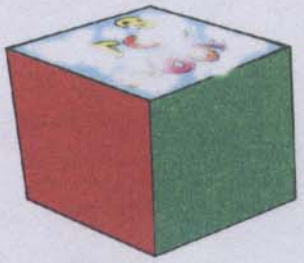

# स्पृश्य घन

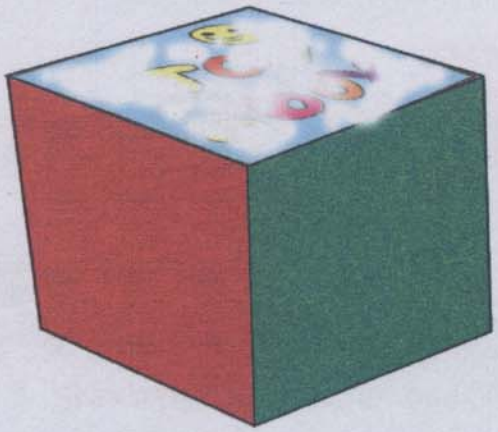

**तैयारी :** गत्ते के डिब्बे को कागज में लपेट कर समरूप में चिपका दें ।

रुई, रेगमाल, चमकीले कागज और झुर्रीदार गत्ते को समान आकारों में काट लें, ताकि वे गत्ते के डिब्बे की बाजुओं में ठीक-ठीक जम सकें ।

डिब्बे के हर बाजू पर एक-एक प्रकार की सामग्री चिपकाएँ ।

**उपयोग :** यह स्पृश्य प्रेरणा के लिए अच्छे मद के रूप में कार्य करता है ।

**रूपांतर :** बेहतर स्पृश्य प्रेरणा के लिए टीन के बने डिब्बों को भी विभिन्न सामग्रियों से आवरित किया जा सकता है।

# मद - स्पृश्य बोर्ड ।

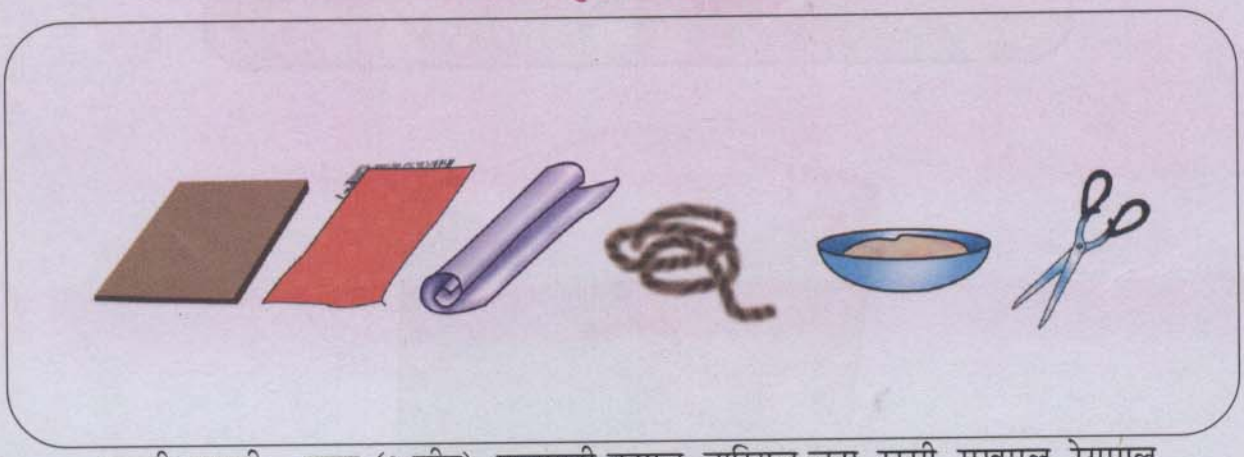

कच्ची सामग्री - गत्ता (2 शीट), सजावटी कागज, नारियल जटा, रस्सी, मखमल, रेगमाल, प्लास्टिक या सिंथेटिक सामग्रियाँ (औद्योगिक रद्दी), कैंचियाँ, सरेस।

1)

2)

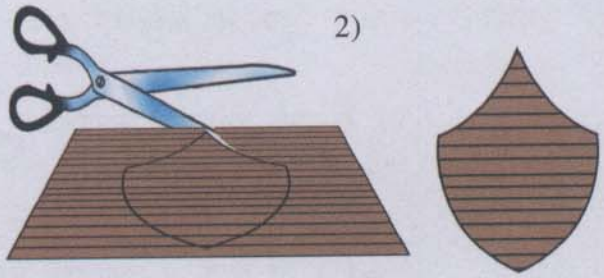

3)

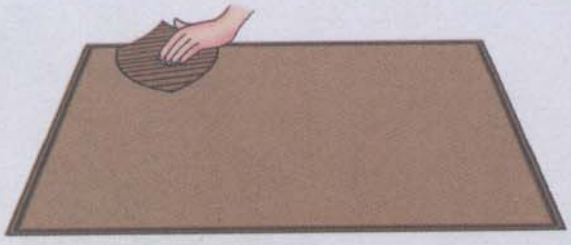

4)

# स्पृश्य बोर्ड

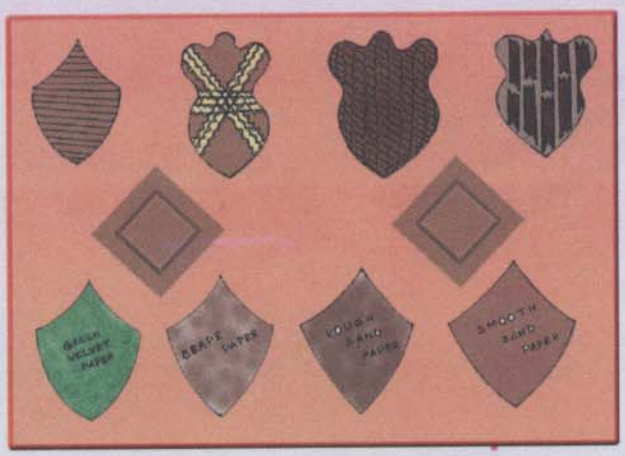


**तैयारी :** गत्ते के एक शीट पर अंकन कर 15 सें. मी. x 15 सें.मी. (5 टुकड़े) काट लें ।

हर एक टुकड़े पर एक प्रकार की सामग्री चिपकाएँ ।

इन सभी टुकड़ों को दूसरे गत्ते पर चिपकाएँ ।

**उपयोग :** स्पृश्य प्रेरणा के लिए यह अच्छे मद के रूप में काम करता है ।

**रूपांतर :** प्रेरणा प्रदान करने के लिए भिन्न-भिन्न सतहों पर विभिन्न प्रकार की सामग्रियों का उपयोग किया जा सकता है ।

बारीक रेत, मोटी रेत, मुर्गी के पंख, धान का छिलका आदि उपयोग में लाये जा सकते हैं ।

# मद - बालों की चोटी की घंटियाँ ।

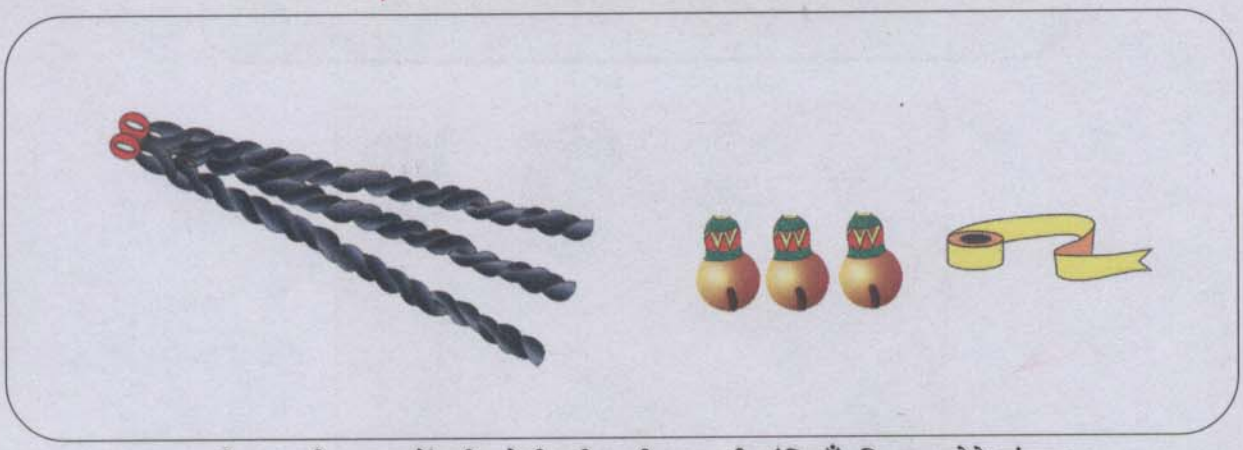

कच्ची सामग्री - बालों की चोटी की बनी-बनायी घंटियाँ, रिबन, छोटे घुंघरू ।

1)

2)

# बालों की चोटी की घंटियाँ

**तैयारी :** इसके साथ रिबन और कुछ बढ़िया घुंघरू बाँध दें ।

**उपयोग :** स्पृश्य प्रेरणा में सहायक होती हैं ।

श्रव्य प्रेरणा में सहायक होती हैं ।

**रूपांतर :** बढ़िया कपड़े की पट्टियों का उपयोग भी किया जा सकता है ।

चटकदार रंगों का कपड़ा दृष्टि प्रेरणा को बढ़ाता है ।

# मद - संतुलन बोर्ड

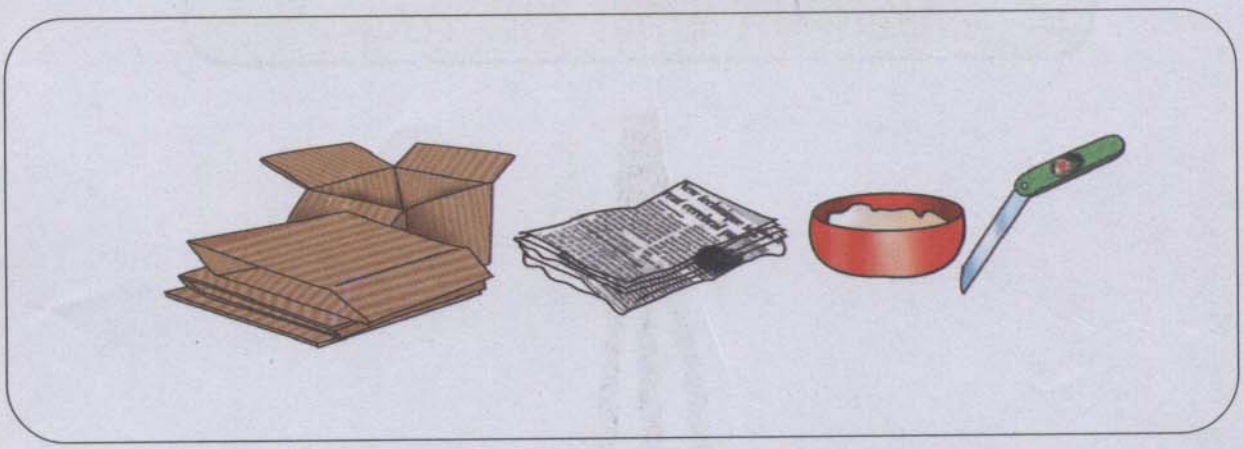

कच्ची सामग्री - गत्ता (कार्टन के पुराने डिब्बे), सरेस, चाकू, समाचार पत्र ।

1)

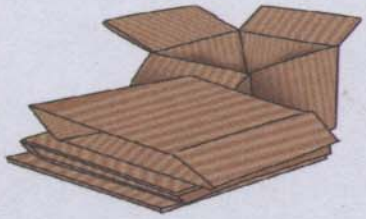

2)

3)

4)

5)

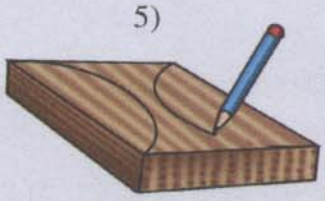

6)

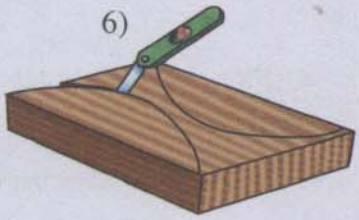

7)

8)

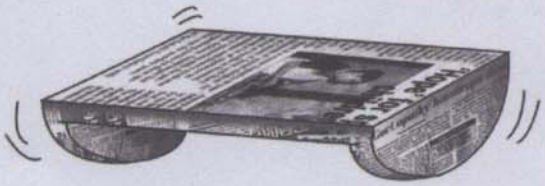

# संतुलन बोर्ड

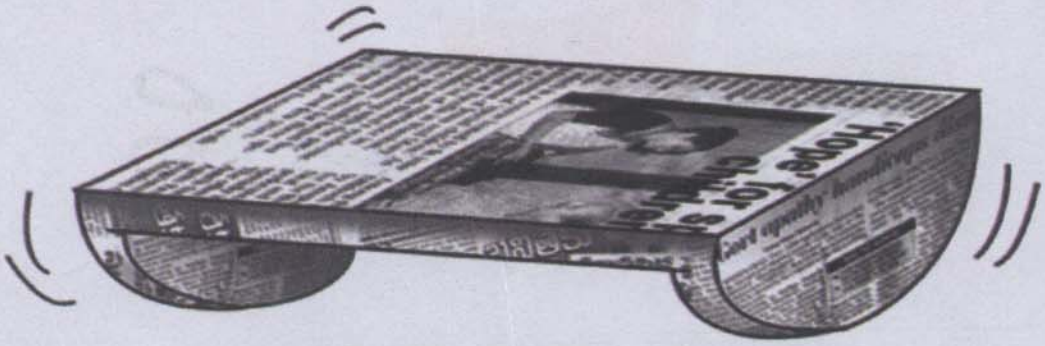

**तैयारी :** कार्टन के डिब्बों को काटकर फैला लें । तब कार्टन डिब्बों के बाजुओं को समान आकार में बनाकर एक दूसरे पर रखकर उन्हें सरेस लगा दें ।

आवश्यक मोटाई हासिल होने तक गत्ते की परत पर परत, एक ही आकार के, चिपकाते जाएँ।

तब चित्र में बताये गये अनुसार गत्ते को तीन खंड़ों में काट लें ।

चित्र में बताये गये अनुसार इन तीनों टुकड़ों को एक दूसरे से मिलाकर चिपका लें।

संतुलन बोर्ड पर समाचार-पत्र की पट्टियाँ चिपकाते जाएँ और अंत में साफ दिखाई देने के लिए उस पर पेंट लगा दें ।

**उपयोग :** संतुलन प्रेरणा में सहायक होता है ।
दृष्टि प्रेरणा ।
स्पृश्य प्रेरणा ।

# मद - डोलती नाँद

कच्ची सामग्री - डोलती नाँद, साड़ी, डोरी, कैंची ।

1)

2)

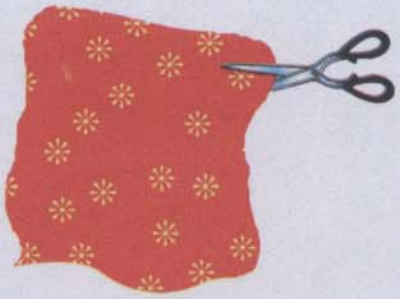

3)

4)

# डोलती नाँद

**तैयारी :** वक्र पेंदे वाला धातु का बर्तन लें।

साड़ी को बर्तन में इस ढंग से रखें कि साड़ी के किनारे बर्तन से बाहर की ओर पड़े रहें।

डोर से साड़ी को बर्तन के किनारे के अतराफ बाँध दें, ताकि बर्तन के किनारे से बच्चे को चोट आदि न लगे ।

**उपयोग :** स्पृश्य प्रेरणा प्रदान करने में सहायता देती है ।

भावात्मक तथा सामाजिक विकास में सहायता प्रदान करती है ।

**रूपांतर :** इसी आकार के रंगबिरंगे तथा चटकीले रंगों के बर्तनों का प्रयोग बलहीन मांसपेशियों वाले बच्चों के लिए किया जा सकता है ।

# मद - टायर का झूला

कच्ची सामग्री - बेकार हुए स्कूटर के टायर, मोटी रस्सी, धातु की तेज छड़ ।

1)

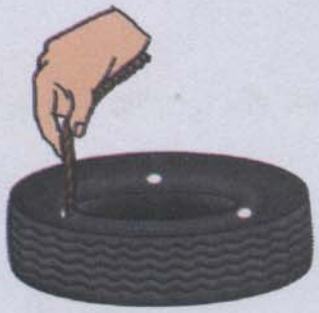

2)

3)

4)

# टायर का झूला

**तैयारी :** स्कूटर का टायर लेकर तेज छड़ से उसमें अतराफ छेद करें, चित्र में बताये गये अनुसार।

रस्सी को टुकडों में काट लें ।

टायर में किये गये प्रत्येक छेद में रस्सी का एक-एक टुकड़ा खोंपकर उसे बाँध दें । रस्सियों के टुकड़ो के खुले भागों को एक साथ मिलाकर बाँध लें । इस हिस्से को रस्सी के पाँचवें टुकड़े को बाँध कर पेड़ की शाखा से बाँध दें ।

इसपर बच्चे को बाँधकर झुलाया जा सकता है ।

**उपयोग :** भावात्मक विकास में सहायता प्रदान करता है ।

संतुलन प्रेरणा में सहायता प्रदान करता है ।

**रूपांतर :** टायर के बदले में वृत्ताकार आकार के नर्म तकियों का प्रयोग भी किया जा सकता है । नर्म माँसपेशियों वाले बच्चे को इस पर लिटाकर खूब तेज गति से झुलाया जा सकता है ।

लेकिन कड़ी माँसपेशियों वाले बच्चे को तेज गति से झुलाया जा सकता है।

पीठ को सहारा देकर नर्म माँसपेशियों वाले बच्चे को पैर नीचे छोड़कर उसपर बिठाकर झुलाया जा सकता है ।

# मद - दलारा झूला

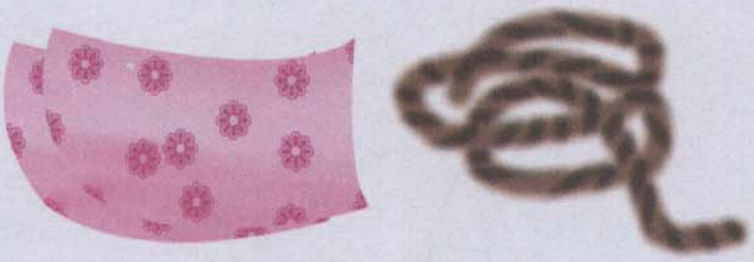

कच्ची सामग्री - पुरानी साड़ी, रस्सी, सुई, धागा ।

# दलारा झूला

**तैयारी :** चित्र में दर्शाये गये अनुसार साड़ी के छोरों को दो पेड़ों के बीच बाँध दें ।

**उपयोग :** संतुलन प्रेरणा में सहायता प्रदान करता है ।

**रूपांतर :** तह की गयी साड़ी /चादर का उपयोग भी किया जा सकता है ।

चादर (बेड़शीट)/साड़ी के चारों किनारों को दो लोग पकड़कर बच्चे को बीच में रखकर या सुलाकर झुला सकते हैं ।

साड़ी के दोनों किनारों को छत से बाँधकर कपड़े का झूला बनाकर भी बच्चे को झुलाया जा सकता है ।

# मदद - तोता खिलौना ।

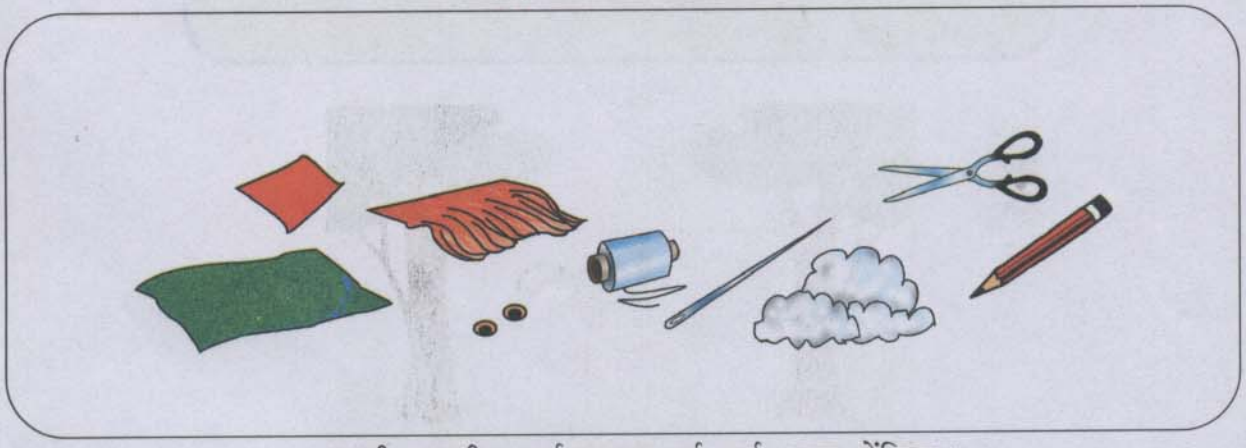

कच्ची सामग्री - नर्म कपड़ा, रुई, सुई, धागा, पेंसिल ।

1)

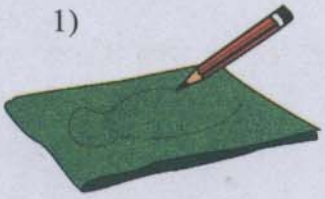

2)

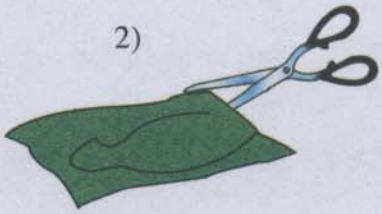

3)

4)

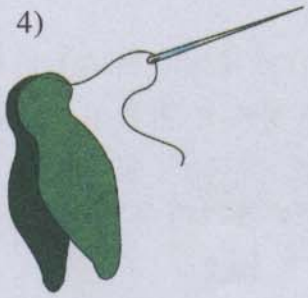

5)

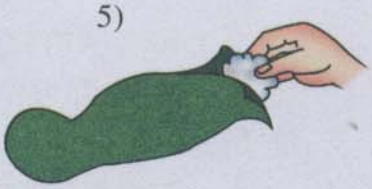

6)

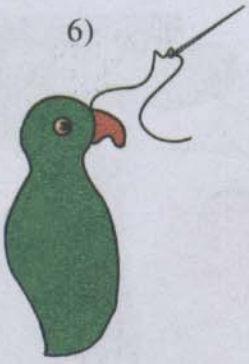

7)

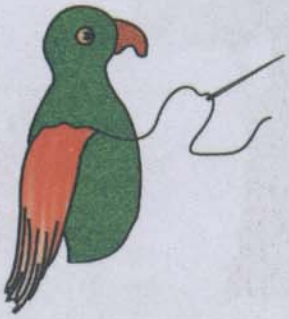

8)

9)

# तोता खिलौना

**तैयारी :** सामग्री पर तोते के शरीर केठ दो रेखाचित्र खींचकर काट लें।

रेखाचित्रों को एक-दूसरे के ऊपर रखकर, बीच में रुई भरने के लिए कुछ भाग खुला छोड़कर उन्हें जोड़ लें ।

रुई भरने के बाद खुले भाग को बटन होल से बंद कर परों, दुम और आँखें सी लें ।

**उपयोग :** स्पृश्य प्रेरणा के लिए अच्छे मद के रूप में यह काम आता है।

पकड़ने और छोड़ने के लिए दिये जानेवाले, प्रशिक्षण में सहायता प्रदान करता है।

चटकदार रंग दृष्टि प्रेरणा में सहायक होंगे ।

**रूपांतर :** बेहतर स्पृश्य प्रेरणा प्रदान करने के लिए विभिन्न प्रकार की सामग्रियों का उपयोग करते हुए इस प्रकार के खिलौने बनाये जा सकते हैं ।

जानवरों या पक्षियों के इसी प्रकार के खिलौने भी बनाये जा सकते हैं ।

# मद - बच्चा गाड़ी ।

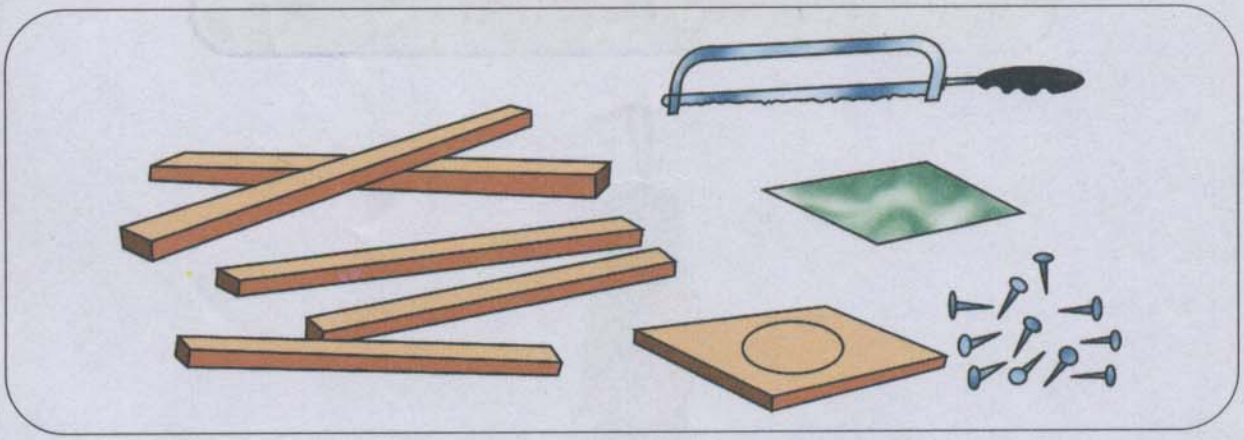

कच्ची सामग्री - लकड़ी, आरा, मापक फीता, रेगमाल ।

1)

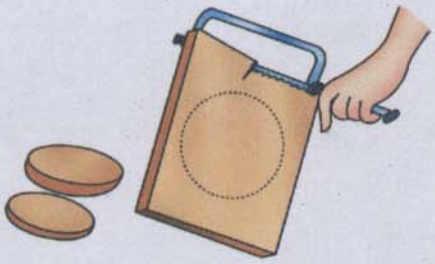

2)

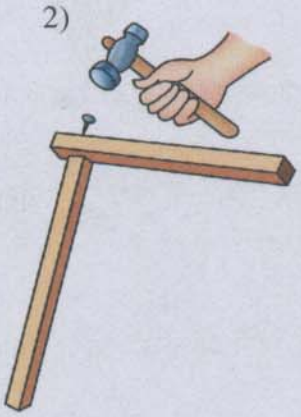

3)

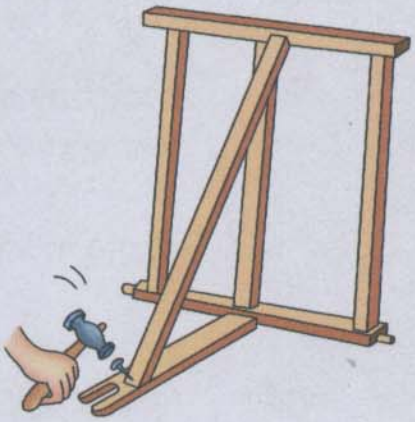

4)

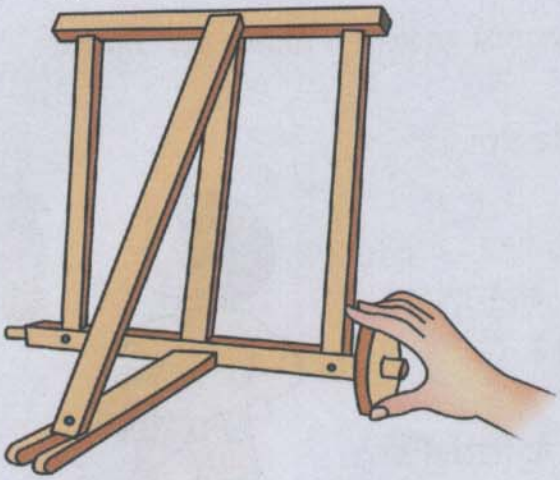

5)

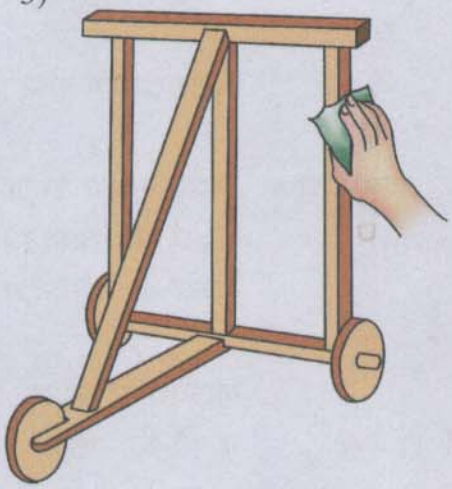

# बच्चा गाड़ी

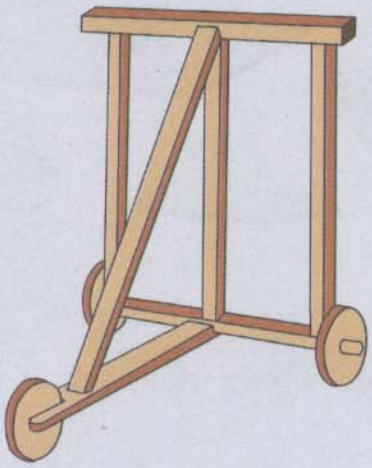

**तैयारी :** लकड़ी को लंबे छड़ों की शकल के टुकड़ों में काट लें ।

चित्र में दिखाये गये अनुसार आड़े छड़ पर तीन खड़े छड़ जोड़ लें । खड़े छड़ों को एक दूसरे के समकोणीय रूप में रखी गयी दो छड़ों से जोड़ लें ।

तीनों किनारों पर पहिये जड़ दें ।

**उपंयोग :** यह बच्चा गाड़ी चालन तथा सकल प्रेरणा विकास के लिए उपयोगी है ।

**रूपांतर :** बच्चा गाड़ी को आवाज करने वाले अर्थात् घंटियाँ आदि लगा देने से श्रव्य प्रेरणा में सहायता मिलती है ।

बच्चा गाड़ी को चटकदार रंगो से पेंट करने पर दृष्टि प्रेरणा में सहायता प्रदान करती है ।

यह बच्चा गाड़ी चलने में प्रेरक समस्याओं से ग्रस्त बच्चों को चलने में मदद करेगी ।

# मद - अंगुल सीढ़ी ।

कच्ची सामग्री - पुराने समाचार पत्र, मेथी के बीज, गत्ता, कैंचियाँ ।

1)

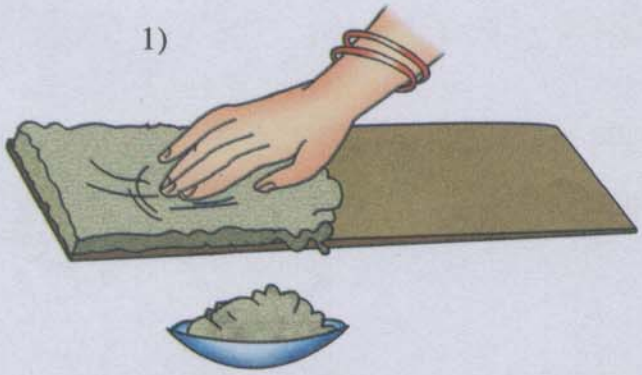

2)

3)

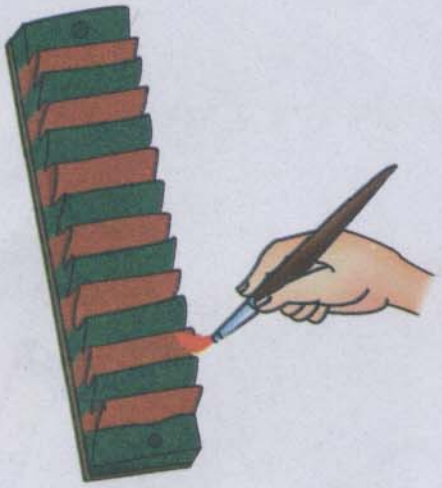

4)

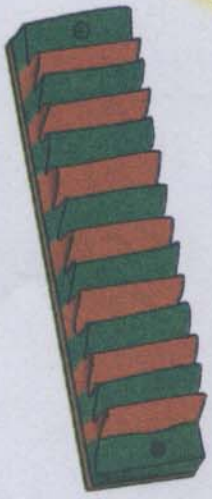

5)

# अंगुल सीढ़ी

**तैयारी :** पुराने समचार पत्रों को छोटे-छोटे टुकड़ों में फाड़कर मेथी के दानों के साथ मिलाकर पानी में रातभर भिगो लें ।

अगले दिन हल्दी चूर्ण मिलाकर मिश्रण को पीस लें ।

लगभग 1 फीट लंबे व 6 सें.मी. चौड़े गत्ते का टुकड़ा काट लें ।

कागज की पिसी लोई को सारे गत्ते की पट्टी पर सीढ़ीनुमा आकार में पोत दें ।

एक दिन के लिए सूखने छोड़ दें ।

गत्ते को एक किनारे पर लटकाने जैसी व्यवस्था करें ।

**उपयोग :** यह बढ़िया प्रेरक समन्वयन, भुजाओं के सकल चलन अर्थात् मोड़ने और अपावर्तन करने में सहायक होती है ।

मुड़े हुए और अपावर्तित अवयवों वाले बच्चे, प्रमस्तिष्कीय पक्षाघात से ग्रस्त बच्चे को इस क्रियाकलाप द्वारा उबारा जा सकता है ।

अंगुल सीढ़ी के ऊपर रखा खिलौना बच्चे के लिए प्रेरणा सामग्री के रूप में काम करेगा । लक्ष्य की प्राप्ति के लिए बच्चे को उक्त सीढ़ी पर अपनी उँगली चलानी होगी ।

**रूपांतर :** कागज की लोई से बने इस सामग्री को पेंट या रंगबिरंगे कागज लगाकर आकर्षक बनाया जा सकता है ।

# मद - पहिया और छड़ी ।

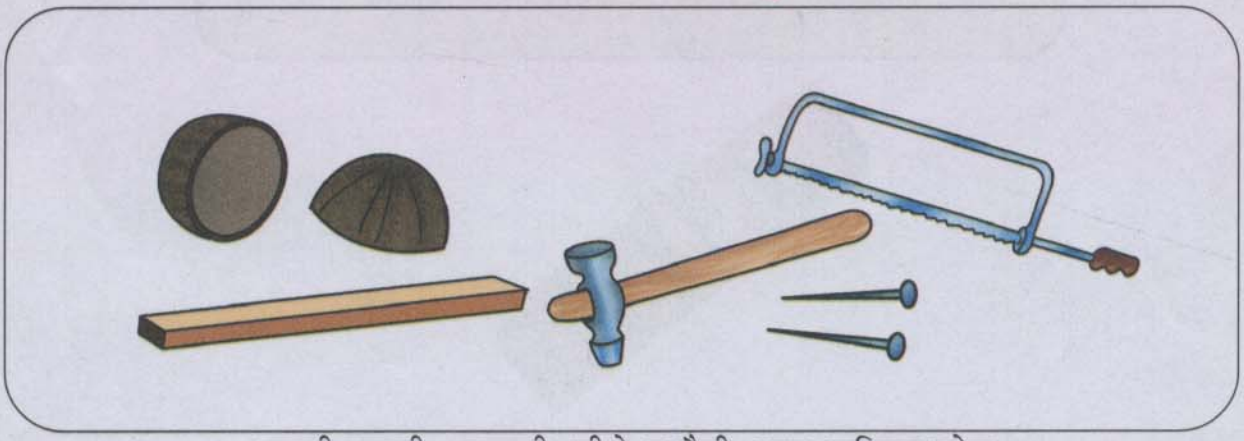

कच्ची सामग्री - लकड़ी, कीले, हथौड़ी, आरा, नारियल खोल,
एक ओर फाँद बनी लोहे की छड़,
साइकिल पहिये का रिम ।

1)

2)

3)

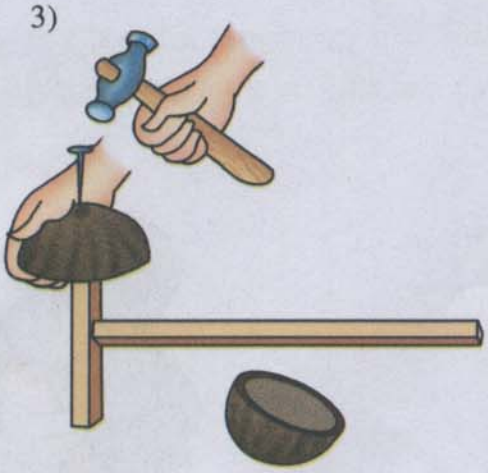

4)

# पहिया और छड़ी

**तैयारी :** दस्ते के तौर पर उपयोग करने के लिए लकड़ी का लंबा टुकड़ा काट लें । उसके अंत में एक लकड़ी का टुकड़ा आड़ा जोड़ दें । और इस टुकड़े के दोनों बाजुओं में लकड़ी से कटे पहिये या नारियल के दो खोल या सूखे ताड़ फल उपयोग किये जा सकते है ।

नारियल के खोलों को कीलों से जड़ दें ।

**उपयोग :**

- यह आँख-हाथ समन्वय के लिए उपयोगी हो सकती है ।
- यह सकल और बढ़िया प्रेरक समन्वयन दोनों के लिए उपयोगी है ।
- यदि दस्ते के अंत में छोटी घंटिया लगायी जाएँ तो श्रव्य प्रेरणा के लिए इसे भी उपयोग में लाया जा सकता है ।
- पहियों और छड़ी को अलग-अलग चटकदार रंगों सें पेंट किया जाए तो दृष्टि प्रेरणा में सहायक होगी ।

**रूपांतर :** मस्तिष्कीय स्तंभन से ग्रस्त बच्चे के लिए जो ठीक तरह चल नहीं सकता, इस मद में तरमीम कर उपयोग में लाया जा सकता है । अतिरिक्त मजबूती के लिए एक और लकड़ी की छड़ी पहिया सहित होनी चिहिए ।

पकड़ को सरल बनाने के लिए दस्ता भी लगाया जा सकता है ।

# मद - फिंगर बोर्ड ।

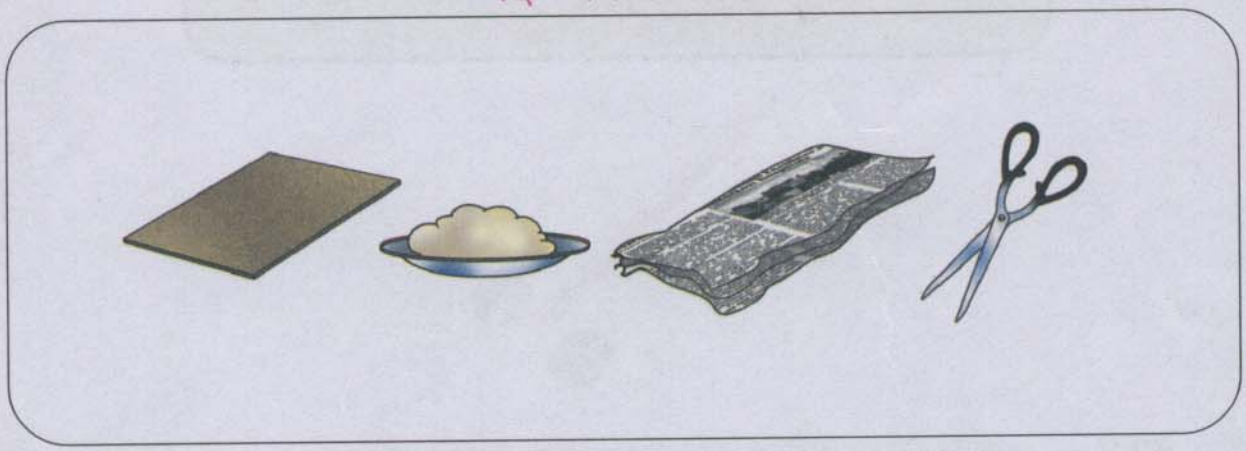

कच्ची सामग्री - पुराने समाचार पत्र, मेथी के बीज, गत्ता, कैंची ।

1)

2)

3)

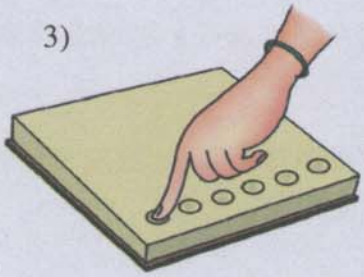

4)

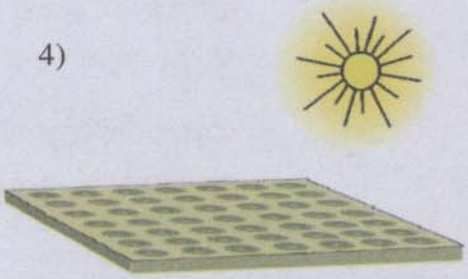

5)

6)

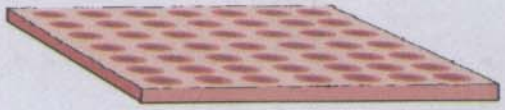

# फिंगर बोर्ड

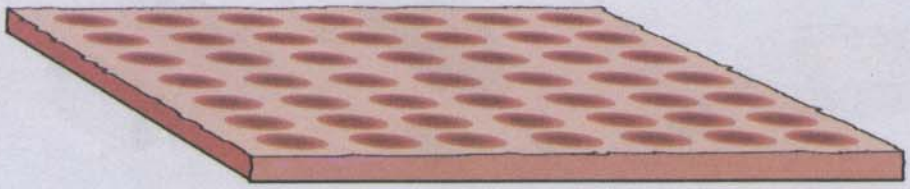

**तैयारी :** पुराने समाचार पत्रों को छोटे-छोटे टुकड़ों में फाड़कर मेथी के बीजों के साथ पानी में रातभर भिगो लें ।

अगले दिन हल्दीचूर्ण मिलाकर मिश्रण को पीस लें ।

लगभग 20 सें.मी. ङ्क 20 सें.मी. आकार का वर्गाकार गत्ते का टुकड़ा काट लें ।

गत्ते पर कागज की लुगदी को समतल फैला दें ।

तर्जनी से लुगदी में एक-एक पंक्ति में आड़े और खड़े पाँच-पाँच छेद कर लें ।

इस बात की निगरानी की जाए कि गढ़े समान दूरी पर बनें । इसे सुखाकर पेंट कर दें ।

**उपयोग :** यह बढ़िया चालक कौशलों और आँख-हाथ समन्वयन को सुधारने में सहायता प्रदान करता है ।

**रूपांतर :** दृष्टि प्रेरणा के लिए इसे आकर्षक बनाने पेंट किया जा सकता है ।

इसी तरह रद्दी कागज से हैट बनाये जा सकते हैं और चटकदार रंगों से उन्हें पेंट किया जा सकता है ।

# मद - फिरकी लट्टू ।

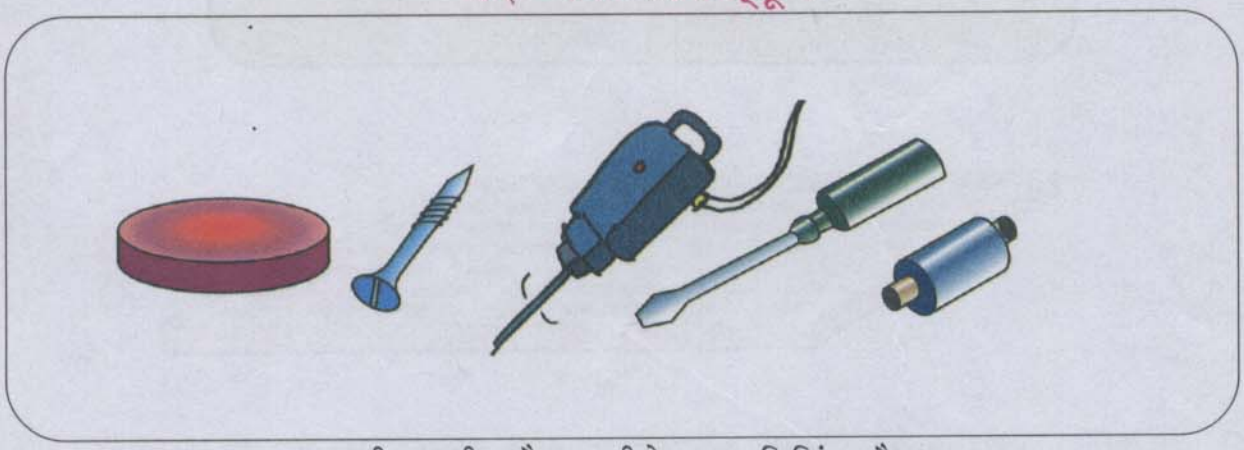

कच्ची सामग्री - कैरम, कीले, धागा, ड्रिलिंग औजार।

1)

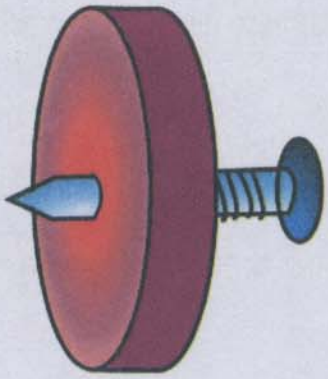

2)

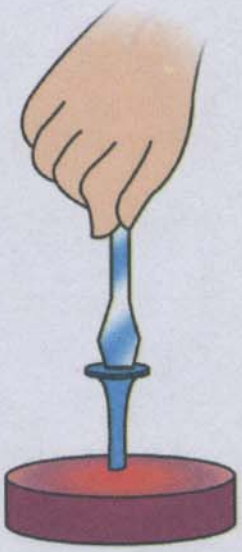

3)

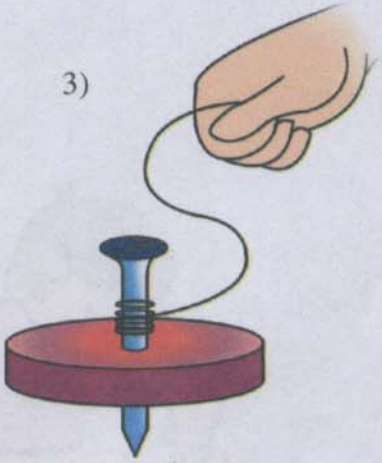

4)

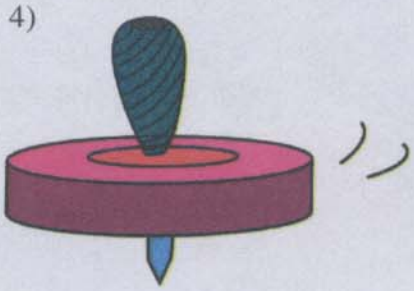

# फिरकी लट्टू

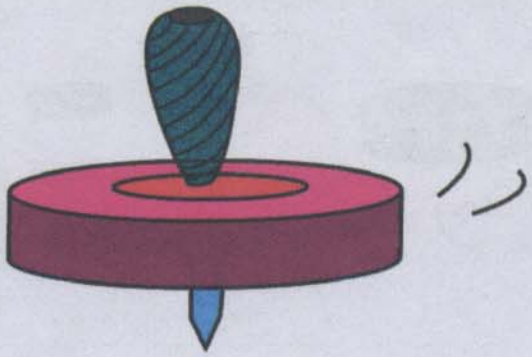

**तैयारी :** कैरम का एक सिक्का लेकर इसके बीच में सूराख करें ।

सूराख में एक लंबी कील खोसें ।

ऊपरी भाग पर धागा लपेटें ताकि वह नाब की तरह बन जाए ।

**उपयोग :** सूक्ष्म चालक समन्वयन में सहायता प्रदान करता है ।

दृष्टि खोज में सहायक होता है ।

**रूपांतर :** कागज की लुगदी से भी फिरकी लट्टू बनाया जा सकता है ।

# मद - बहुरंगी वलय खिलौना ।

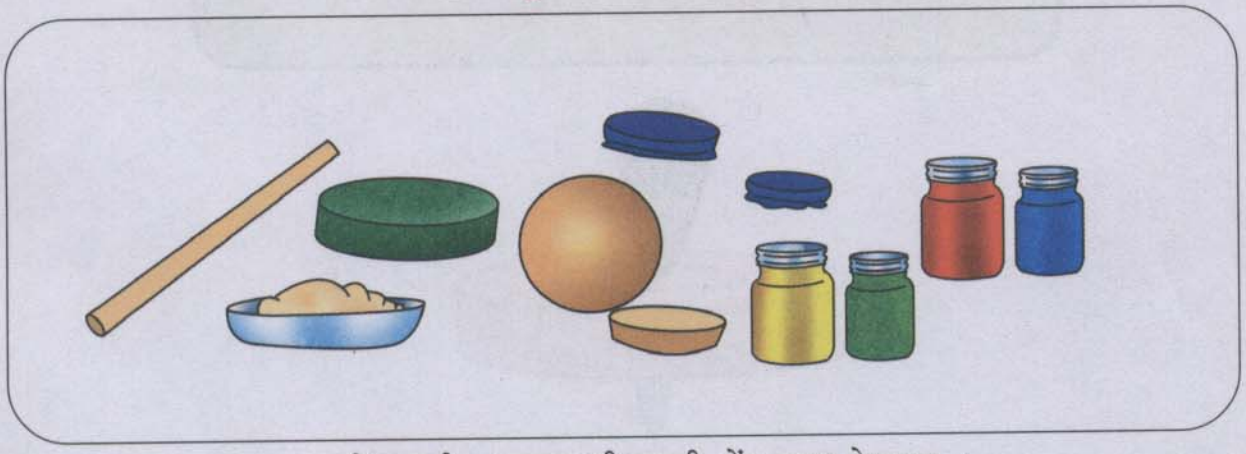

कच्ची सामग्री - कागज की लुगदी, पेंट बुरुश, रेगमाल ।

1)

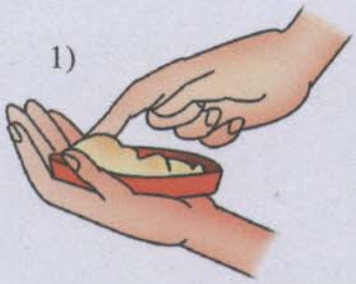

2)

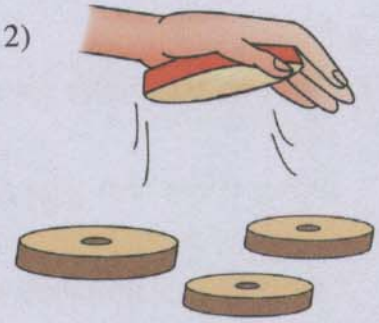

3)

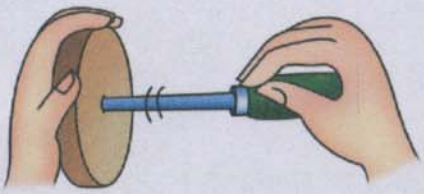

4)

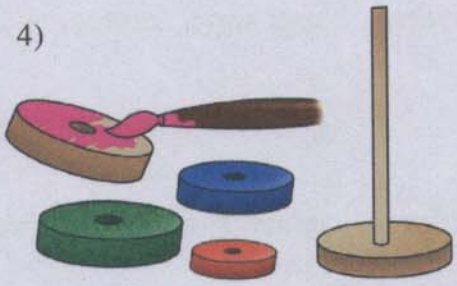

5)

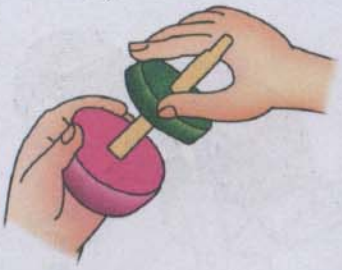

6)

7)

# बहुरंगी वलय खिलौना

**तैयारी :** कागज की लुगदी तैयार कर लें ।
कुछ लुगदी को लेकर आधार/पेंदे की शकल बना लें ।
लुगदी का उपयोग करते हुए उसे एक लंबी छड़ी जैसा आकार दें जो ऊपर तक हो ।
तब कागज की लुगदी से वलय के आकार की संरचनाएँ बना लें ।
इन वलयों को अलग-अलग आकार के बनालें ताकि वे एक दूसरे में समा सकें।
एक ऐसी संरचना तैयार करें जो किनारों पर गोल हो और जिसमें एक छेद पेंदे से लेकर ऊपर तक हो । इस सूराख में छड़ी के आकार की संरचना बैठ सके ।
उसके बाद चकती जैसी संरचना तैयार करें जिसके बीच में सूराख हो और छड़ी उसमें फिट हो जाए ।
अंतत : शंकु के आकार की संरचना बनाएँ जो अंदर से खोखली हो और उसका आकार इतना हो कि वह छड़ी में फिट हो जाए ।
इन तमाम संरचनाओं को एक दिन सूखने छोड़ दें ।
जब पूरी तरह सूख जाएँ तो सतह में चिकनापन लाने के लिए रेगमाल से पालिश करें।
चटकदार रंग से सभी अंगों पर पालिश करें ।
वर्गाकार टुकड़े पर चेहरा पेंट करें ।
अंत में चित्र में बनाये गये अनुसार सभी अंगों को जमाएँ ।

**उपयोग :** चटकदार रंग दृष्टि प्रेरणा में मदद करेंगे ।
इन अंगों को जमाते समय बच्चे की आँखों और हाथ के समन्वयन में सधार होगा।
यह बढ़िया चालक विकास में सहायता करता है ।

**रूपांतर :** चिकनी मिट्टी और लोई से ऐसी ही गुड़ियाँ बनायी जा सकती हैं।

# मद - खूँटी बोर्ड

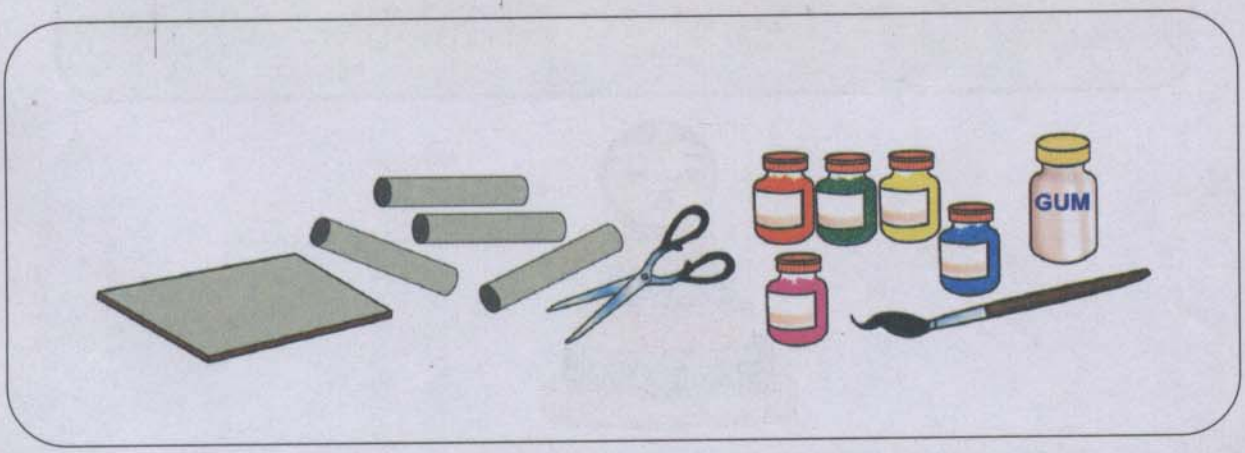


कच्ची सामग्री - थर्मोकोल, पेंट, ब्लेड़, बुरुश, कैंची, सरेस, गत्ता, धागा, धागा लपेटने की पुरानी फिरकियाँ ।

1)

2)

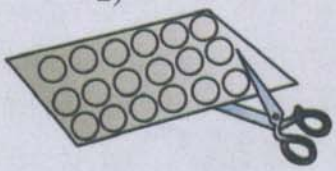

3)

4)

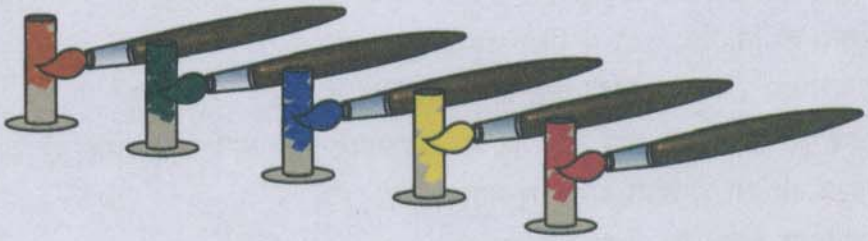

5)

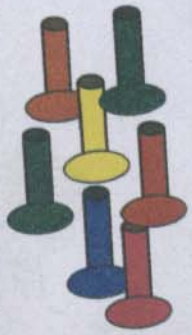

6)

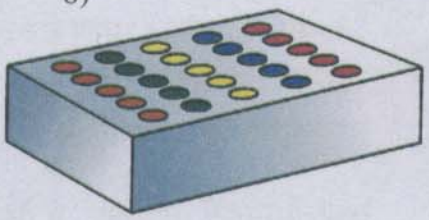

# खूँटी बोर्ड

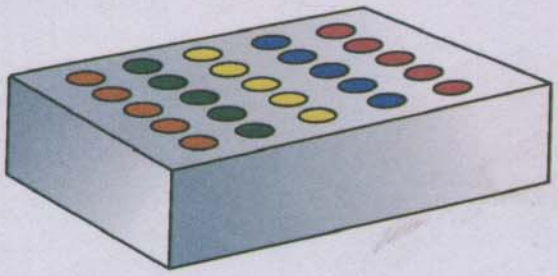

**तैयारी :** थर्मोकोल में 4 सें.मी. व्यास और 5 सें.मी गहरे छेद खोदें ।

इन छेदों को अलग-अलग रंगों से पेंट कर दें ।

3 सें.मी. व्यास, वृत्ताकार के गत्ते टुकडे काट लें ।

धागे की प्रत्येक फिरकी को गत्ते के टुकड़े पर खड़ा जमाकर चिपका दें ।

धागे की फिरकियों और गत्ते के वृत्तों को अलग-अलग रंगों से पेंट कर दें ।

धागे की फिरकियों को उसी के रंग के थर्मोकोल के छेद में घुसा दें ।

**उपयोग :** बढ़िया चालक समन्वयन में सहायक, रंग और आकृति की धारणा सीखने में सहायक होता है ।

दृष्टि प्रेरणा में सहायक होता है ।

# मद - मिट्टी के चूल्हे की शकल की कुर्सी ।

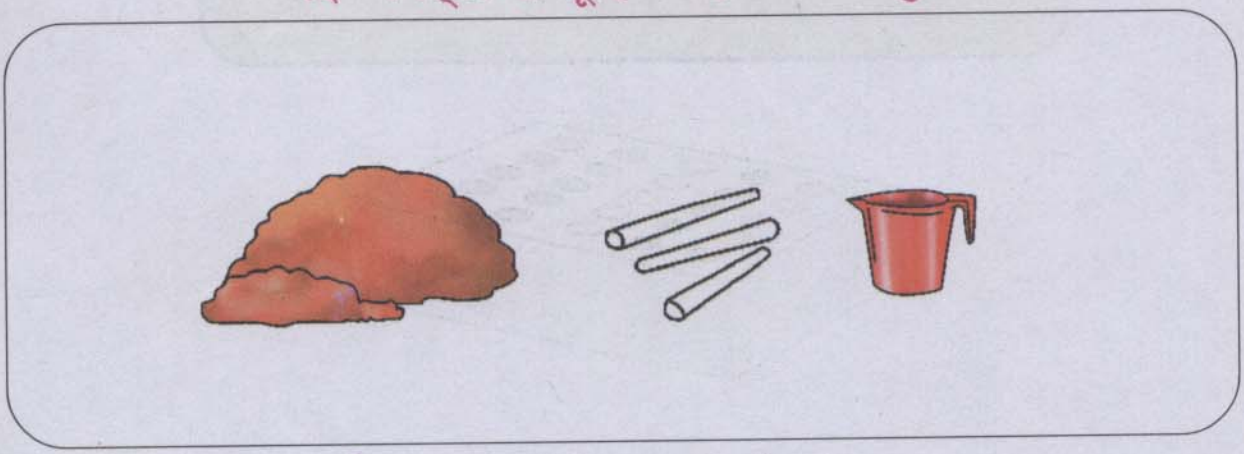

कच्ची सामग्री - लाल मिट्टी, पानी ।

1)

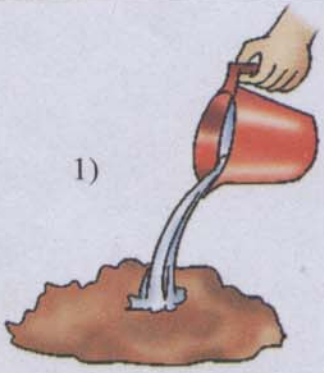

2)

3)

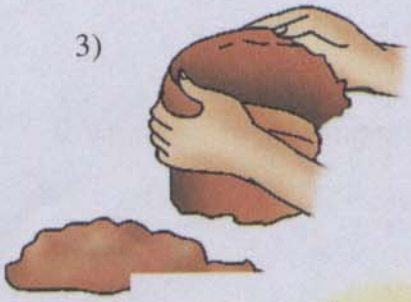

4)

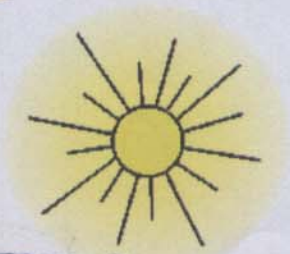

5)

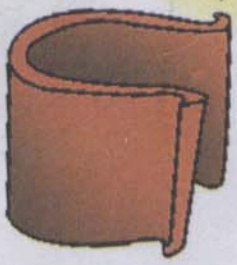

6)

# मिट्टी की शकल की कुर्सी

**तैयारी :** लाल मिट्टी को पानी से भिगोकर ऊ आकार को संरचना बना लें ।

इस संरचना की आकृति बच्चे की आकृति के समुचित होनी चाहिए ।

यह संरचना टीन के शीट या लकड़ी की पटिया पर जमानी चाहिए ।

बच्चा जैसे-जैसे बड़ा होता है, चबूतरे पर कुर्सी को रख कर ऊँचा किया जा सकता है ।

**रूपांतर :** कार्नर कुर्सी फेंके गये कार्टन डिब्बों से भी बनायी जा सकती है ।

कुर्सी पर गत्ता रखकर बच्चे को छाँटने, रखने, चुनने,पढ़ाने, बदलने आदि जैसे कोई भी क्रियाकलाप करने में सहायता करें ।

इन क्रियाकलापों से एक स्थान पर बैठने की क्रिया को सरल बनाया जा सकता है, और इससे दिये गये क्रियाकलाप को करने में लगाये जानेवाले ध्यान में सुधार होता है ।

# मद - लकड़ी की कार।

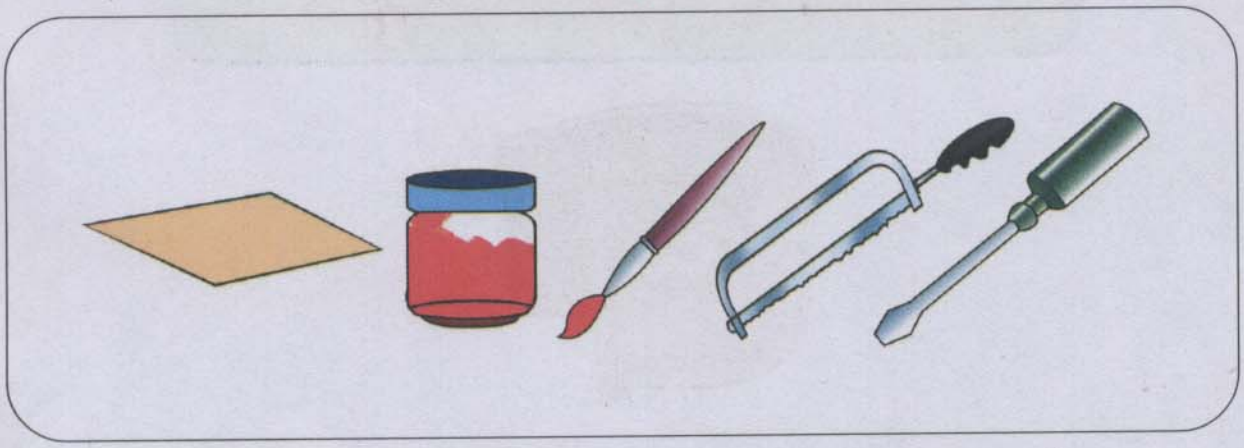

कच्ची सामग्री - लकड़ी, पेंट, आरा, बुरुश, मापक फीता, रेगमाल, स्क्रू, ड्राईवर ।

1)

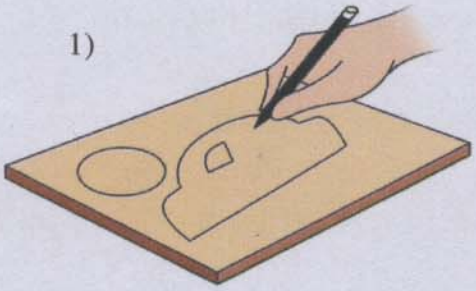

2)

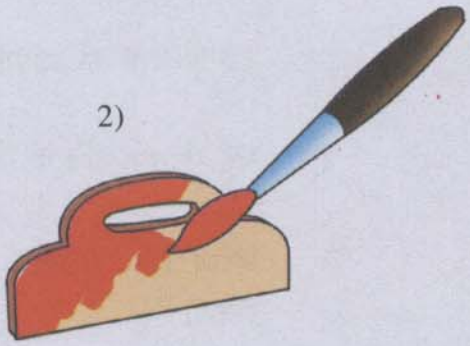

3)

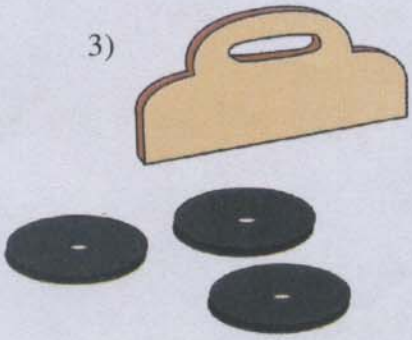

4)

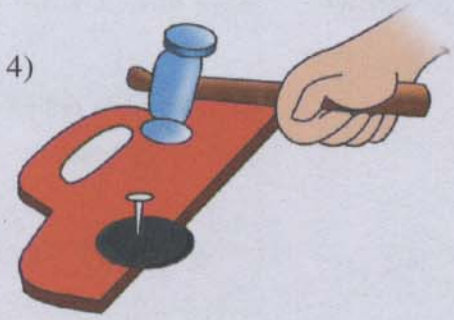

5)

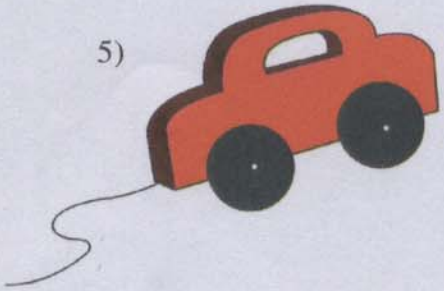

# लकड़ी की कार

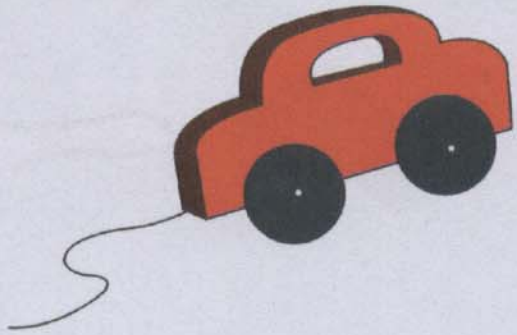

**तैयारी :** लकड़ी के तख्ते पर कार की बाड़ी और पहियों का रेखाचित्र बना लें ।

बाडी और चार पहिये काट लें ।

तब कार की सतहों को रेगमाल से घिसकर चिकना कर लें ।

अंत में स्क्रू ड्राईवर की सहायता से स्क्रू लगाकर कार के पहिये फिट करें ।

**उपयोग :** आँख-हाथ समन्वयन में सहायता देता है ।

सामान्य-प्रेरणा में सहायक होता है ।

**रूपांतर :** प्लास्टिक से सरल व चल खिलौने बनाये जा सकते हैं ।

लकड़ी के पहियों के स्थान पर नारियल के खोलों का उपयोग भी किया जा सकता है ।

# मद - गुलेल ।

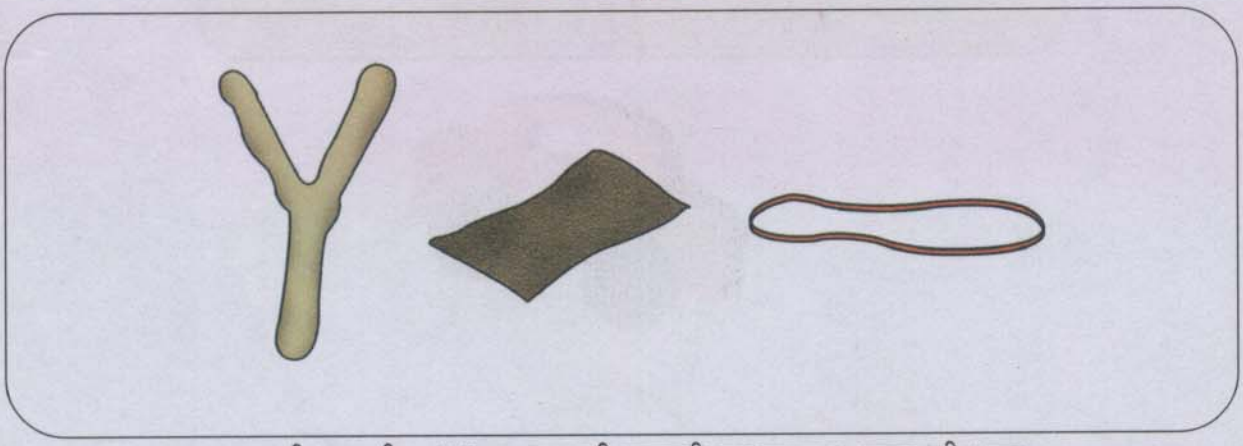

कच्ची सामग्री - 'Y' आकार की लकड़ी का टुकड़ा, रबड शीट का आयताकार टुकड़ा, रबड की डोरियाँ, रेगमाल।

1)

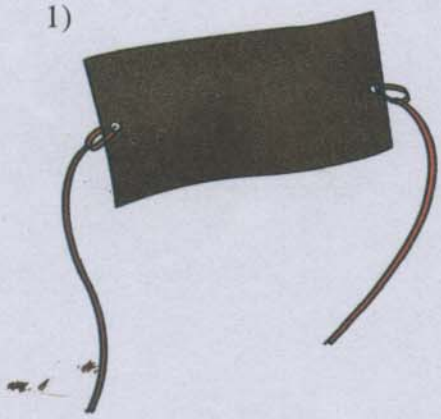

2)

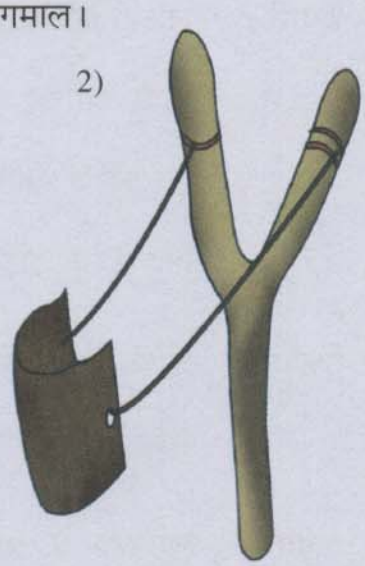

3)

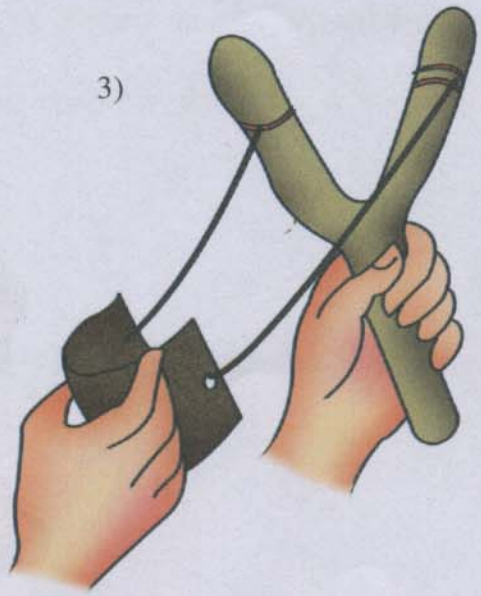

# गुलेल

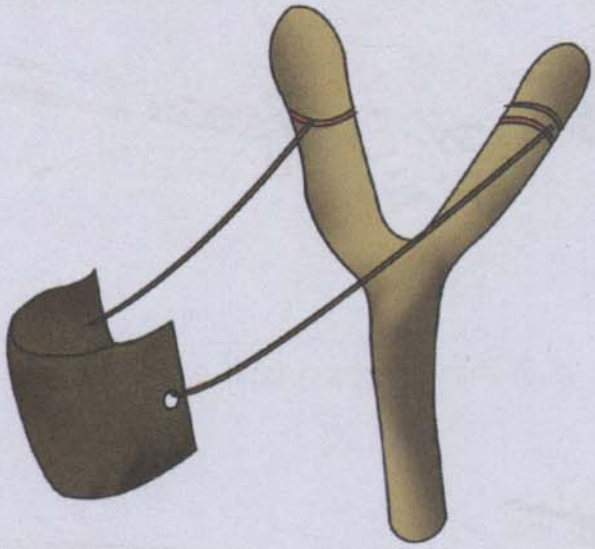

**तैयारी :** रबड़ की शीट के दोनों किनारों पर छेद कर उनमें रबड़ की डोरें बाँधें । रबड़ की डोरी के खुले भाग को Y आकार के एक-एक ओर बाँधें।

**उपयोग :** आँख-हाथ समन्वयन में सहायता प्रदान करता है ।

यह एक आनंद उठानेवाले क्रियाकलाप होने के कारण भावात्मक विकास में भी सहायता प्रदान करता है ।

**रूपांतर :** इस प्रकार की सामग्री प्लास्टिक से भी बनायी जा सकती है ।

'Y' आकार का प्लास्टिक का टुकड़ा उपलब्ध न होने की स्थिति में बेकार हुए प्लास्टिक के बकेट से कोई भी भाग इस आकार में काटा जा सकता है।

# मद -बैल गाड़ी

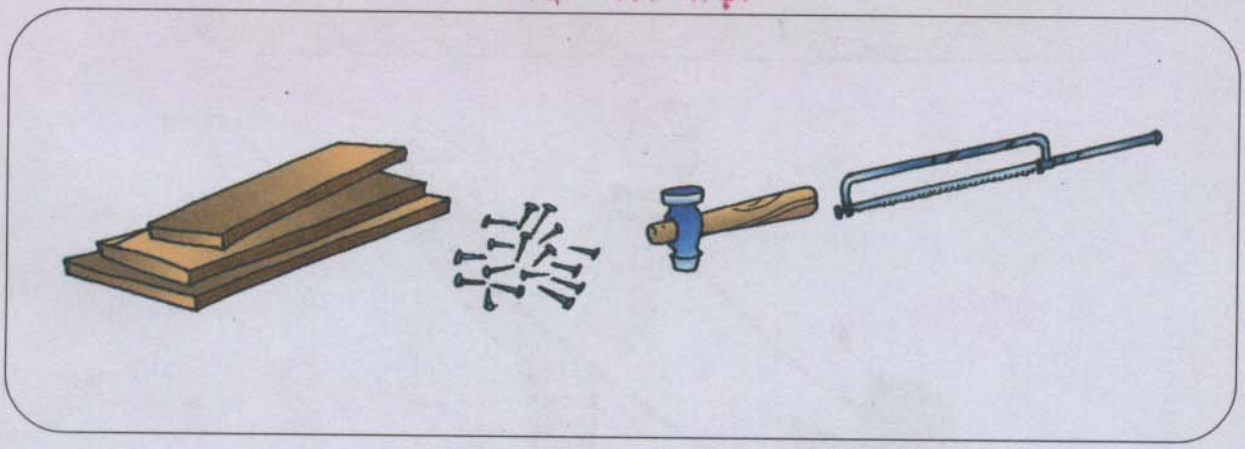

कच्ची सामग्री - लकड़ी कीले, हथौड़ी।

1)

2)

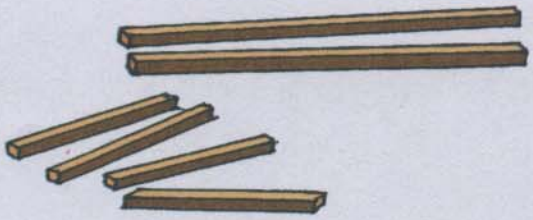

3)

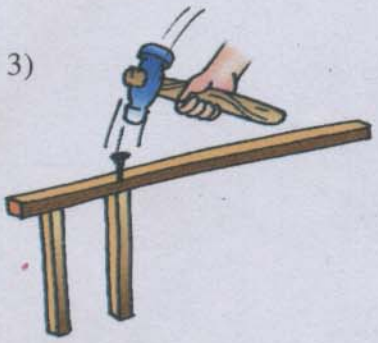

4)

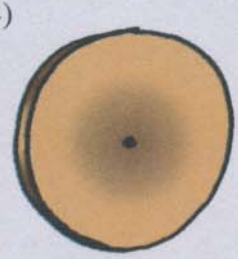

5)

6)

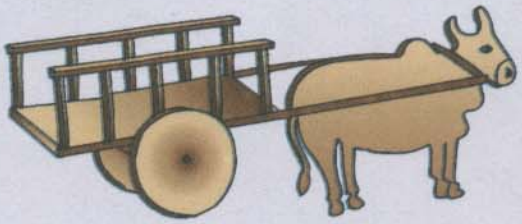

# बैल गाड़ी

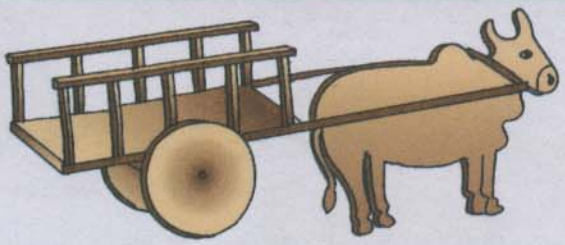

**तैयारी :** लकड़ी के टुकडों को लंबे और छोटे डंडों, गाड़ी, बैल तथा पहियों की शकल में काट लें।

चित्र में बताये गये अनुसार उन्हें कीलों से जोड़ लें । गाड़ी को पहियों पर चढ़ा लें और गाड़ी का दस्ता बैल की गर्दन पर जमा दें और दोनों पहियों को लकड़ी के खोल से जोड़ दें ।

**उपयोग :** इसे खींचने /ढकेलने के खिलौने के रूप में बढ़िया चालन के लिए उपयोग में लाया जा सकता है । इसे चटकीले रंगों से पेंट करने पर दृष्टि प्रेरणा प्रदान करती है । इसमें घंटियाँ या घुँघरू बाँध देने से यह श्रव्य प्रेरणा प्रदान करती है ।

जब बच्चा इस पर ध्यान केंद्रित करता है तो यह संज्ञानात्मक प्रेरणा के रूप में मदद करती है।

यह संचलन की संकल्पना को समझने में भी मदद करती है ।

**रूपांतर :** प्रमस्तिष्कीय पक्षाघात से ग्रस्त बच्चे को इसे सरलात से समझने, नरम कपड़े से लेकर लकडी के डंडों तक से बनाया जा सकता है ।

आंशिक रूप से दृष्टि हीन टवाले बच्चे के लिए गाड़ी को काले, सपेद जैसे चटकी ले रंगों से पेंट किया जा सकता है जिससे अवशेषी दृष्टि का प्रयोग करके खोज को भी सुधारा जा सकता है।

श्रवण रूप से विकलाँग बच्चे के लिए घटि घुंघरू भी गाड़ी में लगा सकते हैं, जो श्रवण प्रेरणा के लिए अयोगी सिध्द होते हैं।

पूरी तरह से अंधे बच्चे के लिए गाड़ी को रेत, सुतली के थैले जैसी खुरदरी सामग्रियों या फर, फेल्ट, स्पृस्य प्रेरणा के लिए कपड़ें के टुकडे जैसे नर्म सामग्रियों से आवशित कर घंटियों आदि की मदद से महचान करायी जा सकती है ।

# मद - संगीतमय बेलन।

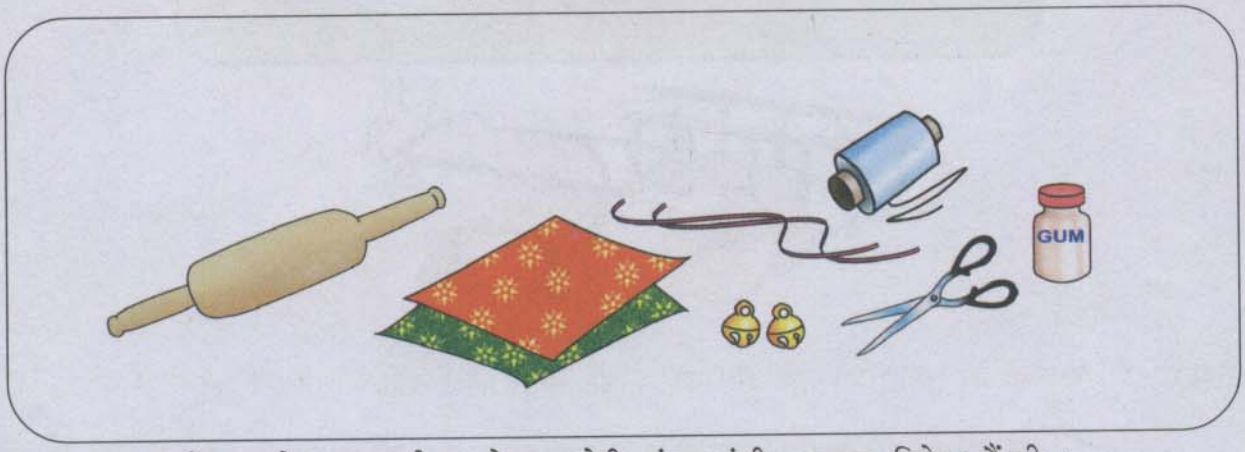


कच्ची सामग्री - लकड़ी का बेलन, डोरी, घुंघरु, रंगीन कागज, सिरेस, कैंची ।

1)

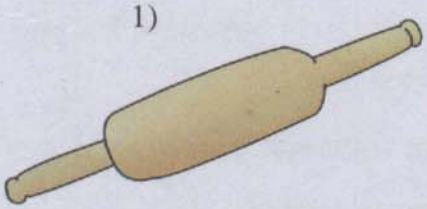

2)

3)

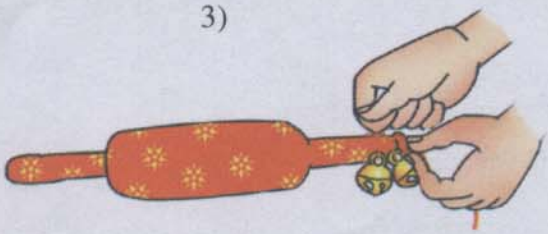

4)

# संगीतमय बेलन

**तैयारी :** बेलन को रंगीन कागज चिपकाकर आवरित कर दें ।

घुंघरुओं में डोरी बाँधे और बेलन के दोनों सिरों पर बाँध दें ।

**उपयोग :** सूक्ष्म चालक समन्वयन में सहायता प्रदान करता है ।

श्रव्य प्रेरणा में सहायता प्रदान करता है ।

स्पृश्य प्रेरणा में सहायता प्रदान करता है ।

**रूपांतर :** बेलन को आवरित करने के लिए उपयोग में लायी गया सामग्री की बनावट, स्पृश्य, प्रेरणा के लिए विभिन्न प्रकार की बनावट के आवरणों से बदला जा सकता है ।

# मद - संगीतमय बिलोरा ।

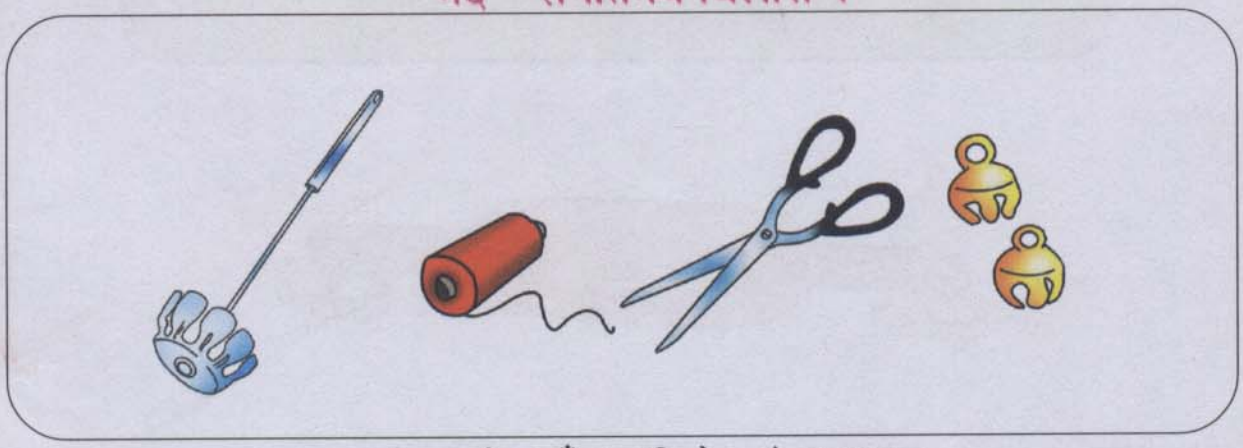

कच्ची सामग्री - छाँछ का बिलोरा, घुंघरू, धागा ।

1)

2)

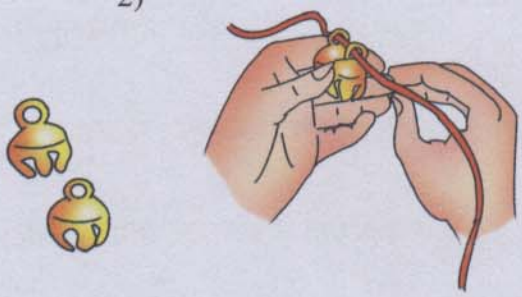

3)

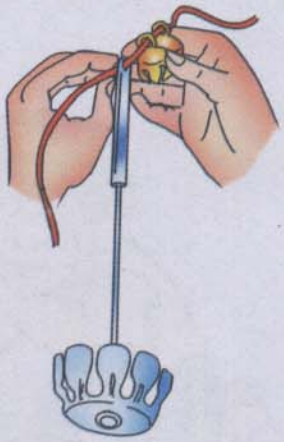

4)

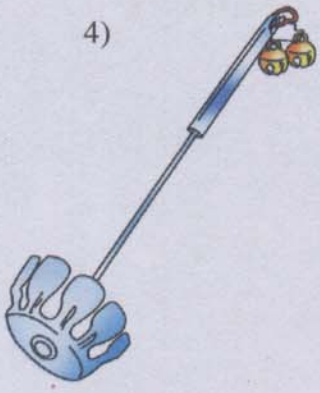

# संगीतमय बिलोरा

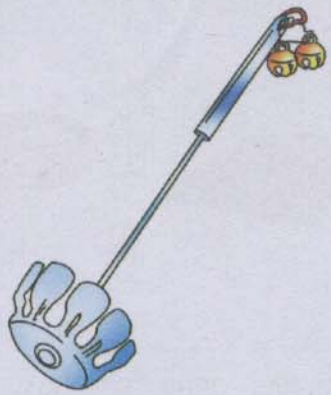

**तैयारी :** घुंघरुओं को धागे में पिरोकर उन्हें छाँछ के बिलोरे के दस्ते को बाँध दें ।

**उपयोग :** सूक्ष्म चालक समन्वयन के लिए उपयोगी ।

स्पृश्य प्रेरणा में सहायता प्रदान करता है ।

श्रव्य प्रेरणा में सहायता प्रदान करता है ।

**रूपांतर :** लकड़ी, प्लास्टिक या धातु के बने छाँछ के बिलोरों का उपयोग किया जा सकता है ।

दस्ते की मोटाई को कागज या कपड़ा लपेटकर बदला जा सकता है ।

दस्ते के लिए उपयोग में लाये विभिन्न बनावट स्पृश्य प्रेरणा में सहायता प्रदान करेंगे ।

दृष्टि प्रेरणा प्रदान करने के लिए बिलोरे के पेंदे को रंगा जा सकता है ।

# मद - चित्र कार्ड़

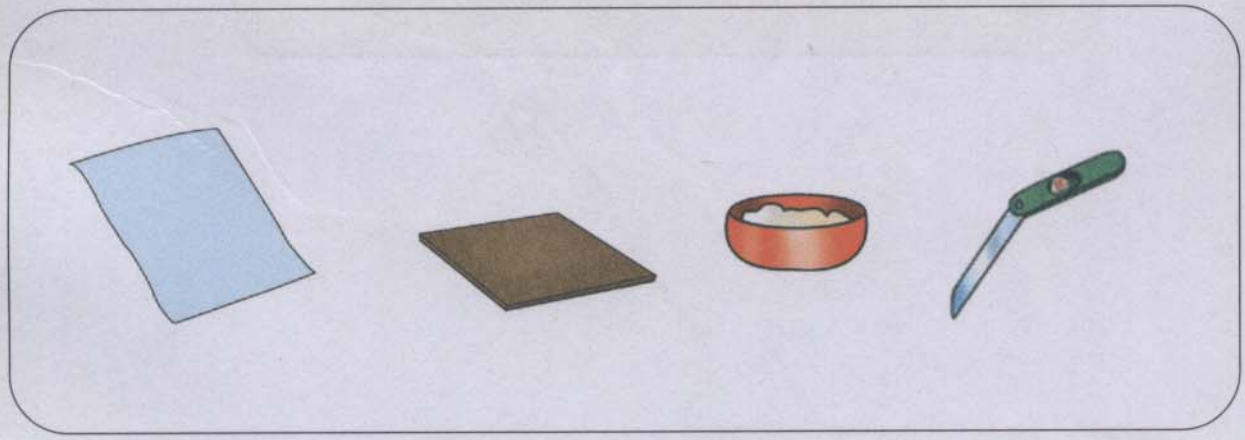

कच्ची सामग्री - गत्ता, चित्र, सरेस, कैंची ।

1)

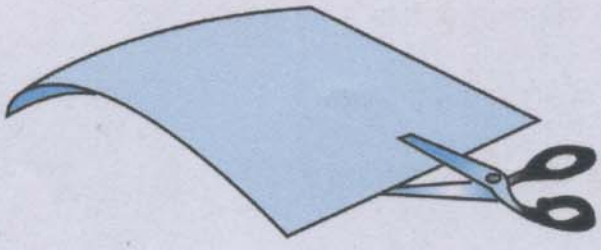

2)

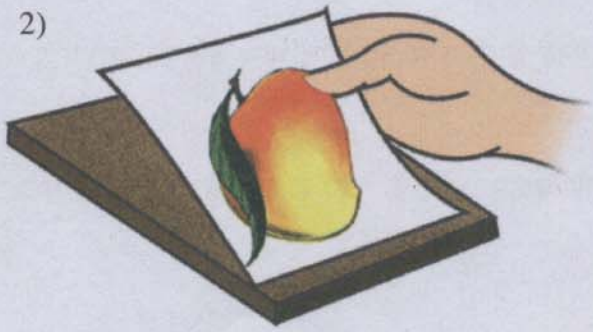

# चित्र कार्ड

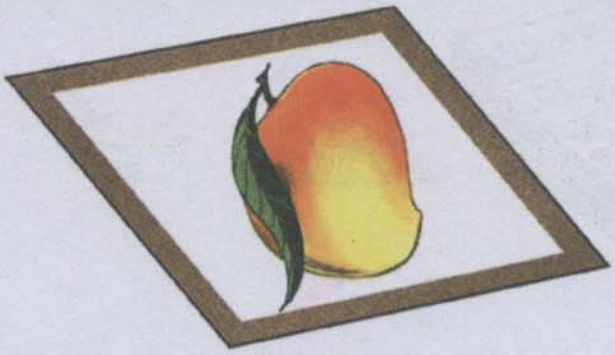

**तैयारी :** ये कार्ड़ सामान्य गत्ते या मिठाई के डिब्बों या पुस्तकों के आवरणों से बनाये जा सकते हैं ।

गत्ते को वर्गाकार टुकडों में काट लें ।

किसी भी वस्तु या फल आदि के चित्र काट लें और प्रत्येक कार्ड पर चिपका दें।

**उपयोग :** सूक्ष्म चलन प्रेरणा के लिए कार्डो का उपयोग किया जा सकता है । (पूरा अँगूठा छाप)

चित्र कार्ड भाषा विकास में सहायता प्रदान करते हैं, क्योंकि बच्चा चित्रों को पहचानता है और उन्हें दोहराता है॥

बच्चा कार्डों को जमाना सीखता है और संज्ञानात्मक प्रेरणा पाकर चित्रों को समझता भी है ।

बच्चे में रंग के प्रति धारणा बढ़ाता है ।

स्पृश्य भावना में सुधार लाने विभिन्न बनावट की सामग्रियों का उपयोग किया जा सकता है।

# मद - कागज की लुगदी का कटोरा

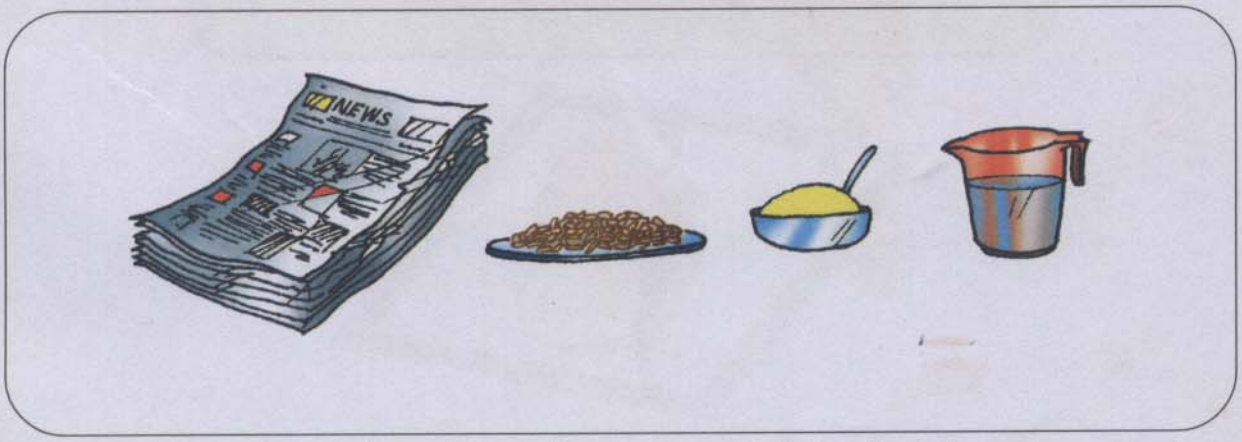


कच्ची सामग्री - पुराने समाचार पत्र, मेथी के दाने, पानी ।

1)

2)

3)

4)

5)

6)

7)

8)

9)

# कागज की लुगदी का कटोरा

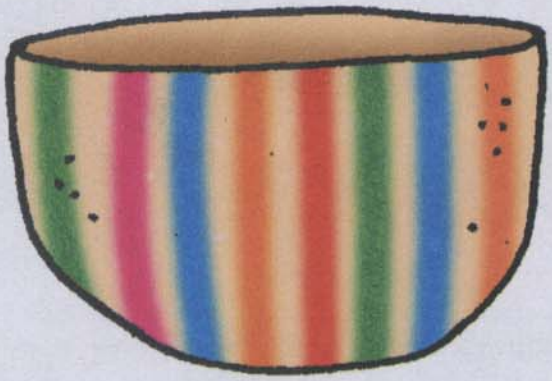

**तैयारी :** पुराने समाचार पत्रों को छोटे-छोटे टुकडों में फाड़कर मेथी के दानों के साथ मिलाकर रातभर भिगो लें ।

अगले दिन समाचार पत्र के मिश्रण को हल्दी मिलाकर पीस लें ।

इस लुगदी को स्टील या प्लास्टिक के पात्र में फैलाना चाहिए ताकि वह साँचे जैसा काम करे ।

स्टील के बर्तन या पात्र में से कागज की लुगदी का सूखा कटोरा अलग कर उस पर पेंट करें ।

**उपयोग :** बच्चों के खेल के बर्तन के रूप में यह उपयोगी हो सकता है ।

बच्चा मनकों या खेलने की छोटी वस्तुओं -जैसे खिलौनों के साथ काम चला सकता है ।

यह बढ़िया प्रेरक कौशलों और आँख -हाथ के समन्वयन में मदद करता है ।

**रूपांतर :** कागज़ की लुगदी की सामग्री को पेंट करके या उस पर रंगीन कागज़ चिपका कर आकर्षिक बनाया जा सकता है ।

कागज की लुगदी से भिन्न भिन्न आकारों के बर्तन बनाए जा सकते है ।

Hindi

# मद - सेब के आकार का लकड़ी का बर्तन

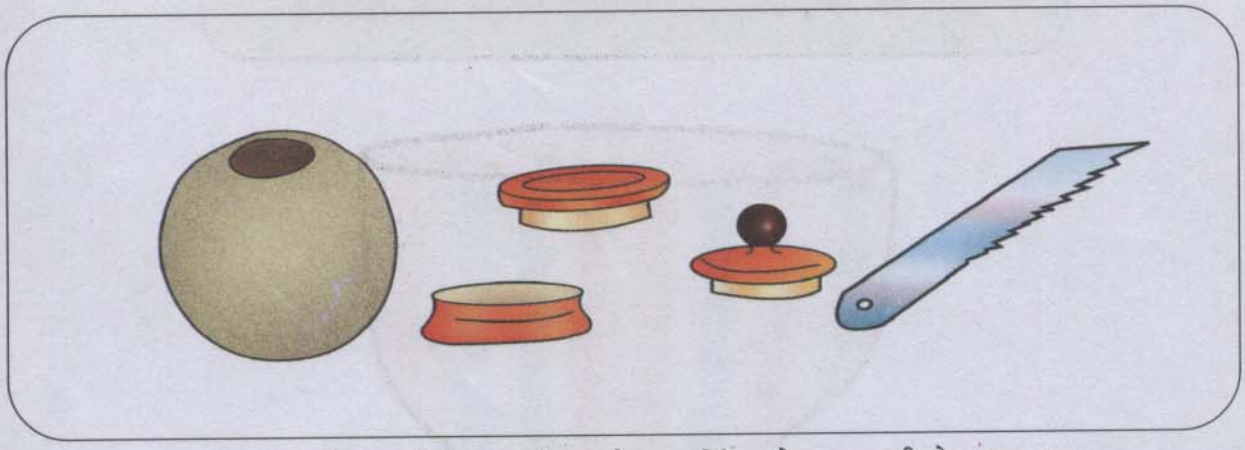

कच्ची सामग्री - लकड़ी का सेब, कटिंग ब्लेड, लकड़ी, रेगमाल ।

1)

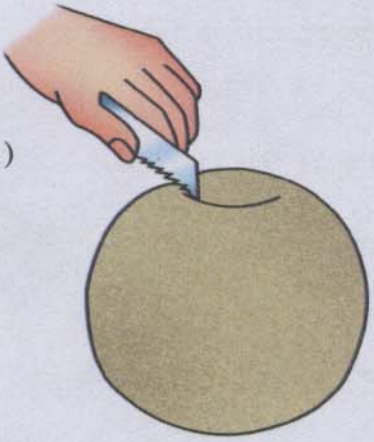

2)

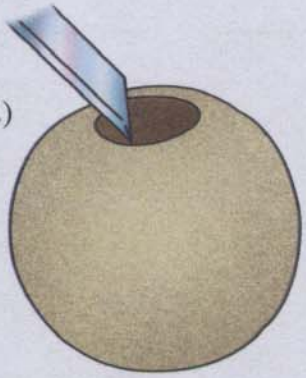

3)

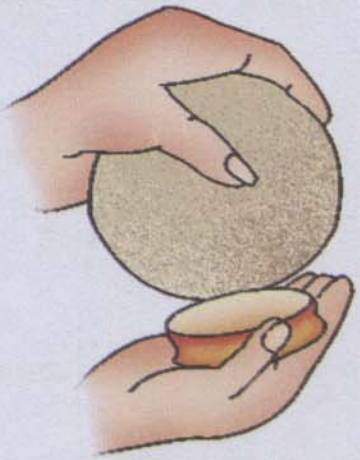

4)

5)

# सेब के आकार का लकड़ी का बर्तन

**तैयारी :** लकड़ी के सेब के ऊपरी भाग से वृत्ताकार अंश काट लें । सेब को खोखला करके सुखा लें और सूखने पर रेगमाल से पालिश करें /लकड़ी से टोपी के आकार में ढक्कन बना लें ।

यह टोपी इस प्रकार बनाएँ कि वह सेब के मुँह में फिट हो जाए । सेब का पेंदा बनाने के लिए चकती के आकार का अंश काटें । वलय के आकार की संरचना काटें जो बर्तन के मुँह के ऊपर अतराफ फिट हो जाए ।

पेंदा और मुँह के पास वलय/रिंग फिट करें ।

**उपयोग :** सूक्ष्म चालक समन्वयन में सहायता प्रदान करता है ।

बर्तन की चिकनी सतह स्पृश्य प्रेरणा प्रदान करती है ।

आकार और आकृति सीखने की संकल्लपना की तरह संज्ञानात्मक प्रेरणा में सहायता प्रदान करती है।

**रूपांतर :** लकड़ी के सेब को चटकदार रंगों से पेंट करने से दृष्टि प्रेरणा में यह सहायता करेगी ।

सेब की बनावट को विभिन्न सामग्रियों से आवरित करके बदला जा सकता है, जो स्पृश्य प्रेरणा में सुधार करेगा ।

# मद - संतुलन गुब्बारा ।

कच्ची सामग्री - गुब्बारा, पुराने समाचार पत्र, रंगीन कागज, कैंची,
लकड़ी / धातु की छड़, डोरियाँ (तीन नग), सरेस, घंटियाँ (2 नग ), चूड़ी ।

1)

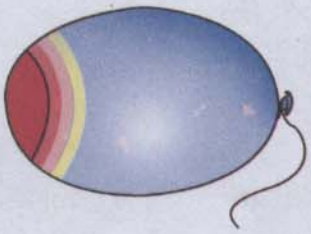

2)

3)

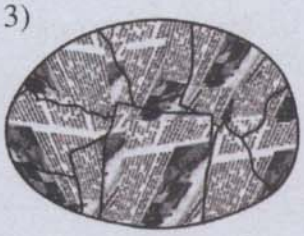

4)

5)

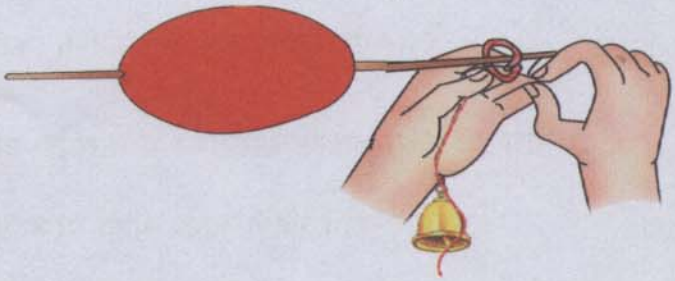

6)

7)

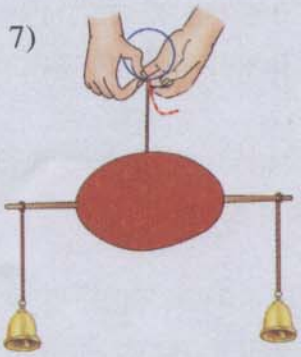

8)

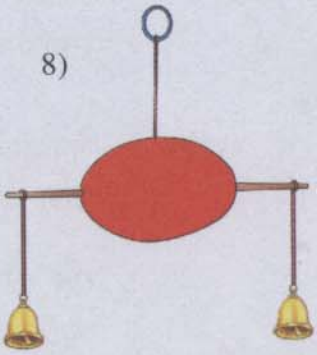

# संतुलन गुब्बारा

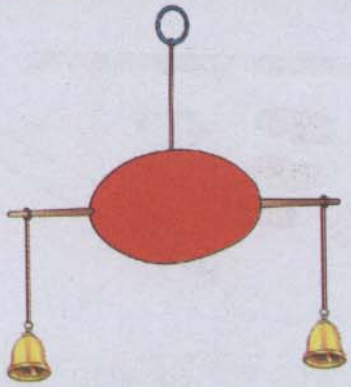

**तैयारी :** गुब्बारे को पूरी तरह फूँक कर मुँह बाँध दें ।

समाचार पत्र की पट्टियाँ काटकर गुब्बारे के अतराफ चिपका दें ।

समाचार पत्र की तीन से 4 परतें चिपका कर तहों के बीच सूखने दें ।

तब छड़ी को गुब्बारे में ऐसा घुसाएँ कि वह दूसरे छोर पर बाहर निकल आये । रस्सी को गुब्बारे के अतराफ लपेट कर कुछ भाग लटकने के लिए खुला छोड़ दें ।

डोरी को खींचकर उससे एक चूड़ी बाँध दें ।

इससे, गुब्बारे की हवा निकल जाएगी और कड़े गुब्बारे की शक्ल का समाचार पत्र का आकार शेष रह जाता है ।

अंत में उस पर रंगीन कागज चिपका दें ।

छड़ी को दुबारा घुसेड़ें।

घंटियाँ दोनों बाजुओं पर लटका दें ।

**उपयोग :** श्रव्य प्रेरणा प्रदान करने में सहायता करता है ।

आँख-हाथ के समन्वयन के लिए उपयोगी ।

संज्ञानात्मक प्रेरणा में सहायता प्रदान करता है ।

**रूपांतर :** दृष्टि प्रेरणा प्रदान करने के लिए गुब्बारे की संरचना पर चटकीले रंगों से पेंट किया जा सकता है ।

यह कमजोर दृष्टि के बच्चे की सहायता करेगा ।

# मद - संतुलन दंड

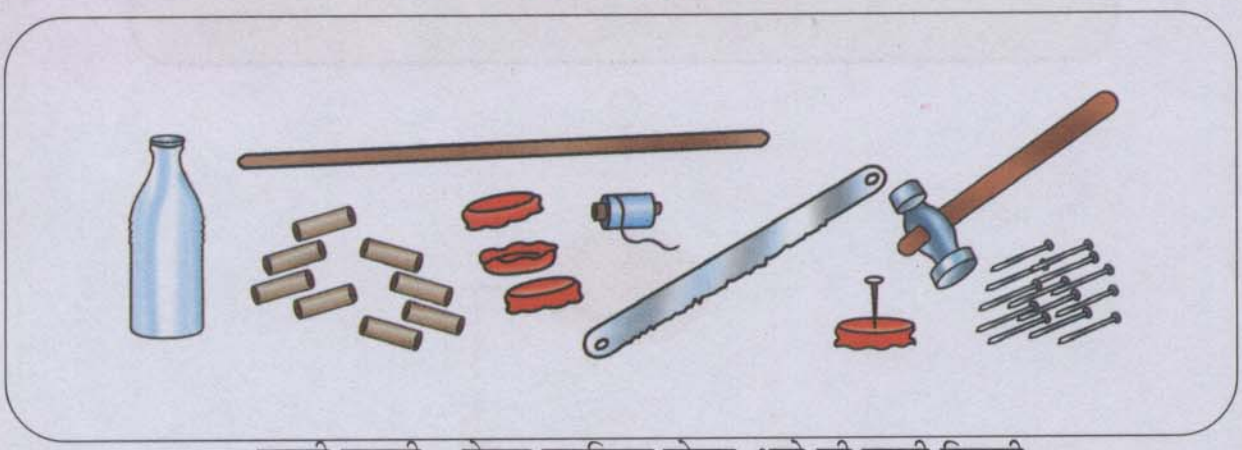

कच्ची सामग्री - बेकार प्लास्टिक बोतल, धागे की पुरानी फिरकी,
बोतल के ढक्कन, धागा, आरा, हथौड़ी, कीले, कढ़ाई फ्रेम ।

1)

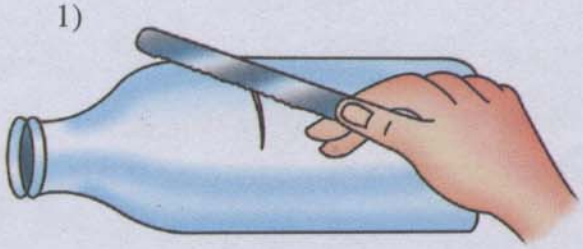

2)

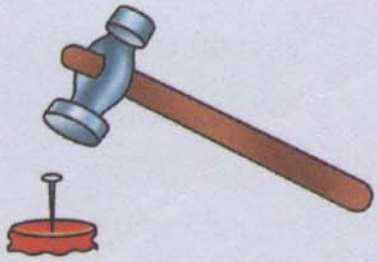

3)

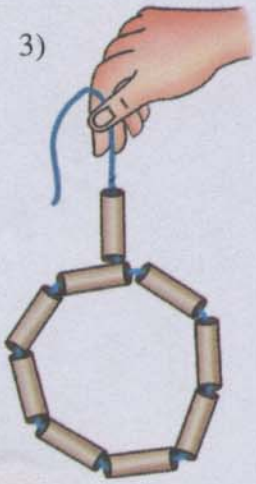

4)

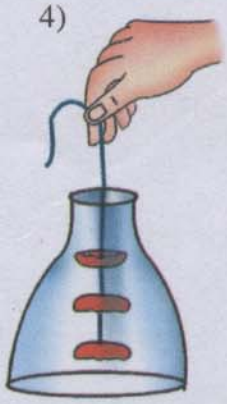

5)

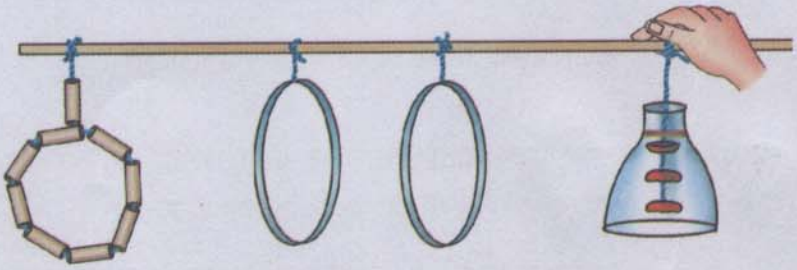

# संतुलन दंड

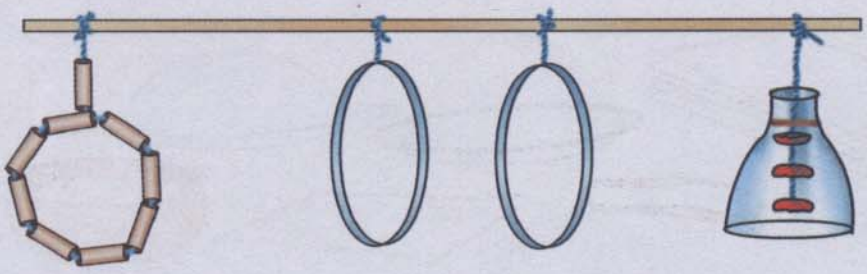

**तैयारी :** प्लास्टिक की बोतल को आड़ा आधा काट लें ।

ढक्कनों में कीला मारकर बीच में छेद बनाएँ ।

फिर छेदों के जरिए धागा बढ़ाकर उन्हें डोरी के साथ जोड़ दें ।

ढक्कनों की लड़ी को बोतल के चौड़े भाग की ओर से घुसाएँ और डोरी को तंग छोर से खीच लें । बाद में फिरकियों को धागे में पिरोकर वृत्ताकार आकार बना लें । अब चित्र में बताये गये अनुसार धागे को फिरकियों, कढ़ाई फ्रेम और बोतल को दंड से बाँध दें । अंत में डोरी की फाँद दंड के केन्द्र में लटकाने हेतु बनाएँ ।

**उपयोग :** संतुलन की संकल्पना समझने में सहायता प्रदान करता है, अत: संज्ञानात्मकता के लिए उपयोगी ।

बढ़िया चालक समन्वधन में सहायता करता है ।

**रूपांतर :** कढ़ाई फ्रेम के बदले प्रेशर कुकर के गैस्केटों का भी उपयोग क़िया जा सकता है। यदि वस्तुओं को श्याम-श्वेत पट्टियों से पेंट किया जाए तो यह दृष्टि प्रेरणा में सहायता देगा । हलके धातु या प्लास्टिक से बनी डोरियाँ भी लटकाई जा सकती हैं । स्प्रिंग, आँख-हाथ तथा पहुँचने या पकड़ने के समन्वयन में भी सहायता करेगा ।

# मद - कागाज की लुगदी का मुखौटा

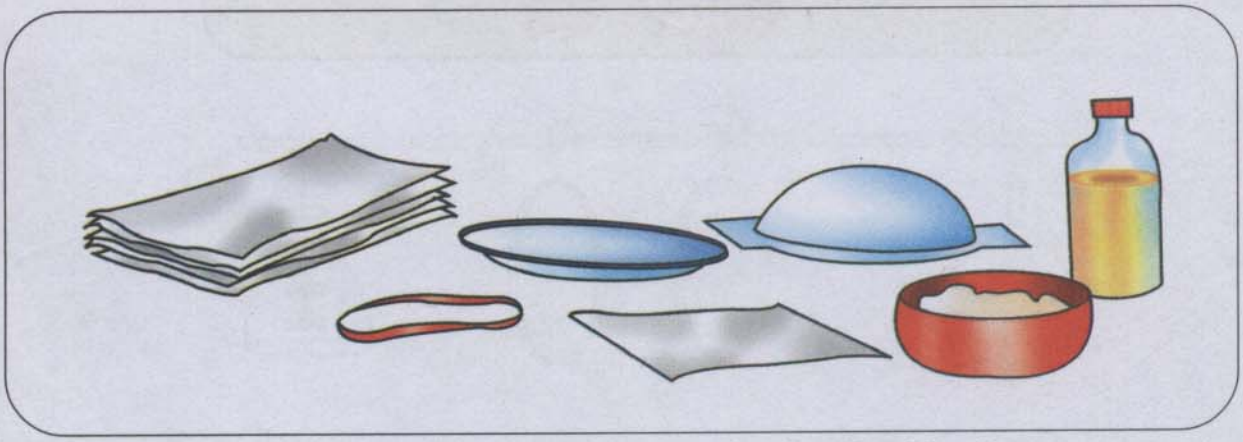

कच्ची सामग्री - चुराने समाचार पत्र, मेथी के दाने, ओवेल के आकार का बो, हल्दी चूर्ण, इलास्टिक की डोरी ।

1)

2)

3)

4)

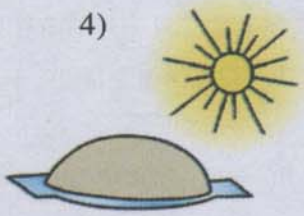

5)

6)

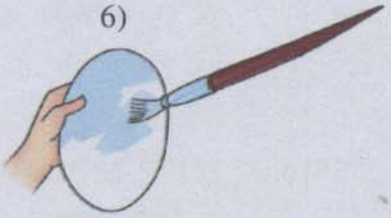

7)

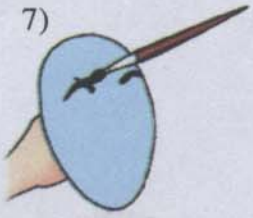

8)

9)

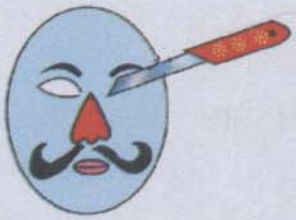

10)

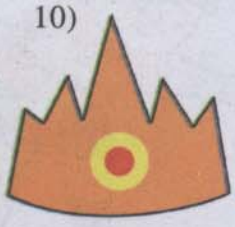

11)

12)

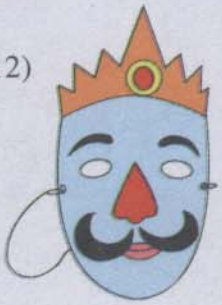

# कागज की लुगदी का मुखौटा

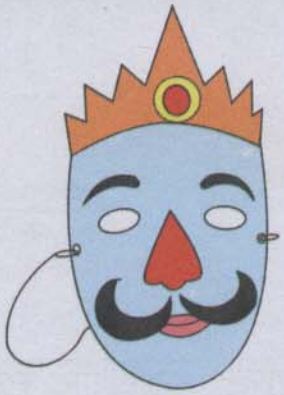

**तैयारी :** पुराने समाचार पत्रों के छोटे-छोटे टुकड़े करके मेथी के बीजों के साथ मिलाकर रात भर भीगने दें ।

दूसरे दिन इस मिश्रण में हल्दी मिलाकर पीस लें ।

लुगदी को, अण्डाकार बर्तन के बाहरी हिस्से पर फैला दें ताकि जरूरी आकार पा सकें ।

बर्तन पर लुगदी फैलाने के बाद पानी में भिगोये दो तीन समाचार पत्रों की परतें उस पर फैलादें ।

इन परतों पर लुगदी फैला दें । कच्चा रहने पर ही चेहरे के अंगों अंकन कर लें व अंगों को खोखला कर दें । यह भी प्रावधान करें कि लुगदी में से धागा बाँधने के लिए सूराख हों।

उसे सुखने दें । सूखने पर साँचा निकाल लें जो मुखौटे की शकल का होगा ।

**उपयोग :** कठपुतली के खेल में उपयोग होने पर भाषा प्रेरणा में सहायता प्रदान करता है ।
चटकीले रंगों से बनाये जाने पर दृष्टि-प्रेरणा में सहायता प्रदान करता है ।
विभिन्न चरित्रों को दर्शाने हेतु विभिन्न प्रकार के मुखौटे भी बनाये जा सकते हैं।

**रूपांतर :** कागज की लुगदी से पशुओं और फूलों के आकार के मुखौटे भी बनाये जा सकते हैं । पेपर प्लेटों और मोटे कागज से भी मुखौटे बनाये जा सकते हैं ।

# मद -मुकुट ।

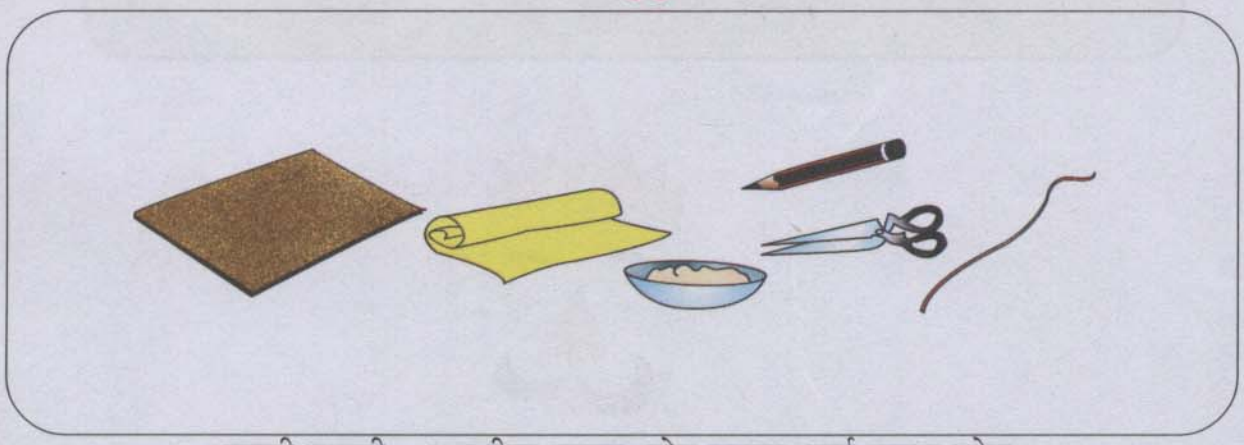

कच्ची सामग्री - चमकीला कागज, मोरा कागज़, चार्ट कागज़ सरेस,
कैंची, धागा, इलास्टिक बैंड।

1)

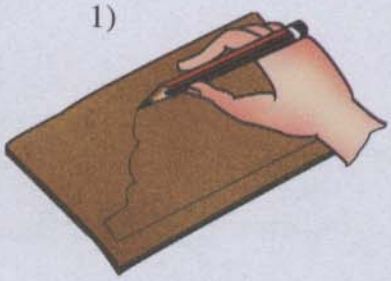

2)

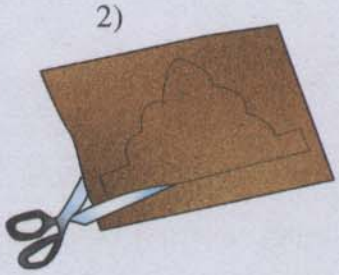

3)

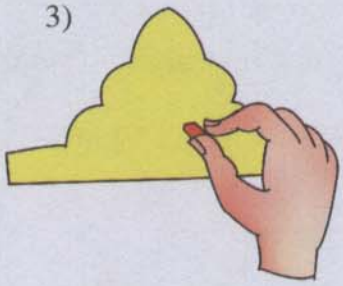

4)

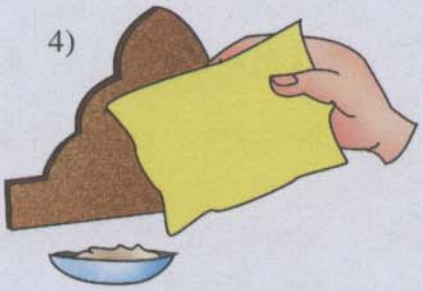

5)

6)

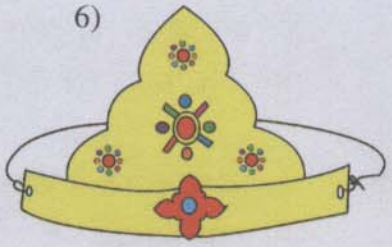

# मुकुट

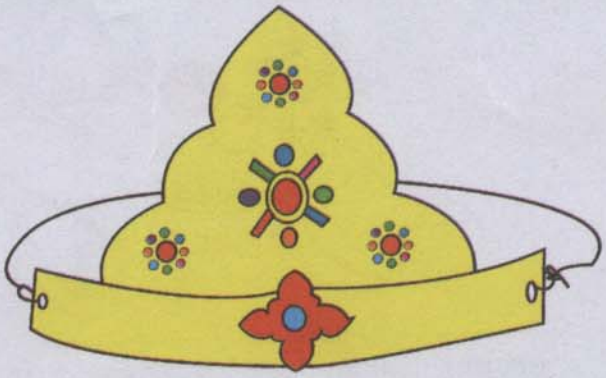

**तैयारी :** चमकीले कागज़ और चार्ट पेपर को मुकुट के आकार में काट लें ।

चामकीले कागज़ को चार्ट पेपर पर चिपका दें और किनारों पर इलास्टिक बैंड बांधने की व्यवस्था करें ।

किनारों को धागे या इलास्टिक बैंड से बांध दें ।

मुकुट पर भिन्न-भिन्न आकारों के चमकीले कागज़ काट कर चिपका दें ।

**उपयोग :** खेल और सामाजीकरण में उपयोगी होते हैं ।

**रूपांतर :** विभिन्न आकारों के मुकुट बनाए जा सकते हैं ।

# मद- कागज की हैट ।

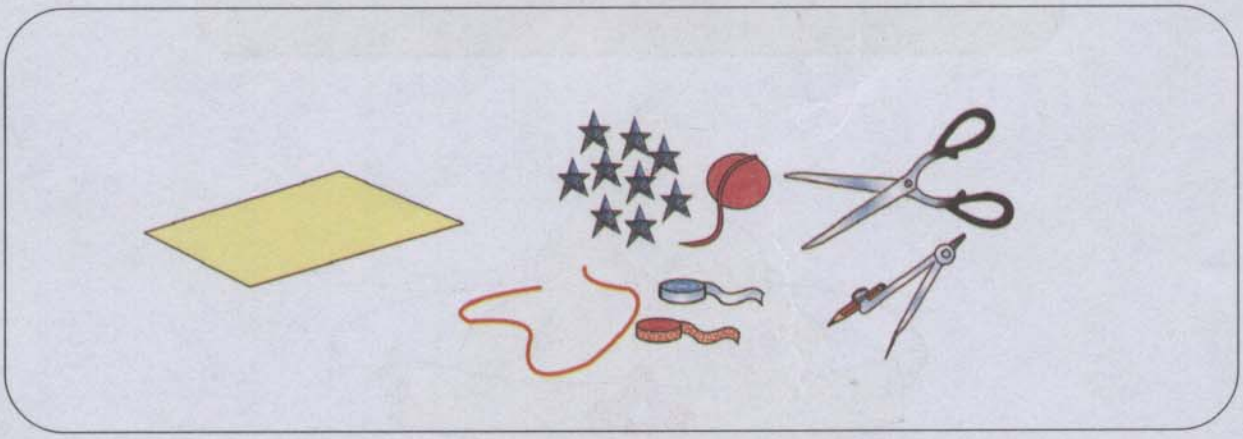

कच्ची सामग्री - चार्ट पेपर, चिकना पेपर, सरेस, पेन्सिल, सेलो टेप, कैंची।

1)

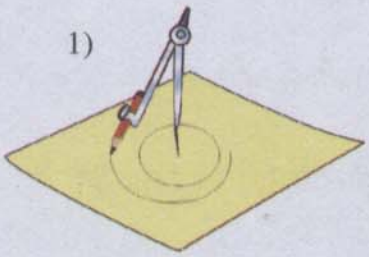

2)

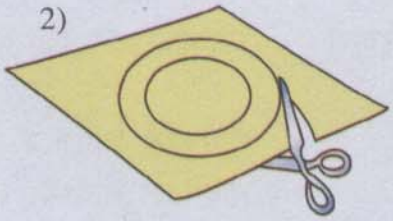

3)

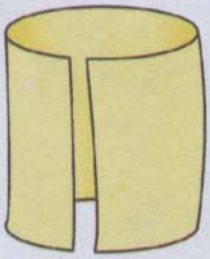

4)

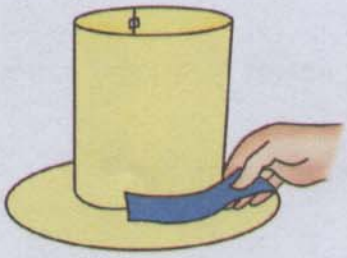

5)

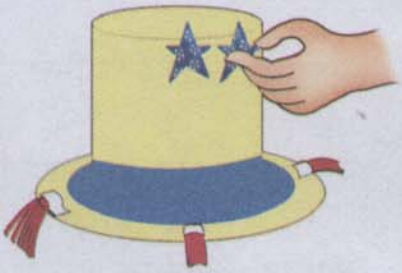

6)

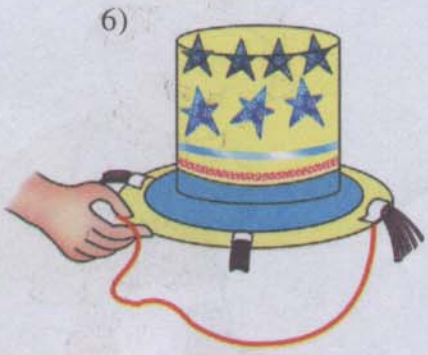

7)

# कागज की हैट

**तैयारी :** चित्र में बताये गये अनुसार चार्ट पेपर को वर्गाकार काट लें ।

एक आयताकार कागज़ काट लें ।

आयताकार टुकड़े को मोड़कर सिरे को सरेस से जोड़कर वृत्ताकार बना लें ।

फिर इस टुकड़े को वर्गाकार चार्ट पेपर पर रखकर पूरी परिधि से चिपका लें ।

तब वर्गाकार पेपर के किनारे काट कर वृत्ताकार बना लें और गत्ते के किनारे काटकर झब्बे बना लें । झब्बों को आयताकार टुकड़े पर चिपका लें ।

हैट की रिम बनाने के लिए भी वृत्ताकार कागज़ काट लें ।

सेलोटेप किनारों पर चिपका दें या कागजों का उपयोग करके किनारों को चिपका दें ।

चिपकने के लिए हैट के किनारे पर इलास्टिक फीता लगा दें ।

हैट पर चिकना पेपर या रंगीन पेपर चिपका दें ।

हैट को चटकीले रंगों से पेंट भी किया जा सकता है ।

**उपयोग :** कहानी सुनाते समय भाषा विकास में सहायता प्रदान करती है ।

सामाजिक और भावात्मक विकास में सहायता प्रदान करती है ।

दृष्टि प्रेरणा में सहायता करती है, जब चटकीलें रंगों से बनाई जाती है ।

# मद - कोंडापल्ली गुड़िया ।

कच्ची सामग्री - कागज़ की लुगदी, पावडर का खाली डिब्बा या नारियल तेल की खाली बोतल, रेगमाल, ढक्कन ।

1)

2)

3)

4)

5)

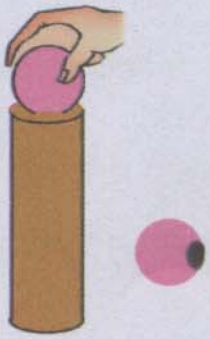

6)

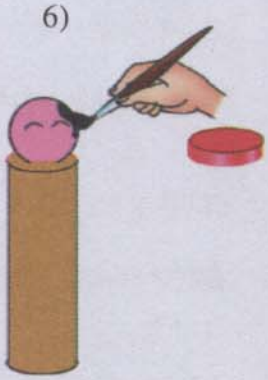

7)

# कोंडापल्ली गुड़िया

**तैयारी :** पावडर का बेकार डिब्बा लें और उसे कागज़ से आवरित करें ।

छोटी गेंद लेकर पावडर के डिब्बे के ऊपर चिपका दें ।

चित्र में दिखाये गये अनुसार सारी संरचना को पेंट से रंग दें ।

उसे सूखने दें और सूखने पर रेगमाल से पालिश करें ।

**उपयोग :** सामाजिक विकास में सहायता करती है ।

**रूपांतर :** कागज़ की लुगदी से पशु या पक्षी जैसी अन्य संरचनाएँ बनायी जा सकती हैं ।

# ग्रामीण शिशुओं और बच्चों के लिए प्रेरणा सामग्री की तैयारी के लिए पुस्तिका

Language : HINDI

ISBN 81-86594-26-4